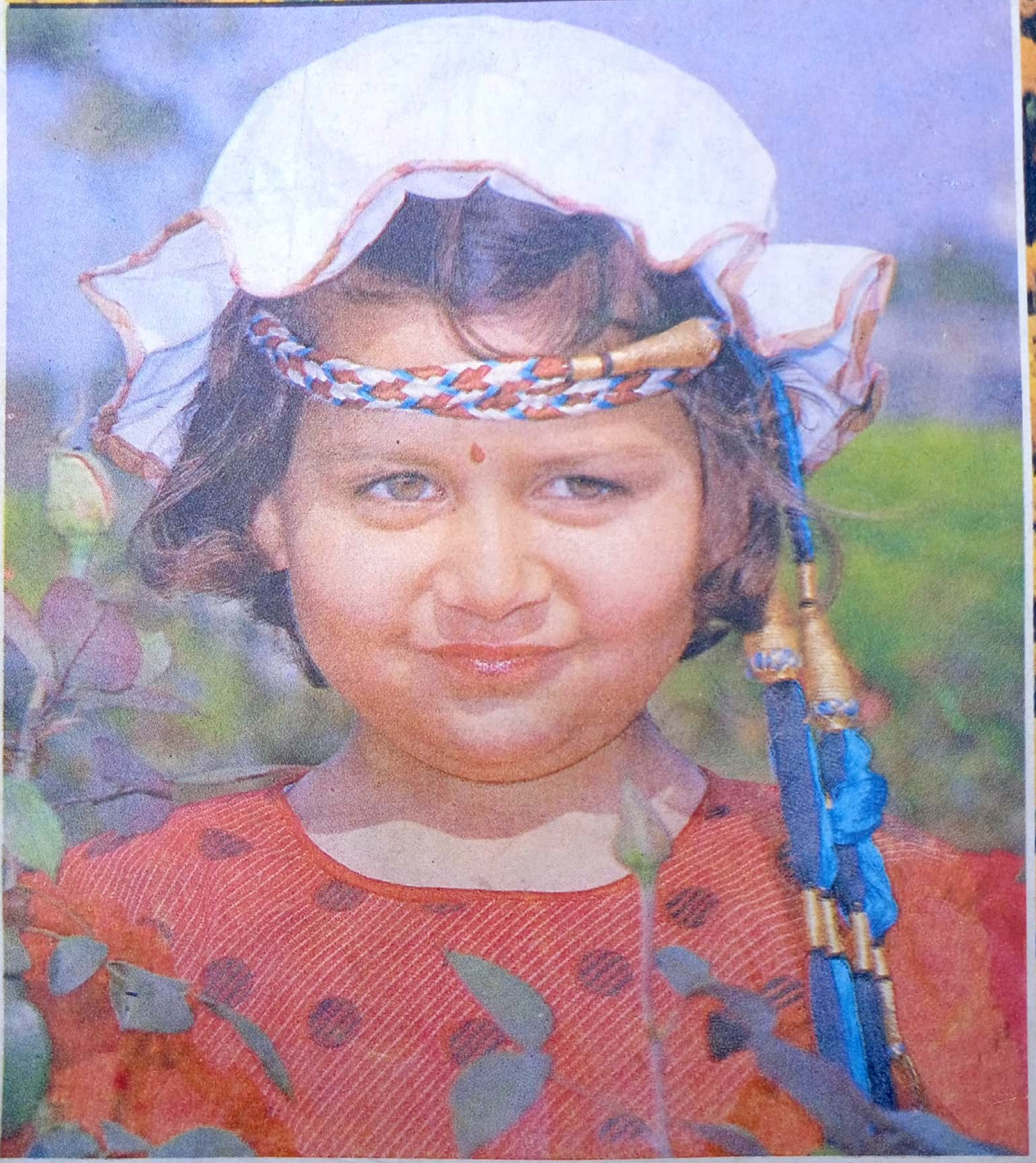
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



रु. ३.०० मई '८८

मुफ़्त! एक अनोखा रोल करने वाला झुनझुना



जल्दी कीजिए! स्टाक सीमित है.

सेरेलॅक के हर प्रमोशनल डिब्बे के साथ

इस सुंदर, रंग-बिरंगे, झुनझुने को ज़मीन पर रखकर हल्का सा सरकाते ही वह रोल करने लगता है. इसे अपने मुन्ने के हाथ में दीजिए और देखिए मुन्ने को कितना मज़ा आता है उसके साथ खेलने में. सेरेलॅक के हर प्रमोशनल डिब्बे के साथ आपको यह अनोखा झुनझुना मुफ़्त मिलेगा.

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. यही समय है उसे सेरेलॅक का अनूठा लाभ देने का.

पौष्टिकता का लाभ : सेरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु को सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है – प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन तथा मिनरल. सेरेलॅक में.शिशु की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार सब कुछ संतुलित और सही रूप में है – यानि संपूर्ण पोषाहार!

स्वाद का लाभ : सेरेलॅक पौष्टिक होने के साथ-साथ स्वादिष्ट भी है. इसका निराला स्वाद शिशुओं को बहुत भाता है.

समय का लाभ : सेरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिलाइए और बस शिशु को खिलाइए.

पसंद का लाभ : आहार में शिशु को और आनंद आए, इसके लिए सेरेलॅक के दो-दो स्वाद-शिशु को चौथे महीने से दीजिए सेरेलॅक व्हीट,छठे महीने से दीजिए सेरेलॅक एप्पॅल.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को मिले स्वस्थ और संतुलित पोषाहार.



Nestlé

अपने शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ!

R K SWAMY/FSL/5015-HI

Scanned with CamScanner

नंदन मैत्री प्रतियोगिता-२

जीतिए २०० से अधिक इनाम

☐ जो सही हो, उस पर √ निशान लगाएं ☐ सही हल इसी फार्म पर भेजें ☐ भेजने की अंतिम तिथि २० मई, १९८८ ☐ पता— 'नंदन' मैत्री-प्रतियोगिता, हिन्दुस्तान टाइम्स, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।

प्रथम पुरस्कार : दो
प्रत्येक को एक पोर्टेबल टेलीविजन (ब्लैक एंड व्हाइट)

द्वितीय पुरस्कार : पचास : प्रत्येक को एक मिनी हाट शाट कैमरा

तृतीय पुरस्कार : पचास : प्रत्येक को पचास रुपए मूल्य की पुस्तकें। **सौ अन्य पुरस्कार**

प्रतियोगिता में १७ वर्ष तक की आयु के पाठक भाग ले सकते हैं।

- सोवियत संघ की राजधानी।
  (लेनिनग्राद/मास्को/स्तालिनग्राद)
- विश्व का पहला अंतरिक्ष यात्री।
  (सर्जी कोरोलेव/अलेक्सी ल्यूनोव/यूरी गगारिन)
- 'मां' किस लेखक की रचना है?
  (चेखव/दोस्तोवस्की/गोर्की)
- अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा का यान यहां से छोड़ा गया।
  (श्रीहरिकोटा/बेकानूर/बंगलौर)
- सोवियत सहयोग से यहां प्रसिद्ध तेल-शोधक कारखाना लगाया गया।
  (कोचीन/ग्वालियर/मथुरा)
- इनके साथ पं. जवाहरलाल नेहरू पहली बार रूस गए।
  (पं. मोतीलाल नेहरू/इंदिरा गांधी/कमला नेहरू)
- नोबल पुरस्कार विजेता रूसी साहित्यकार।
  (आस्त्रोवस्की/गोगोल/शोलोखोव)
- विश्व का सबसे बड़ा कला संग्रहालय।
  (हर्मिताज संग्रहालय/लेनिन संग्रहालय/पुश्किन ललित कला संग्रहालय)
- रूसी भाषा की प्रमुख बाल-पत्रिका।
  (प्रावदा/कस्त्योर/गुंचा)
- विश्व की सबसे ऊंची मूर्ति यहां है।
  (वोल्गोग्राद/वाशिंगटन/पेरिस)
- प्रति वर्ष चित्रकारी प्रतियोगिताओं में पांच बच्चों को यह पुरस्कार दिया जाता है।
  (नोबुल पुरस्कार/लेनिन पुरस्कार/सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार)
- सोवियत संघ में प्रथम भारतीय राजदूत।
  (श्रीप्रकाश/विजयलक्ष्मी पंडित/सर्वपल्ली राधाकृष्णन)
- १९८० के ओलम्पिक खेलों में हाकी का स्वर्ण-पदक किस देश को मिला?
  (सोवियत संघ/भारत/पाकिस्तान)
- इन्हें पहचानिए और इनके नाम लिखिए—

_ _







अधिक से अधिक दस शब्दों में वाक्य पूरा कीजिए :

मुझे ऐसी कहानियां प्रिय हैं, जो ....

_ _

_ _

_ _

नाम ________________ उम्र ______

पता ______________________________

____

____

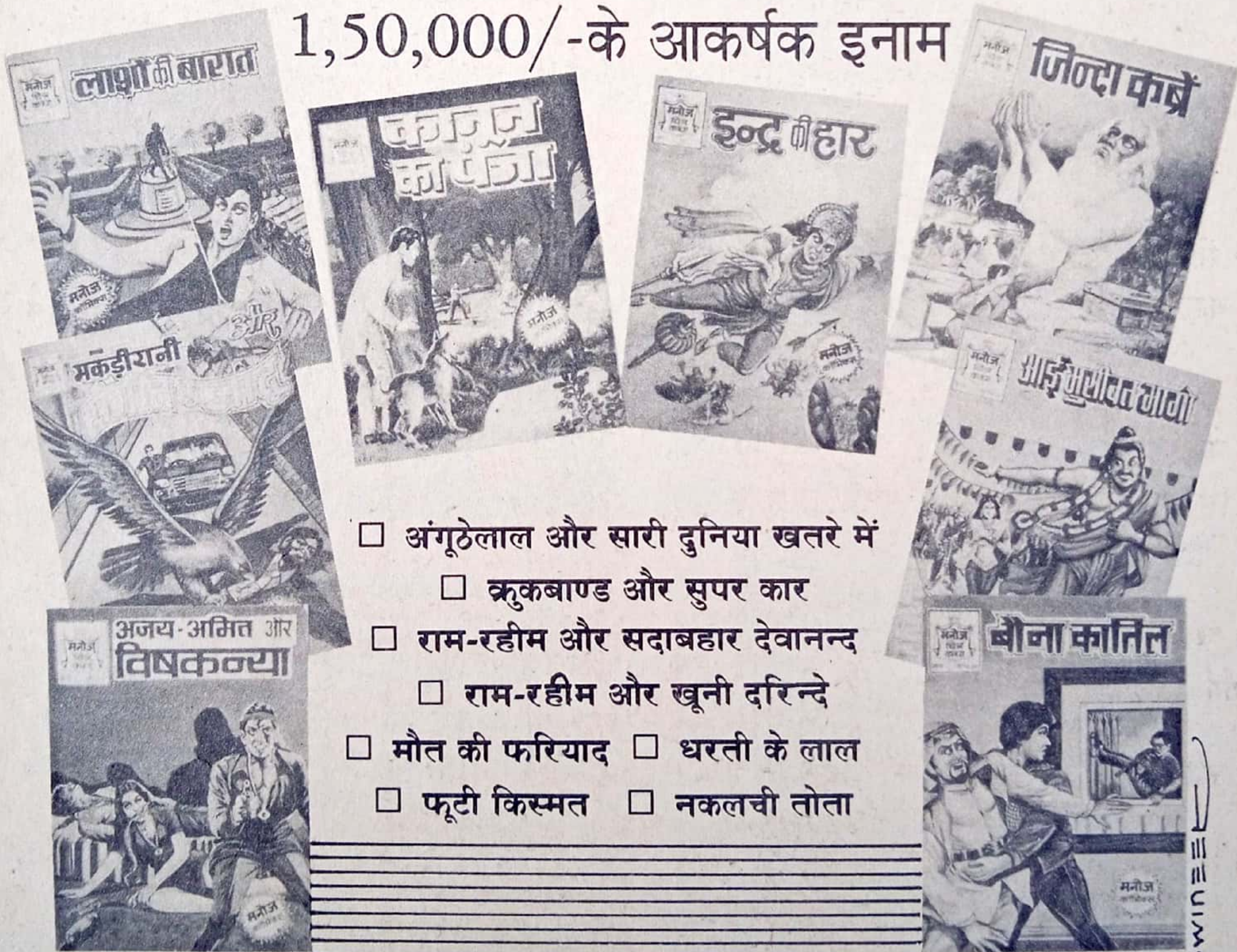
मनोज कॉमिक्स

कॉमिक्स के अच्छे लेखक व आर्टिस्टं सम्पर्क करें ।

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से अपनी प्रति सुरक्षित करायें।

बच्चों के लिये गर्मियों की छुट्टियां बिताने के लिये मनोरंजन का खजाना

मई माह के सोलह कॉमिक्स पढ़िये और जीतिये
1,50,000/-के आकर्षक इनाम



- ☐ अंगूठेलाल और सारी दुनिया खतरे में
- ☐ क्रुकबाण्ड और सुपर कार
- ☐ राम-रहीम और सदाबहार देवानन्द
- ☐ राम-रहीम और खूनी दरिन्दे
- ☐ मौत की फरियाद ☐ धरती के लाल
- ☐ फूटी किस्मत ☐ नकलची तोता

प्रकाशक : मनोज कॉमिक्स, 26/97, शक्तिनगर, दिल्ली-110007.

Kare 132


ग्लूकॉन-डी सुपरहीरो.
चुस्ती-फुर्ती से लबालब,
थका देनेवाली
गर्मी में भी.
थका देनेवाली गर्मी के दिन में आपके बच्चे को चाहिए ग्लूकॉन-डी : ग्लूकोज़, विटामिन-डी और कैल्शियम फ़ॉस्फ़ेट से भरपूर तुरंत शक्ति देनेवाला पेय.
फलों के रस, दूध, चाय, कॉफी या पानी में मिला कर पीजिए-पिलाइए ग्लूकॉन-डी. पूरे परिवार के लिए ताज़गीदायक पेय. 100, 200, 500 ग्राम पैक में उपलब्ध.
Glucon-D
200g
200 GRAMS NET
असली,
रंगारंग पैक
देख कर
लीजिए.
ग्लूकॉन-डी
शक्ति देनेवाला पेय... सुपरहीरो की खास पसंद
HTA 1649

नंदन

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

मई '८८
वर्ष : २४ अंक : ७



कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ: विद्याव्रत, राजेंद्र वधवा; एलबम : बी. मोहन नेगी

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील,
क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन



आओ बात करें

तिब्बत के पहाड़ी क्षेत्र में एक गुफा थी। गुफा में छोटा-सा मंदिर था। मंदिर में पहुंचे हुए एक लामा रहते थे। वह पूजा-पाठ में ही लीन रहते। आसपास के गांवों से कोई न कोई उनके लिए खाने को कुछ दे जाता। उसी से अपना काम चला लेते।

मंदिर में पूजा के लिए चांदी के कई कटोरे थे। कुछ और कीमती सामान भी था। एक दिन नवांग चोर गुफा में आया। मंदिर के कटोरे तथा दूसरी चीजें देख, मन ही मन खुश हुआ। उसने सोचा— 'रात के समय लामा सो जाएंगे, तभी चुपके से आकर मैं इन्हें चुरा ले जाऊंगा। कई महीने के खर्चे का इंतजाम हो जाएगा।'

नवांग ने पूरी योजना बना डाली। इसी ताक में रहा कि कब रात हो। अंधेरा हुआ, तो वह देर तक गुफा के आसपास आहट लेता रहा। फिर उसे लगा, भीतर लामा सो गए हैं। दबे पांव वह अंदर की ओर चला। भीतर पहुंच गया। उसे लगा, लामा बैठे-बैठे ही सो रहे हैं। नवांग ने झटपट सामान बटोरना शुरू कर दिया। लामा तो रात में देर-देर तक पाठ किया करते थे। उन्होंने आंखें खोलीं। नवांग को चोरी करते पाया। झट नवांग का हाथ पकड़ लिया। पास में पड़ी एक लकड़ी उठाई। मंत्र का जाप करते-करते ही कई बार उसके हाथ पर दे मारी।

नवांग की सारी योजना धरी रह गई। वह उलटे पांव वहां से भागा। उसका हाथ दर्द कर रहा था। उस पर चमकदार निशान पड़ गए थे। वह कुछ ही दूर गया कि सामने संकरा पुल आ गया। देखता क्या है कि अंधेरे में कोई डरावनी चुड़ैल-सी बढ़ी आ रही है। नवांग की तो घिग्घी बंध गई। डरा-डरा वह उसी छोटे-से मंत्र को बोलने लगा, जो लामा ने बोला था। चुड़ैल को लगा कि यह कोई सिद्ध लामा है। वह तुरत-फुरत वहां से रफू-चक्कर हो गई। अब नवांग की जान में जान आई। उसने सोचा, यह मंत्र तो बड़ा करामाती है। इससे मुसीबतों से छुटकारा मिल जाता है। वह रोज-रोज मंत्र जाप करता। चोरी करनी उसने छोड़ दी थी।

दो बरस यों ही निकल गए। इस बीच नवांग मेहनत से कमाई करने लगा था। उसने पैसा जोड़-जोड़कर चांदी का कटोरा बनवाया। फिर एक दिन नवांग उसी गुफा मंदिर में गया। आज भगवान के सामने उसने चांदी का वह कटोरा रख दिया। बोला— "प्रभो, आज चोरी करने नहीं आया। आपको यह भेंट करने आया हूं।"

वही बूढ़ा लामा उसके पास आया। उसने नवांग को आशीर्वाद दिया। नवांग के शरीर पर जो निशान पड़ गए थे, वे अपने आप मिट गए।

नवांग की तरह कौन कब भटक जाए, नहीं कह सकते। पर बुराई में से भी अच्छी राह हमें खोज लेनी चाहिए। जो गलती कर बैठो, वह फिर न हो— यही ध्यान रहे।

तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती



बेटे की सीख

— मानुश्री

रानी रूपादे ने खिड़की से झांककर देखा— राजा देवसिंह चुपचाप बैठे थे। सामने भोजन की थाली रखी थी। वह समझ गई कि महाराजा परेशान हैं। उनकी चिंता का कारण था —इकलौता बेटा ध्रुव।

रूपादे धीरे-धीरे अंदर गई। पति से कहा —"मैं आपकी चिंता अच्छी तरह समझती हूं, पर इस तरह भोजन छोड़ने से क्या होगा ?"

राजा देवसिंह ने उदासी से पत्नी की ओर देखा। फिर बोले —"तब किस तरह क्या होगा ? इस ध्रुव ने तो बहुत दुखी किया है मुझे।"

सचमुच उत्पाती ध्रुव ने सबको परेशान कर रखा था। हर समय शरारतें करता घूमता। किसी का अनुशासन न मानता। लोगों को बेबात सजा देना, उनके घरों में आग लगा देना, उसके प्रिय खेल थे। शुरू-शुरू में लोगों ने कुछ न कहा। धीरे-धीरे राजा के पास शिकायतें पहुंचने लगीं। राजा सोचते —'क्या ध्रुव मेरे बाद अच्छा राजा बन सकेगा ?' उन्होंने बेटे को हर तरह समझाया। मां ने प्यार से रास्ते पर लाने का प्रयास किया, पर किसी से कुछ न हो सका।

एक दिन देवसिंह मंत्री से विचार-विमर्श कर रहे थे। मंत्री ने कहा —"महाराज, हमारे राज्य में आचार्य देवक का विद्यालय प्रसिद्ध है। सीमा पर घने वन के बीच आचार्य का आश्रम है। वहीं बच्चे रहकर शिक्षा पाते हैं। मैंने सुना है, दूसरे कई राज्यों के राजकुमार भी वहीं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। राजकुमार ध्रुव को वहां भेजकर देखिए।"

दो दिन बाद राजा देवसिंह ध्रुव को लेकर आचार्य देवक के पास पहुंचे।

आचार्य देवक ने राजा का स्वागत किया। राजा ने आचार्य देवक को ध्रुव के बारे में बताया। आचार्य ने कहा —"राजन, ध्रुव को विद्यालय में शिक्षा देकर मुझे प्रसन्नता होगी। पर एक बात है, विद्यालय का जीवन कठोर है। यहां अमीर-गरीब के बीच कोई भेद नहीं किया जाता। सब छात्र एक-से वस्त्र पहनते हैं। एक-सा भोजन करते हैं। क्या यह नियम आपको स्वीकार होगा ?"

राजा देवसिंह ने कहा —"आचार्य, मैं चाहता हूं, ध्रुव राजपद के योग्य बन जाए। मुझे आपके विद्यालय का हर नियम स्वीकार है।"

राजकुमार ध्रुव आचार्य देवक के विद्यालय में रहकर पढ़ने लगा। उसे वहां का वातावरण एकदम अच्छा न लगा। कहां राजमहल का ऐश-आराम और कहां आश्रम का सादा, सरल जीवन। आचार्य देवक के विद्यालय में हर बात का नियम था। सोने, जागने, पढ़ने-खेलने, भोजन और विश्राम का समय निश्चित था।

ध्रुव बेचैन रहता था। पढ़ाई में मन न लगता। शरारत सूझती,तो परिंदों को मार डालता। फूलों की क्यारियां रौंद देता। साथियों से मारपीट करने लगता।

आचार्य देवक के पास ध्रुव की शिकायतें पहुंचने लगीं। उन्होंने पहले समझाया। बताया —"ध्रुव, तुम आश्रम में अकेले राजकुमार नहीं हो। राजा का बेटा होने का मतलब मनमानी करना भी नहीं है। आश्रम के नियम तोड़ोगे, तो दंड मिलेगा।"

लेकिन ध्रुव की आदतें इतनी जल्दी कहां बदलने वाली थीं ! वह मनमानी करता रहा, तो एक दिन आचार्य ने उसे पकड़ लिया। सबके सामने दंड दिया। ध्रुव को आचार्य पर बहुत क्रोध आया, पर वह अपनी गलती भी जानता था। उसमें बदलाव आ रहा था, मगर बहुत धीरे-धीरे।

कुछ समय बाद एक दिन राजा देवसिंह आश्रम पहुंचे। राजा ने अपना रथ आश्रम से कुछ दूर छोड़ दिया था। वह साधारण वस्त्र पहने हुए थे। वह आश्रम के अंदर गए, तो देखा, पेड़ के नीचे सभा जुड़ी हुई थी। राजकुमार ध्रुव एक तरफ खड़ा था। आचार्य

उसे बुरी तरह डांट रहे थे। थोड़ी देर पहले ध्रुव ने अपने एक साथी को बिना बात मारा था।

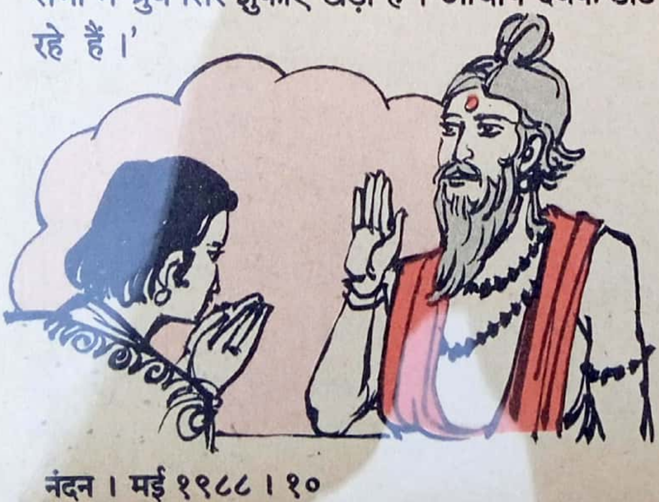
राजा को देखकर भी आचार्य चुप नहीं हुए। ध्रुव गरदन झुकाए खड़ा था। ध्रुव के सहपाठी उस पर हंस रहे थे। राजा ने कुछ कहा नहीं, पर मन ही मन उन्हें आचार्य पर क्रोध आ गया। सोचने लगे —'कम से कम मुझे देखकर तो आचार्य चुप हो सकते थे।'

उस दिन राजा आश्रम में अधिक देर नहीं रुके। आचार्य भी राजा का भाव समझ गए, पर उन्हें तो अपना कर्तव्य निभाना ही था। अनुशासन तोड़ना उन्हें बहुत बुरा लगता था।

धीरे-धीरे समय बीता। राजकुमार ध्रुव शिक्षा पूरी करके राजधानी लौट आया। सचमुच अब वह पूरी तरह बदल चुका था। जैसे वह कोई दूसरा ही ध्रुव था —शांत, सौम्य,गम्भीर। राजा संतुष्ट थे। पर फिर भी जब उन्हें आश्रम वाली घटना याद आती, तो मन क्रोध से भर उठता।

एक दिन देवसिंह, राजकुमार ध्रुव तथा और लोगों के साथ वन में शिकार के लिए जा रहे थे। घोड़ों पर सवार थे। चारों ओर घना वन था। तभी वन में पगडंडी पर राजा ने आचार्य देवक को जाते देखा। उन्होंने गेरुए वस्त्र पहन रखे थे। कंधे पर पोटली, हाथ में एक छोटा-सा डंडा।

आचार्य ने राजा को देखते ही आशीर्वाद दिया। पर राजा ने जैसे देखकर भी नहीं देखा। उन्होंने मुंह फिरा लिया। न नमस्कार किया, न घोड़े से उतरे। आंखों के सामने एक पुराना दृश्य उभर आया —भरी सभा में ध्रुव सिर झुकाए खड़ा है। आचार्य देवक डांट रहे हैं।'



यह ध्यान आते ही राजा का मन क्रोध से भर उठा। वह सोच रहे थे —'इस आचार्य से इसी तरह व्यवहार करना ठीक है।'

तब तक पीछे से ध्रुव का घोड़ा आगे आ गया। उसने आचार्य को देखा, तो तुरंत घोड़े से कूद पड़ा। झुककर उनके चरण छुए। आचार्य देवक ने ध्रुव को कंधों से पकड़कर उठाया। उसकी कमर थपथपा दी। फिर उसे दोबारा आशीर्वाद देकर अपने रास्ते पर बढ़ गए। जैसे कुछ न हुआ हो।

ध्रुव की आंखों से पिता का व्यवहार छिपा न रहा। उसने क्षुब्ध स्वर में कहा —"महाराज, आचार्य ने आपको आशीर्वाद दिया, पर आपने..."

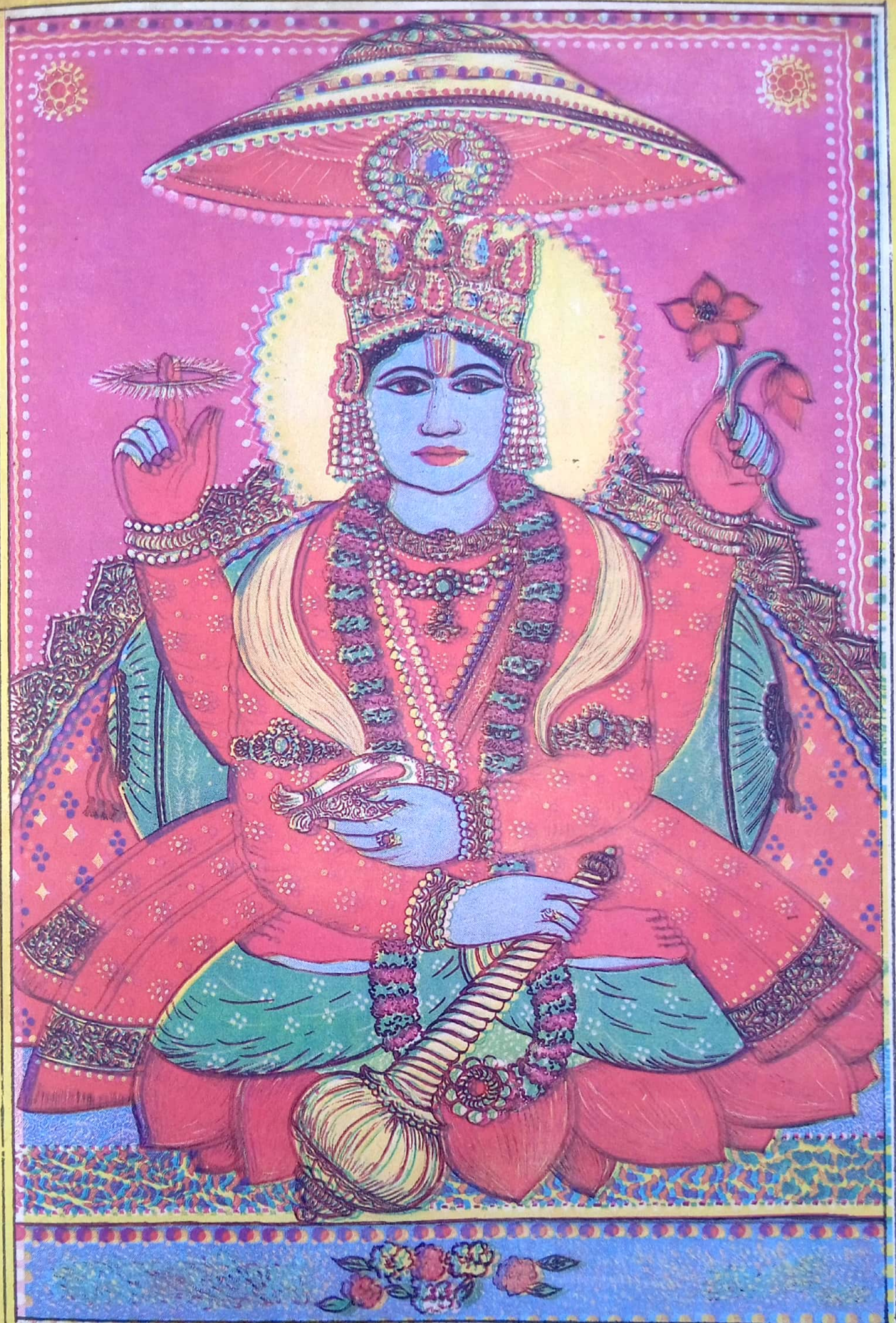
राजा ने बीच में ही बात काट दी —"हां, मैंने तुम्हारे अहंकारी आचार्य को नमस्कार नहीं किया। तुम भूल गए कि इसने एक बार मेरे ही सामने तुम्हें आश्रम में दंडित किया था। मेरी उपस्थिति की भी परवाह नहीं की थी।"

ध्रुव ने एक नजर दूर जाते आचार्य पर डाली। फिर बोला —"पिता जी, उस बात के लिए आपको उनका उपकार मानना चाहिए। उन्होंने मुझे सही रास्ता दिखा दिया। अगर मैं उनके आश्रम में न जाता, तो न जाने क्या हाल होता। फिर आपने ही तो खोजा था उन्हें।"

बेटे की बात राजा देवसिंह के कानों में चुभ गई। जैसे आंखों के सामने पड़ा परदा हट गया। मन ग्लानि से भर गया —'हां, ठीक ही तो कह रहा है ध्रुव। वह सुधर गया और मैं... मैं राजा बन कर भी विवेक खो बैठा।'

वह सोचते खड़े रह गए। फिर देखा, सबकी नजरें उन पर टिकी थीं। राजा ने कहा —"आप सब राजधानी लौट जाएं। मुझे तुरंत आचार्य देवक के आश्रम में जाना है —अभी, इसी समय..." और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना उन्होंने घोड़ा दौड़ा दिया —उसी दिशा में जिधर आचार्य देवक गए थे।

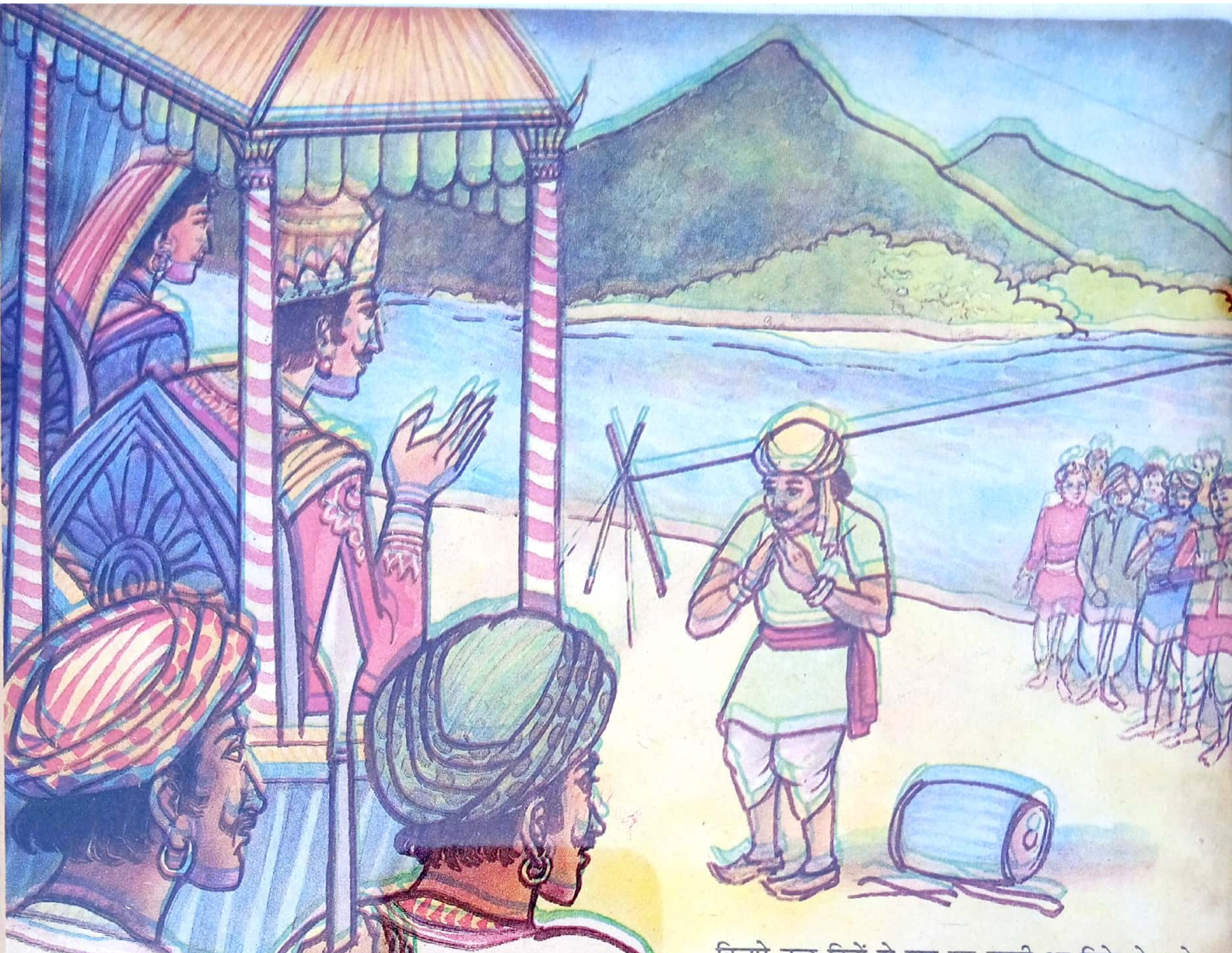
कुछ देर बाद राजा आचार्य देवक के चरणों में शीश झुका रहे थे। उनकी आंखें क्षमा मांग रही थीं। आचार्य मुसकरा रहे थे —जैसे कुछ हुआ ही न हो।



'नंदन' एलबम : ५३

भगवान बदरीनाथ

Scanned with CamScanner



धागा टूट गया

—मृदुला हालन

हिमालय की उपत्यका में एक सुंदर नगर था । तीन तरफ से ऊंची पर्वत चोटियों से घिरा, यह नगर धन सम्पदा से भरा था । नगर का राजा था देव वर्मा । शारीरिक शक्ति में मतवाले हाथी के समान था । अपनी प्रजा की सुख-समृद्धि के लिए रात-दिन जुटा रहता था ।

देव वर्मा स्वयं एक अच्छा कलाकार भी था । अक्सर राजधानी में प्रसिद्ध कलाकारों का आना-जाना लगा रहता था । एक बार नगर के बाहर, एक ताल के किनारे कुछ दिनों से एक नट-नटनी आ टिके थे । वे राजा के अतिथि नहीं थे । किसी के निमंत्रण पर भी यहां नहीं आए थे । नगर-नगर घूमते, अपनी कला से लोगों का मन मोहते थे । कुछ ही दिन में उनके,खेलों की चर्चा नगर में और आसपास फैल गई । वे जहां भी खेल दिखाने जाते, लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जाती ।

नटी जब नट की अंगुली पर टिके हुए लम्बे,पतले बांस के सिरे पर अपनी सधी हुई लहराती काया से करतब दिखाती, तो लोग सांस रोककर खड़े रह जाते । फिर नटी बिजली की फुर्ती से नीचे कूदकर ढोल गले में डाल लेती । उसकी अंगुलियों की थाप पर नट के करतब शुरू हो जाते ।

नगर में ऐसे अनोखे कलाकार आएं और राजा को पता न लगे ! धीरे-धीरे देव वर्मा तक भी उनकी कला की प्रशंसा पहुंची ।

देव वर्मा ने सुना और सोचा—'होंगे कोई बंजारे ! आज आए हैं, कल चले जाएंगे। अगर कोई पहुंचे हुए कलाकार होते, तो दरबार में अवश्य हाजिर होते।'

यह खबर उड़ते-उड़ते रनिवास तक भी जा पहुंची। रानी मणिमेखला ने राजा से कहा—"महाराज, इतने बड़े कलाकार नगर में हैं। सारा नगर उनकी प्रशंसा कर रहा है। क्या हम उनकी कला नहीं देख पाएंगे ? आप तो कलाकारों का सम्मान करते हैं महाराज ! क्या इन कलाकारों का सम्मान नहीं करेंगे ?"

राजा ने दूसरे दिन मंत्री को उनके पास भेजा। मंत्री आया उदास चेहरा लिए। मंत्री ने आदर से सिर झुकाकर कहा—"क्षमा चाहता हूं महाराज . . ."

"क्यों क्या हुआ ? नट-नटनी को निमंत्रण तो भेज दिया होगा ?"—राजा ने पूछा।

"निमंत्रण तो भेजा महाराज ! किंतु स्वीकार नहीं हुआ।"—मंत्री बोला—" उन्होंने आपके निमंत्रण की बात सुनकर हाथ जोड़कर कहा— राजदरबार में विद्वान और प्रसिद्ध कलाकारों का सम्मान होता है। हम तो रमते जोगी हैं। हमारा स्थान दरबार नहीं है। हमारी कला देखने के लिए तो राजा को हमारे पास ही आना पड़ेगा।"

सुनकर राजा देव वर्मा की भृकुटि तन गई। क्रोध के कारण राजा अपना विवेक खो बैठा—"हमारा इतना बड़ा अपमान ! आपने उनकी गर्वभरी बात सुनी। फिर सुनकर सहन कर ली ?"

"महाराज, क्षमा करें। जिस विनीत भाव से नट-नटनी ने यह कहा, उसमें आपके प्रति पूर्ण सम्मान ही भरा था। अपने प्रति गर्व नहीं था।"— मंत्री ने कहा।

"ठीक है ! कल कुछ सोचकर बताएंगे। आखिर हम राजा हैं। वे बंजारे हमारी बात कैसे नहीं मानेंगे ?"—राजा महल में चला गया।

रानी को सारी बात पता चल गई थी। वह राजा के पास आई। बोली—"महाराज, आप तो कला प्रेमी हैं ! सोचिए, क्या कला कभी दरबार और जंगल की सीमाओं में बंधी है ? . . . नट-नटनी अगर दरबार में नहीं आते हैं, तो यह आपका अपमान कहां हुआ ? हम ही चलकर क्यों न उनकी कला को देख लें।"

राजा बोला—"आप जानती हैं। . . .हमने कितने आदर व सम्मान से उन्हें यहां आने का निमंत्रण भेजा ! आज तक किसी कलाकार ने हमारे निमंत्रण को नहीं ठुकराया। मगर उन्होंने . . ." —कहता-कहता राजा चुप हो गया।

"मुझे लगता है, अन्य कलाकारों और इनमें अंतर है।"—रानी ने कहा।

"कैसा अंतर ?"—राजा ने आश्चर्य से पूछा।

"महाराज, मैंने सुना है, ये अपनी कला को बेचते नहीं। इन्हें सम्मान का भी लोभ-लालच नहीं है। कला प्रदर्शन के बाद जब दर्शक खुशी से झूमते हुए, दोनों हाथों से धन वर्षा करने लगते हैं, तो नट-नटनी हाथ जोड़कर, लोगों से कहते हैं—हमारा प्रदर्शन इन सिक्कों का दास नहीं है। ये सिक्के कला को भ्रष्ट करते हैं। हमें दो वक्त भोजन चाहिए। हम उतना ही लेंगे। शेष कुछ नहीं।"

सुनकर राजा सोच में पड़ गया। दूसरे दिन उसने मंत्री को भेजा। कहलवाया कि नट-नटनी कोई असम्भव तमाशा करके दिखाएं, तो राजा स्वयं देखने आएंगे।

राजा का संदेश पा, नट-नटनी सहमत हो गए। उन्होंने कहलवाया—'कल कच्चे धागों पर चलकर नटी सरोवर पार करेगी।'

राजा आश्चर्य में था। बोला—"मंत्री जी, यह सरोवर तो बहुत गहरा है। कोई इसकी थाह नहीं पा सका। मुझे यह कोरी गप्प लगती है।



हम घोषणा करते हैं कि यदि नटनी ने वह कर दिखाया, तो हम अपना आधा राज्य उसे दे देंगे।''

मंत्री ने तुरंत नगर में राजा के कथन की घोषणा करा दी, तो सभी कल के खेल का इंतजार करने लगे।

दूसरे दिन निश्चित समय पर राजा-रानी सरोवर के निकट पहुंचे। भारी भीड़ जमा थी। नट-नटनी भी तैयार थे। सरोवर के दोनों किनारों पर दो मजबूत बांस गाड़े गए। फिर उन पर कच्चे धागे बांध दिए गए।

देव वर्मा के कहने पर सूत के धागे और धागे बांधने वाले दोनों बांसों की अच्छी तरह जांच-पड़तालकर ली गई थी। साधारण बांस और साधारण कच्चा सूत। कहीं कोई धोखेबाजी नहीं थी।

आज सुबह से सरोवर के चारों ओर हलचल थी। नगरवासी बड़ी संख्या में वहां इकट्ठे थे। ठीक डेढ़ बजे राजा की सवारी वहां पहुंची। गगनभेदी जय-जयकार हुआ। मंच पर मणिमेखला के साथ राजा आसीन था। सभी सभासद अपने-अपने आसनों पर बैठ चुके थे।

नट-नटनी ने राजा रानी के सामने आकर प्रणाम किया—''राजा की जय हो। रानी की जय हो!'' राजा ने उनका अभिवादन स्वीकार कर लिया। नगाड़े और ढोल जोर-जोर से बज उठे।

घड़ी ने दो बजाए। नट ने हाथ उठाकर नगाड़े बंद करा दिए। अपना ढोल गले में डालकर तैयार हो गया। सरोवर के पूर्वी छोर की ओर नटनी तैयार खड़ी थी।

नट ने ढोल पर पहली चोट की। तुरंत नटनी ने एक पांव धागों पर रखा। दर्शकों ने दम साध लिया। ढोल की दूसरी चोट पर नटी ने दूसरा पांव भी धागों पर रख दिया।

सभी की सांसें थम गईं। फिर नटी ने धागे पर शरीर को संतुलित किया। देव वर्मा की आंखों में आश्चर्य था।

नट ने धीरे-धीरे ढोल पर चोट की। साथ ही नटनी के कदम आगे बढ़ने लगे। साध-साधकर कदम रखती नटी नट के ढोल की गूंज के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। उसे कोई भय या दुविधा नहीं थी। अपनी मुसकान चारों ओर बिखेरती वह लचक रही थी। नट भी रंग में आ गया था। सरोवर के किनारे-किनारे नाचता हुआ वह ढोल बजा रहा था।

चलते-चलते नटनी ने सरोवर का पांचवां हिस्सा पार कर लिया। अब देव वर्मा का आश्चर्य परेशानी में बदल रहा था। मंत्री की ओर झुककर उसने कहा—''आपने धागों की तो परख कर ली थी मंत्री जी?''

मंत्री ने हाथ में पकड़ा धागा खोलकर राजा के हाथ में दे दिया। राजा ने जरा-सा झटका दिया, तो धागा टूट गया। वह सचमुच कच्चा धागा था। राजा परेशान था, इन कच्चे धागों ने नटनी का भार कैसे संभाल लिया। आधा राज्य जाने की चिंता में डूबा था राजा। इसी बीच नटनी ने सरोवर पार कर लिया।

गगनभेदी जयकार और तालियों की गड़गड़ाहट से राजा की तंद्रा भंग हुई। चिल्लाया—''नहीं, यह सच नहीं है। . . . यह कैसे हो सकता है? नटनी इसी धागे पर चलकर वापस जाए, तभी शर्त पूरी होगी।''

सुनकर नटनी हंसी। हंसकर राजा की ओर देखा। नट और नटनी ने यह शर्त भी मान ली। ढोल की धमक पर वह उसी सरल भाव से वापस चल पड़ी।

देव वर्मा पसीना-पसीना हो रहा था। उसे बिल्कुल विश्वास नहीं था कि यह सम्भव होगा। आधा राज्य हाथ से जाता देख, उसके मन में कपट आ गया।

नाचती-लहराती नटनी सरोवर के ठीक बीच में पहुंच चुकी थी। नगरवासी जोर-जोर से उसका उत्साह बढ़ा रहे थे। तभी राजा के इशारे पर एक सेवक ने चुपके से किनारे के पास जा, धागे तोड़ दिए। धागे का टूटना था, नटनी धड़ाम से नीचे गिरी और अथाह पानी में समा गई। यह देख, नट चिल्लाया—''राजा ने धोखा किया। इसका राज्य नष्ट हो जाएगा।'' कहता हुआ वह भी पानी में कूद पड़ा।

छह महीने बीतते न बीतते, वहां भयंकर भूकम्प आया। राजा गया, राज्य गया, प्रजा गई, नगरी गई। सब कुछ अतल में समा गया। ●

समय की बात

--सुब्रतकुमार गोस्वामी

बात बहुत पुरानी है । भारत में कुशुपुर नामक नगर था । वहां का सर्वाधिक समृद्ध व्यापारी था उदयप्रकाश । अपने दौलतमंद होने का उसे बहुत घमंड था । मुसीबत के मारे लोग उदयप्रकाश से पर्याप्त सहायता पाकर, जब उसका आभार मान कहते— "भविष्य में हमारे योग्य कार्य होने पर, आप हमें अवश्य याद करें ।" सुनते ही उदयप्रकाश भड़क उठता— "किस चीज की कमी है मेरे पास, जो मुझे तुम जैसों की मदद का मोहताज होना पड़ेगा ?"

एक बार की बात है । दूर अरब देश से दाऊद नामक एक बहुत बड़ा व्यापारी बेहतरीन नस्ल के पचास घोड़े ले, समुद्री मार्ग से व्यापार करने भारत की ओर निकला । कई दिन की यात्रा के बाद जब वह भारत के निकट पहुंचा, तभी दुर्भाग्य से समुद्र में भयंकर तूफान आया । तूफान की चपेट में आकर सारे अरबी घोड़े व दाऊद के कई सेवक अपनी जान से हाथ धो बैठे । दाऊद और उसके कुछ गिने-चुने सेवक जैसे-तैसे बच गए ।

मरणासन्न अवस्था में पड़े दाऊद व उसके सेवकों को समीप के गांव वाले अपने गांव ले गए । जी-जान से उनकी देखभाल की । अंत में गांव वालों की मेहनत रंग लाई । दाऊद और उसके सेवकों को होश आ गया । दाऊद ने गांव वालों को आपबीती सुनाई । फिर घोर निराशा के स्वर में बोला— "फूटी कौड़ी भी नहीं है हमारे पास ! स्वदेश कैसे लौटूंगा ?"

सारा वृत्तांत सुनकर गांव वालों ने दाऊद को उदयप्रकाश के पास जाने की सलाह दी ।

दाऊद गांव वालों के कहे अनुसार ही उदयप्रकाश से मिला । उसने उसे अपनी आप बीती कह सुनाई । सुनकर उदयप्रकाश आत्मीयता से बोला— "व्यापार में तो ऐसे हादसे होते ही रहते हैं । रही तुम्हारे स्वदेश लौटने की बात, तो तीन-चार दिन में मैं उसके लिए प्रबंध कर दूंगा ।"

वायदे के अनुसार अगले तीन दिन बाद उदयप्रकाश ने दाऊद व उसके सेवकों को एक मजबूत किस्म के जहाज में बैठाया । साथ में ढेर सारे उपहार दे उन्हें उनके देश रवाना कर दिया । इतनी बड़ी समस्या यूं चुटकियों में सुलझ जाएगी, दाऊद को सपने में भी उम्मीद न थी । स्वदेश लौटते वक्त वह खुशी से विभोर होकर बोला— "मैं आपका उपकार आजीवन नहीं भूलूंगा । शीघ्र ही आपको भेंट करने अच्छी किस्म के अरबी घोड़े ले, फिर आऊंगा । इसके अलावा भविष्य में कभी आपके किसी भी काम आ सका, तो मुझे बहुत खुशी होगी ।"

अपने स्वभाव के अनुसार यह सुनते ही उदयप्रकाश आग-बबूला हो गया । बोला— "तुम, भला मेरे किस काम आओगे ?"

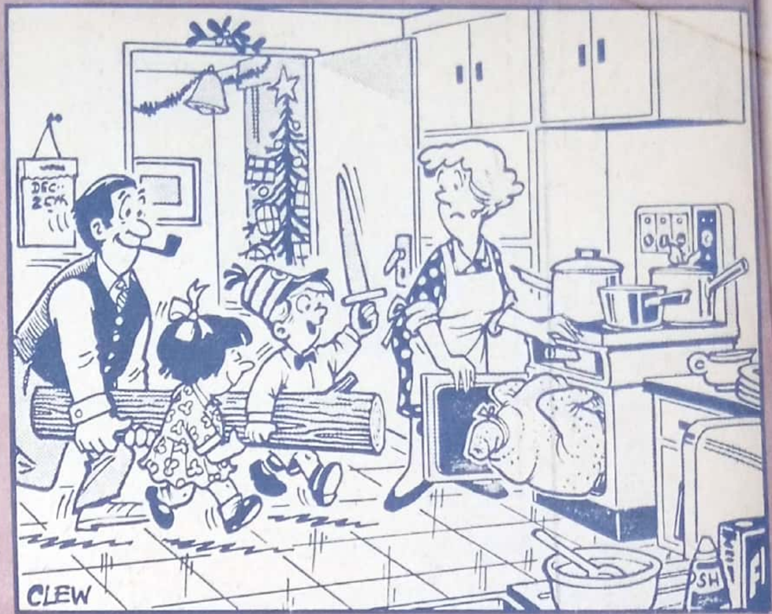
ऐसे कड़वे उत्तर की दाऊद को कतई आशा नहीं थी । खैर, बुझे मन से वह अपने देश रवाना हो गया ।

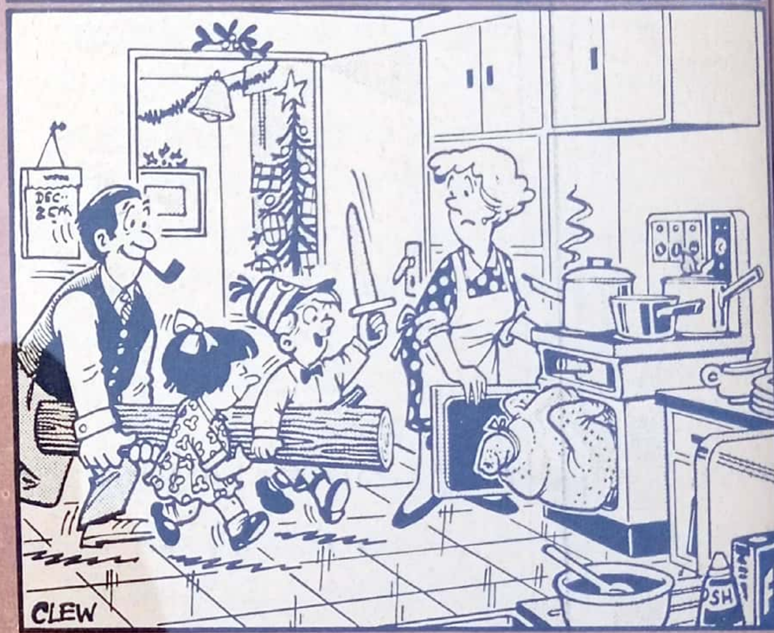
समय-समय की बात है । इसके कुछ ही दिनों बाद कुख्यात डाकुओं के एक बड़े दल ने उदयप्रकाश की हवेली में डाका डाल, उसका सारा धन लूट लिया । उसके भवन व गोदामों में आग लगा दी । इस लूट ने उदयप्रकाश को बुरी तरह से तबाह कर दिया ।

उधर अपमानित होने के बावजूद दाऊद अपने वायदे को भूला नहीं था । वह कुछ अरबी घोड़े व कई अनमोल उपहार लेकर भारत आया । इस बीच चिंता में घुल-घुलकर उदयप्रकाश की हालत खराब हो गई थी । उदयप्रकाश को पहचानने में दाऊद को कोई दिक्कत नहीं हुई । उदयप्रकाश से सारा हाल सुनकर दाऊद को बहुत दुःख हुआ । उसने उदयप्रकाश को तमाम उपहार देने के अलावा, व्यापार फिर से शुरू करने के लिए ढेर सारा धन भी दिया ।

कुछ ही दिनों में उदयप्रकाश का व्यापार पहले की तरह चमक उठा । फिर वह खुले दिल से दूसरों की सहायता करने लगा । पर अब उसका अहंकार खत्म हो चुका था, क्योंकि बीते समय ने उदयप्रकाश को भलीभांति एहसास करा दिया था— समय कब क्या कर दे, कोई नहीं जानता । •

आप कितने बुद्धिमान हैं ?





यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।



कहानी लिखो—५४

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० मई '८८ तक **सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी पुरस्कृत कर, प्रकाशित की जाएगी।

परिणाम : जुलाई '८८

चित्र-पहेली—५४

'मेरा मनपसंद नाटक' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए। चित्र अधिक से अधिक ६ इंच चौड़ा और ९ इंच लम्बा होना चाहिए। चित्र १० मई '८८ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र 'नंदन' में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा। **परिणाम : अगस्त '८८**



चुटकी भर राख

—प्रकाश मनु

पुराने समय की बात है । गोंडवाना में चांदगढ़ राज्य था । चारों ओर जंगल थे । वहां आदिवासी कबीले के लोग रहते थे । उनमें चिम्पा नामक युवक भी था । खूब सुंदर, गठा हुआ कसरती शरीर । संगीत, कला में भी निपुण । हर पूर्णिमा की रात, कबीले के लोग नाचते । सबसे ज्यादा वाहवाही चिम्पा को मिलती ।

एक बार की बात है । शाम के समय चिम्पा अपने कुछ साथियों के बीच नृत्य कर रहा था । उसके साथी ढोल-नगाड़े बजा रहे थे । तभी वहां चांदगढ़ का राजा भल्ल अपने घोड़े पर आ निकला । चिम्पा को इस कदर मस्ती में झूम-झूमकर नाचते देखा, तो ठिठक गया । घोड़ा वहीं रोक दिया । चिम्पा का नृत्य थमा, तो राजा भल्ल बोला —"तुम तो बहुत अच्छे नर्तक हो । मेरे साथ कालागढ़ चलो ।"

एक क्षण के लिए चिम्पा के चेहरे पर चमक आ गई । लेकिन फिर उदास होकर बोला —"कहां आप राजा, कहां मैं मामूली आदमी ! इन कपड़ों में आपके साथ चलता क्या अच्छा लगूंगा ?"

आनन-फानन में राजा ने चिम्पा के लिए राजसी वस्त्रों का इंतजाम कर दिया । एक घोड़ा भी मंगाया गया । हीरे-मोती टंके, चमचमाते राजसी वस्त्र पहने, घोड़े पर सवार चिम्पा किसी राजा से कम न लगता था ।

कई दिन, कई रात चलने के बाद वे दोनों कालागढ़ पहुंचे । वहां पहले से ही स्वागत-सत्कार की तैयारियां थीं । खूब बढ़िया दावत भी हुई ।

रात में नृत्य का कार्यक्रम हुआ । चिम्पा का नृत्य इतना मोहक था कि सभी के पैर थिरक उठे ।

कालागढ़ की बड़ी राजकुमारी सपना और छोटी मानकी भी यह नृत्य देखने आई थीं । नृत्य के बाद वे राजा भल्ल से मिलने गईं । बातों-बातों में राजा भल्ल ने बताया —"यह मेरा मित्र है चिम्पा ।"

दोनों राजकुमारियों ने मन ही मन कुछ निर्णय कर लिया । जाकर अपने पिता से कहा । कालागढ़ के राजा ने भल्ल और चिम्पा से बात की ।

अगले ही दिन बड़ी राजकुमारी सपना का विवाह राजा भल्ल के साथ और छोटी राजकुमारी मानकी का विवाह चिम्पा के साथ कर दिया गया ।

सपना राजा भल्ल के साथ राजमहल में चली गई । मानकी चिम्पा के साथ चल पड़ी । वह मन ही मन चिम्पा के महलों की कल्पना कर रही थी । लेकिन चलते-चलते चिम्पा आखिर घास-फूस की एक झोंपड़ी के आगे रुका । घोड़े से उतरकर मानकी से बोला —"चलो भीतर ।"

मानकी को लगा, चिम्पा मजाक कर रहा है । पूछा —"महल कहां है तुम्हारा.... ?"

"यही मेरा महल है..."— चिम्पा मुसकराया —"इसी में हमें रहना होगा ।"

मानकी को धक्का-सा लगा । लेकिन बोली कुछ नहीं ।

कुछ देर बाद चिम्पा बोला —"तुम बैठो, मैं अभी आया ।"

थोड़ी देर में चिम्पा लौटा, तो वह सिर्फ एक मैली धोती पहने था । मानकी ने हैरानी से पूछा —"आपके राजसी वस्त्र कहां गए ?"

चिम्पा बोला —"जिसके थे, उसी के पास..."

मानकी समझी नहीं । चिम्पा ने अब साफ-साफ बता दिया कि वह एक मामूली युवक है, राजकुमार नहीं । लकड़ियां बेचकर जैसे-तैसे गुजारा करता है ।

दो दिन गुजर गए । तीसरे दिन मानकी

ने कहा —"तुम ऐसे फटे-पुराने कपड़े पहनो, अच्छा लगता है क्या ?"

—"लेकिन क्या करूं ? मजबूरी है। मेरे पास और कपड़े हैं ही नहीं।"

मानकी ने अपने बटुए में से दो रुपए निकालकर दिए। कहा —"जाओ, अपने लिए कपड़े ले आओ।"

चिम्पा गया। उसने कपड़े की कई दुकानें देख मारीं। लेकिन दो रुपए में कोई ढंग का कपड़ा मिला ही नहीं। लौटकर उसने मानकी को यह बात बता दी।

मानकी को क्रोध आ गया। बोली —"दो रुपए में जो भी मिलता है, ले आओ।"

चिम्पा फिर बाजार की ओर भागा। कुछ दूरी पर एक संपेरा दिखाई दिया। उसके हाथ में एक टोकरी थी। टोकरी में काला नाग था।

संपेरा आवाज लगा रहा था —"ले लो, ले लो... दो रुपए में काला नाग।"

चिम्पा ने झट दो रुपए देकर नाग की टोकरी ले ली। वापस चल पड़ा। उसे अजीब तरह की खुशी हो रही थी। लेकिन मन में उधेड़बुन भी थी —'लेने आया था कपड़े, ले लिया काला नाग।'

एक पेड़ के नीचे बैठकर वह सोचने लगा —'अब क्या करूं ?' टोकरी पास ही रख दी।

अचानक उसने हलकी सरसराहट सुनी। चौंककर देखा, नाग टोकरी में से निकलकर, एक बड़े छेद में जा रहा था। चिम्पा दौड़ा। दोनों हाथों से कसकर पूंछ पकड़ ली।

नाग बोला —"अरे, अरे, छोड़ दो मुझे।"

—"क्यों छोड़ूं ? तुम बिल में चले जाओगे।"

—"नहीं जाऊंगा। तुम छोड़ो तो।"

और सचमुच, चिम्पा ने छोड़ा, तो नाग बाहर आ गया। चिम्पा ने पूछा —"कहां जा रहे थे तुम ?"

"नागलोक में।"— नाग बोला।

—"वहां क्या है ?"

"यह पूछो, क्या नहीं है वहां ? इतने हीरे, मोती, रत्न, जितने सारी धरती पर नहीं हैं। पलक झपकते हर इच्छा पूरी हो जाती है। खाने-पीने की कमी नहीं। दूध की नदियां बहती हैं।"— नाग ने बताया।

"तो मुझे भी ले चलो वहां !"— चिम्पा ने आग्रह किया।

"ठीक है, मेरे पीछे-पीछे आओ।"— नाग ने कहा।

नाग तेजी से अपने परिचित रास्ते पर चल पड़ा। आखिर वह नागलोक में आ गया। सब ओर किस्म-किस्म के नाग थे। चिम्पा को सब अजीब ढंग से घूर रहे थे।

चिम्पा को नागराज से मिलवाया गया। इतना विशाल था उसका शरीर कि चिम्पा सिहर गया। नाग ने चिम्पा की दयालुता के बारे में बताया, तो नागराज बहुत खुश हुआ।

चिम्पा के ठहरने का खूब बढ़िया इंतजाम किया गया। रोज नए-नए पकवान बनते। सोने-चांदी के प्यालों में दूध आता। किसी तरह का कोई कष्ट न था। आराम करते-करते चिम्पा तंग आ गया। एक दिन उसी नाग को उसने अपनी परेशानी बताई, जो उसे यहां लाया था। नाग बोला —"काम तो यहां कोई है ही नहीं। हां, तुम चाहो, तो नागराज की मालिश कर सकते हो। नागों में से कोई यह काम नहीं कर सकता, इसलिए नागराज परेशान रहता है।"

चिम्पा को भला क्या ऐतराज हो सकता था ? उसने अगले दिन से ही नागराज की मालिश का काम संभाल लिया। नागराज को अच्छा तो लगा, पर वह संतुष्ट नहीं था। चिम्पा पूरा जोर लगाकर मालिश करता, तो भी नागराज की थकान नहीं मिटती थी।

एक दिन चिम्पा ने परेशान होकर अपने मित्र से कहा। उसने सलाह दी —'इतने विशालकाय नागराज की थकान एक ही तरह से मिट सकती है। उस पर खड़े होकर कूदो।'

चिम्पा को यह विचित्र लगा। कुछ डर भी था। पर उसने वैसा ही करना शुरू किया। नागराज को चिम्पा का मालिश का यह तरीका खूब पसंद आया। उस दिन से चिम्पा की और अधिक खातिरदारी होने

लगी। नाग भी अब चिम्पा से खूब स्नेह करने लगे। लेकिन चिम्पा को अब धरती की याद सताती। मानकी के बारे में सोचकर वह उदास हो जाता। एक दिन हिम्मत करके उसने नागराज से कहा —"अब मुझे इजाजत दीजिए। मैं धरती पर जाना चाहता हूं।" लेकिन नागराज टाल गया।

चिम्पा दुखी होकर अपने मित्र नाग के पास गया। बोला —"क्या करूं ? नागराज मुझे वापस ही नहीं जाने देता।"

नाग ने उसके कान में कुछ कहा। फिर बोला —"जरा होशियारी से काम लो।"

अगले दिन चिम्पा ने नागराज से कहा —"आप मुझे धरती पर जाने की इजाजत दीजिए। मैं वहां जाकर लोगों को बताऊंगा, नागलोक कितना सुंदर है। धरती के लोगों को यहां के बारे में कुछ पता ही नहीं है।"

नागराज को यह बात पसंद आई। बोला —"ठीक है। यहां से हीरे, मोती, रत्न जो भी लेना चाहो, ले लो। धरती के लोगों को ये कीमती उपहार दिखाना।"

लेकिन चिम्पा बोला —"ये उपहार रहने दीजिए। हो सके तो मुझे..."

"हां-हां, बोलो, क्या चाहिए तुम्हें ?"—नागराज ने पूछा।

चिम्पा बोला —"आपके महल के पिछवाड़े में एक कोठरी है, जिसमें खूब राख भरी है। बस, एक चुटकी भर राख मुझे दिलवा दें।"

—"नहीं, नहीं, वह तुम्हें नहीं मिल सकती। इसके बदले हीरे, मोती, रत्न जो भी कहो..."

"दे सकें तो मुझे चुटकी भर राख ही दीजिए, और कुछ नहीं।"— चिम्पा ने विनम्रता से कहा।

नागराज ने बहुत समझाया, लेकिन चिम्पा टस से मस नहीं हुआ। उसे उसके मित्र नाग ने पहले ही बता दिया था कि नागराज जब भी अपनी केंचुली उतारता है, उसे जलाकर राख पिछवाड़े की कोठरी में रखवा देता है। वह चमत्कारी राख थी। नाग ने यह भी बता दिया था — 'भूल से भी यहां के हीरे, मोती या कीमती रत्न मत ले जाना। नहीं तो नागराज अपने जादू के जोर से तुम्हें कभी भी वापस बुला लेगा।'

चिम्पा ने अपने मित्र नाग की ये बातें गांठ बांध ली थीं। इसलिए नागराज को आखिर हार माननी पड़ी। उसने कांच की डिबिया में चुटकी भर राख रखकर चिम्पा को दे दी।

नागराज के आदेश पर अनेक नाग चिम्पा को धरती तक छोड़ने आए। चिम्पा तेज कदमों से अपने घर की ओर चल पड़ा।

झोंपड़ी में मानकी दिखाई पड़ी। चिम्पा को देख, खीजकर बोली —"कहां चले गए थे तुम ?"

चिम्पा बोला —"धन-दौलत की तलाश में गया था। तुम दुखी थीं न इस झोंपड़ी में ?"

झोंपड़ी के सामने अनार का एक पेड़ था, जो वर्षों से सूखा था। चिम्पा ने उसकी जड़ों के पास गड्ढा खोदकर वह राख दबा दी। आश्चर्य ! अगले ही दिन वह पेड़ हरा-भरा हो गया।

कुछ दिन बाद उसमें एक अनार लगा। चिम्पा उसे तोड़कर झोंपड़ी में ले आया। मानकी से बोला —"देखो, कितना अद्भुत है यह !" चिम्पा ने अनार को जोर से धरती पर पटका। देखते ही देखते झोंपड़ी में लाल रत्न बिखर गए। देखकर मानकी की आंखें चौंधिया गईं। अब वह समझी, सचमुच अकूत दौलत उनके हाथ लग गई थी।

रोज उस पेड़ पर एक अनार लगता, और उसमें दानों की जगह चम-चम चमकते लाल रत्न भरे होते।

कुछ ही दिनों में चिम्पा की गिनती राज्य के सबसे धनी लोगों में होने लगी। जहां झोंपड़ी थी, वहां सतखंडा महल बन गया। जीवन में कोई दुःख न रहा। अलबत्ता अब भी वह कभी-कभी मानकी से शिकायत करता —"तुमने तो शादी होते ही मुझे घर से बाहर भेज दिया था।"

मानकी हंस पड़ती —"यह सब न होता, तो आज भी हम घास-फूस की झोंपड़ी में रह रहे होते।"

और चिम्पा मुसकराने लगता। ●

काला घोड़ा

—लीलावती वर्मा

एक राजा था। उसकी घुड़साल में एक से बढ़कर एक घोड़े थे। उनमें काले रंग का भी एक घोड़ा था। राजा को उस घोड़े से बहुत लगाव था। वह जहां भी जाता, उसी पर सवार होकर। घोड़ा भी राजा को बहुत मानता था। बस, राजा को देखते ही जोर से हिनहिनाने लगता। घुड़साल के दूसरे घोड़े इस बात से नाराज रहते थे। एक दिन सबने मिलकर रात में उस घोड़े को घुड़साल से निकाल दिया। सुबह पहरेदारों ने घुड़साल खोली, तो काला घोड़ा गायब था। जब इस बात का पता राजा को चला, तो रक्षकों में हलचल मच गई।

अपने प्यारे घोड़े के गायब होने से राजा परेशान हो गया। उसने चारों तरफ आदमियों को भेजा। पुरस्कार देने की भी घोषणा करवा दी, लेकिन घोड़ा न मिला। वह घोड़ा घूमते-घूमते जंगल में चला गया। वहां वह रास्ता भूल गया। भूखा-प्यासा जंगल में भटकने लगा।

उसे महल की याद आ रही थी, पर करता क्या। जितना भी वह निकलना चाहता, जंगल का रास्ता उतना ही उसे उलझा देता। हारकर वह एक दिशा में बढ़ने लगा। कुछ देर चलने के बाद उसे स्वच्छ और साफ जल का सोता दिखाई दिया। जंगल में घूमते-घूमते उसे प्यास लग गई थी। उसने सोते के जल से अपनी प्यास बुझाई। पास ही उगी हरी-हरी दूब खाकर अपना पेट भरा।

खा-पीकर वह थक गया। उसे खड़े-खड़े झपकी आई। सपने में उसने देखा, जिस पेड़ के नीचे वह सोया है, उस पर कुछ पक्षी बैठे आपस में बात कर रहे हैं। उनमें से एक ने कहा —"इस पेड़ के ठीक दस कदम आगे दाहिनी ओर जो पेड़ है, उसका फल खाने वाला सभी दिशाओं का जानकार हो जाता है। उसका फल खाने से अद्भुत ताकत आ जाती है।"

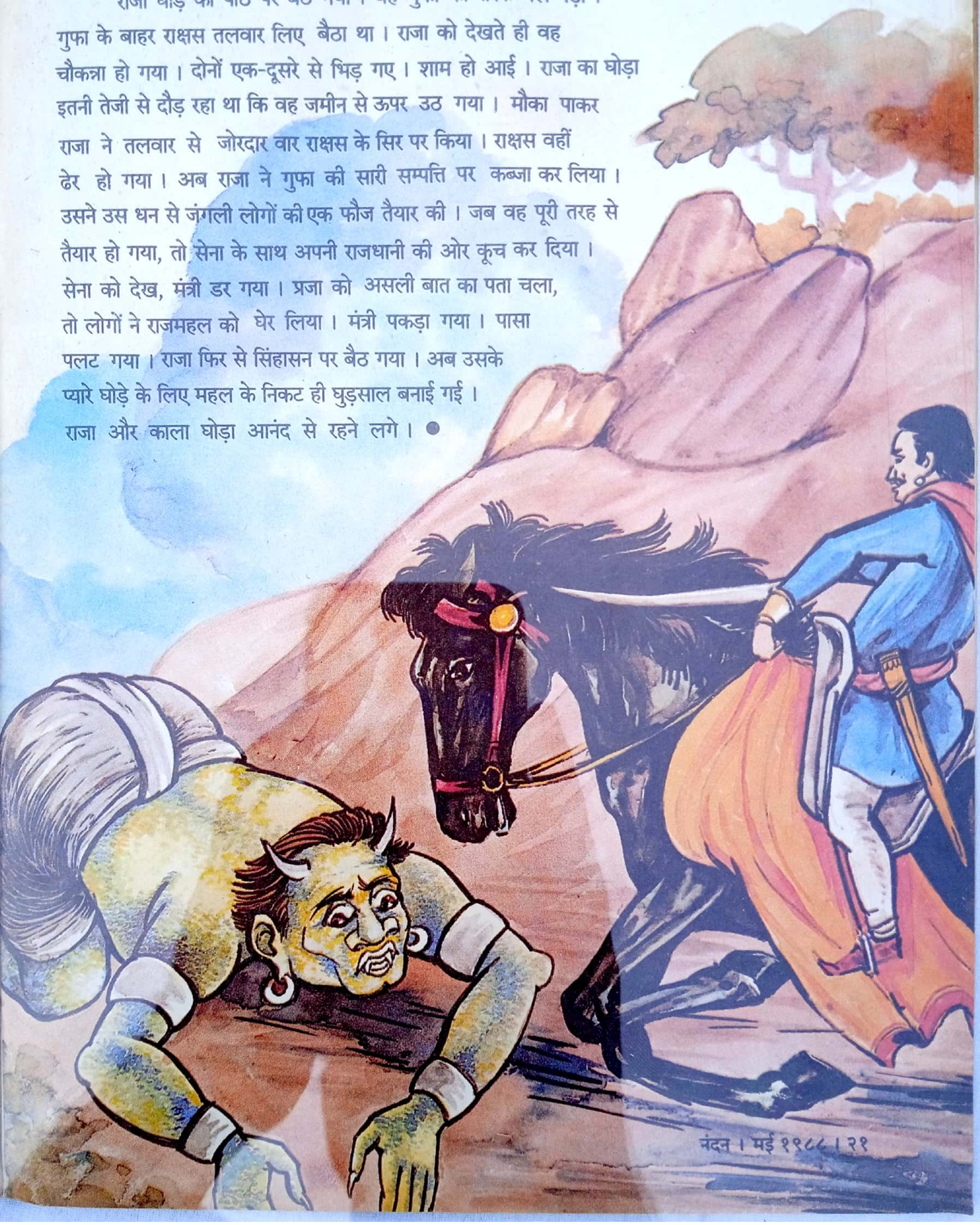
घोड़े की नींद खुल गई। उसने देखा, सचमुच उस पेड़ के ऊपर कुछ पक्षी बैठे आपस में बात कर रहे हैं। उसे लगा, सपने की बातें सच हैं। पक्षी का बताया पेड़ भी उसे मिल गया। घोड़े ने पेड़ के नीचे गिरे कुछ फल खा लिए। खाते ही उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया। उसे दिशाएं तो ज्ञात हो ही गईं, चाल भी बहुत तेज हो गई थी। अब घोड़े को महल का रास्ता भी साफ समझ में आने लगा था। वह महल की ओर लौट पड़ा।

घोड़ा खो जाने की चिंता से राजा उदास हो गया था। उसका मन किसी काम में न लगता था। मौका देखकर मंत्री ने राजा को गद्दी से हटा दिया। खुद राजा बन बैठा। अपने विश्वासपात्र सेवकों की मदद से राजा को उसने राज्य के बाहर निकलवा दिया। यह काम चुपके-चुपके हुआ। बाद में घोषित कर दिया —'राजा किसी से मिलेंगे नहीं। वह अस्वस्थ हैं। इस बीच मंत्री जी ही सारे काम देखा करेंगे।'

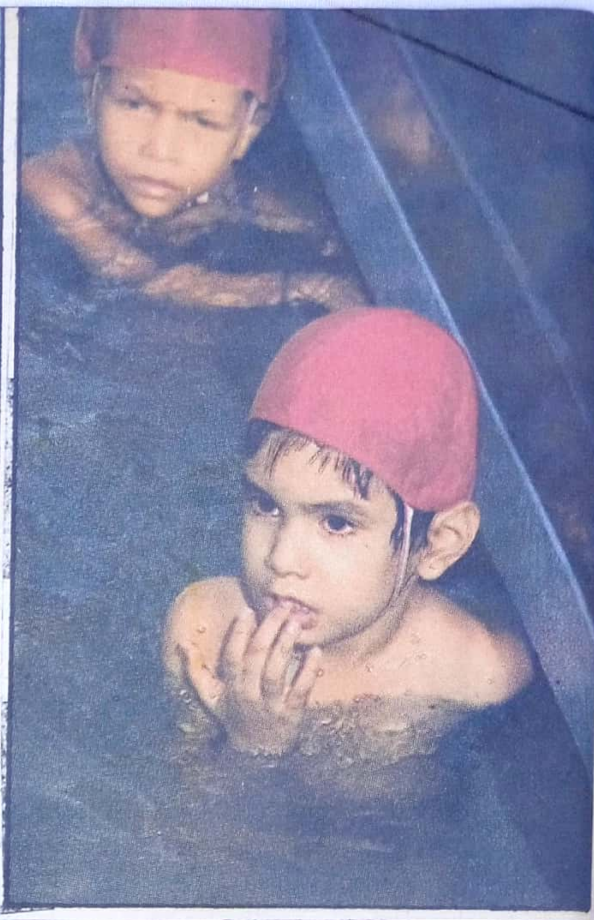
इधर राजा अपने भाग्य को कोसता, जंगल में भटकने लगा। वहां उसने एक कुटी देखी। कुछ ऋषि बैठे यज्ञ कर रहे थे। उन्होंने राजा को मीठे फल खाने के लिए दिए। राजा ने ऋषियों को अपनी विपत्ति का कारण बताया। ऋषियों ने राजा से कहा —"जंगल में पूर्व दिशा में एक भयानक राक्षस रहता है। उसकी गुफा में पर्याप्त धन है। यदि तुम उस धन को ले सको, तो सेना संगठित कर, अपना खोया राज्य पा सकोगे। मगर उस राक्षस को तलवार के एक ही वार से मारा जा सकता है। अगर बच गया, तो फिर वह शत्रु के काबू में नहीं आ सकता।"

ऋषियों ने राजा को आशीर्वाद दिया। वह चल पड़ा। उसका घोड़ा भी इसी दिशा में चला आ रहा था। कुछ आगे आने पर घोड़े ने राजा को देख लिया। वह दौड़कर राजा के पास पहुंचा। राजा उसे देखते ही उछल पड़ा। वह उसके गले से लगकर फूट-फूटकर रोने लगा। राजा ने रोते-रोते अपनी पूरी कहानी उसे सुनाई। घोड़ा भला क्या जवाब देता? उसने हिनहिनाकर राजा की बात सुनी।

राजा घोड़े की पीठ पर बैठ गया। वह गुफा की तरफ चल पड़ा। गुफा के बाहर राक्षस तलवार लिए बैठा था। राजा को देखते ही वह चौकन्ना हो गया। दोनों एक-दूसरे से भिड़ गए। शाम हो आई। राजा का घोड़ा इतनी तेजी से दौड़ रहा था कि वह जमीन से ऊपर उठ गया। मौका पाकर राजा ने तलवार से जोरदार वार राक्षस के सिर पर किया। राक्षस वहीं ढेर हो गया। अब राजा ने गुफा की सारी सम्पत्ति पर कब्जा कर लिया। उसने उस धन से जंगली लोगों की एक फौज तैयार की। जब वह पूरी तरह से तैयार हो गया, तो सेना के साथ अपनी राजधानी की ओर कूच कर दिया। सेना को देख, मंत्री डर गया। प्रजा को असली बात का पता चला, तो लोगों ने राजमहल को घेर लिया। मंत्री पकड़ा गया। पासा पलट गया। राजा फिर से सिंहासन पर बैठ गया। अब उसके प्यारे घोड़े के लिए महल के निकट ही घुड़साल बनाई गई। राजा और काला घोड़ा आनंद से रहने लगे। ●







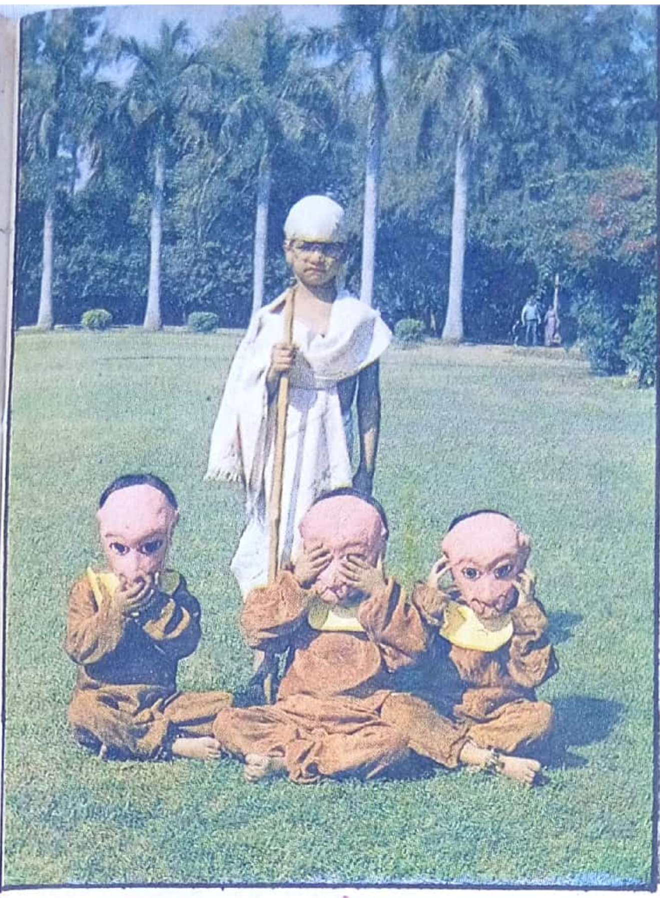
बाहर धूप अंदर छाया
शतरंज का खेल सबको भाया।

ठंडा ठंडा पानी, आओ
डुबकी मारो, गोते खाओ।

बंद हुए स्कूल लगे बस्ता बेगाना

हैलीकॉप्टर : सैर करें हवाओं पर







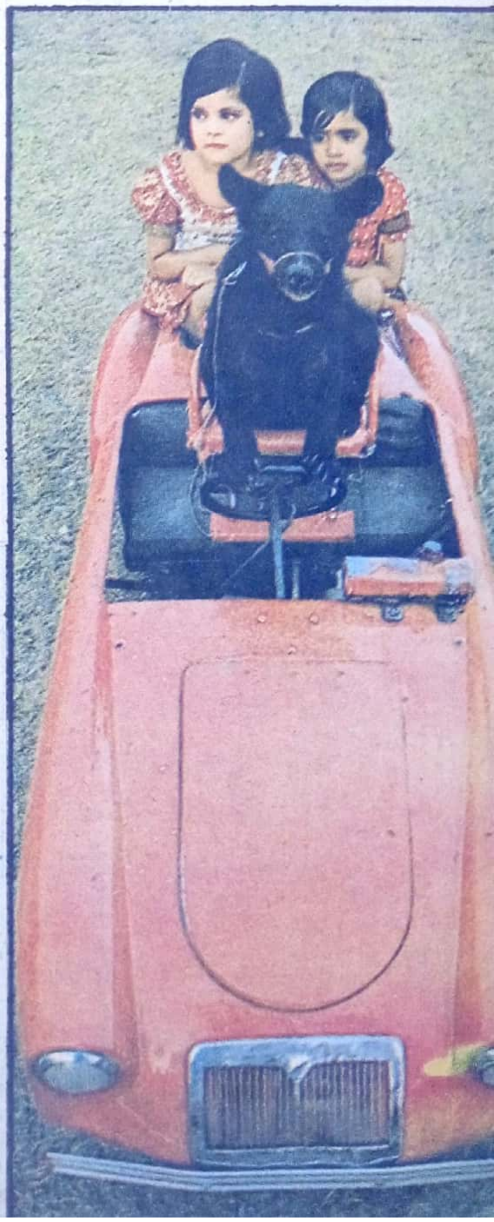
धूप निकलने से पहले ही
कसरत करें हम सभी।

तुम बनो साधु, हम बनें बंदर
नाटक खेलें हरी घास पर।

इससे अच्छा हो क्या अवसर
पिकनिक रोज कराए मोटर।

चित्र : राजेन्द्रकुमार वधवा, जगमोहन,
एन. के. सरीन, देबव्रत बनर्जी

सुबह शाम का प्यारा मौसम
मिलकर खेलें खेल सभी हम।







खो गई

—इथेल पेड्ले

आस्ट्रेलिया का एक जंगली इलाका। वहां एक झोंपड़ी में नन्ही डौट अपने माता-पिता के साथ रहती थी। आसपास घना जंगल था। दिन में डौट के पिता काम पर चले जाते। वह घर के बाहर झाड़ियों में खेलती। बीच-बीच में मां कहती—"डौट, घर से दूर मत जाना; नहीं तो भटक जाओगी।"

एक दिन ऐसा ही हुआ। डौट घर से थोड़ी दूर फूल चुन रही थी, तभी एक खरगोश झाड़ी से निकलकर भागा। डौट भी उसके पीछे दौड़ी। वह खरगोश न जाने कहां गायब हो गया! डौट ने अपने को अनजान जगह में पाया, तो एकदम घबरा गई। चारों ओर घनी झाड़ियां और ऊंचे-ऊंचे पेड़। वह जंगल में भटक गई थी। घबराकर डौट एक तरफ बैठ गई। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

तभी उसने एक मादा कंगारू को अपने पास खड़े देखा। डौट घबरा उठी, पर कंगारू ने उससे कुछ नहीं

कहा । दया भरी आंखों से उस भटकी हुई लड़की को देखती रही । एकाएक मादा कंगारू झाड़ियों के पीछे चली गई । कुछ देर बाद कई टहनियां लेकर लौटी । टहनियों पर बेर लगे हुए थे । कंगारू ने बेर डौट के सामने रख दिए । डौट को भूख लग रही थी । उसने बेर खा लिए । मादा कंगारू ने कहा—''लड़की, तुम कहां रहती हो ? घर से इतनी दूर कैसे आ गईं ? तुम्हारी तरह मेरा भी एक बच्चा खो गया था ।''

डौट ने कंगारू की बात समझ ली । उसने कहा—''मैं खरगोश के पीछे भटककर यहां आ गई । न जाने अब क्या होगा ?''

मादा कंगारू ने कहा—''घबराओ मत । हम जंगल के जानवर मिलकर तुम्हारी मदद करेंगे । तुम्हारे घर पहुंचा देंगे । तब तक तुम मेरे साथ रहो ।''

डौट को लगा, मादा कंगारू ठीक कह रही है । विचित्र बेर खाने के बाद उसकी घबराहट भी कम हो गई थी । मादा कंगारू ने डौट से कहा—''डौट, तुम छोटी हो । तुम्हारे पैर कोमल हैं । जंगल की धरती ऊबड़-खाबड़ व कांटों भरी है । तुम पैदल नहीं चल सकोगी । तुम मेरे पेट पर लगी थैली में बैठ जाओ । फिर तुम्हारी यात्रा आसान हो जाएगी ।''

डौट कंगारू के पेट पर बनी थैली में बैठ गई । कंगारू उछल-उछलकर चलने लगी ।

कंगारू के पेट की थैली में बैठे-बैठे डौट ने काफी दूर की यात्रा कर ली । उसने कई मैदान पार किए, कई टीले लांघ लिए, कई नाले पार कर गई । हर तरफ घने पेड़ और झाड़ियां । आकाश में उड़ते तरह-तरह के परिंदे । विचित्र थी वन की दुनिया ।

रास्ते में कंगारू ने उसे बताया कि सब जंगली जानवर मनुष्य नामक जीव से कितना डरते हैं । दिन और रात कभी चैन नहीं मिलता । यह सुनकर डौट अपने पिता के बारे में सोचने लगी । वह भी बंदूक से शिकार किया करते थे । डौट ने सोचा, अगर वह पिता से मिल सकी, तो उन्हें कभी शिकार नहीं करने देगी ।

कुछ देर बाद कंगारू को एक चिड़िया मिली । कंगारू ने उसे डौट के बारे में बताया, तो चिड़िया ने कहा—''जंगल बहुत लम्बा-चौड़ा है । एक बार रास्ता भूल जाओ, तो फिर बहुत मुश्किल होती है । पास में ही गुफा है । आज तुम इस नन्ही मेहमान को लेकर उसमें आराम करो । मैं इसके बारे में अपने दूसरे साथियों से कहूंगी ।'' डौट ने वह रात कंगारू के साथ गुफा में बिताई । कंगारू के मित्र पशुओं ने डौट के लिए मीठे-मीठे फल लाकर दिए । नरम पत्तों के बिछौने पर लेटी-लेटी डौट घर की बात सोचकर उदास होती रही । न जाने कब नींद आ गई ।

एकाएक वह जाग उठी । बुरी तरह घबरा गई । दिन निकल आया था । डौट ने देखा, एक सांप उसकी छाती पर बैठा हुआ था । डौट की घिग्घी बंध गई । उस समय मादा कंगारू वहां नहीं थी । डौट किसी पत्थर की प्रतिमा की तरह लेटी रही । तभी उसे कोकाबुरा पक्षी की आवाज सुनाई दी—''डौट, तुम घबराना मत । मैंने सांप को देख लिया है । मादा कंगारू थोड़ी देर के लिए बाहर गई है । उसने मुझे तुम्हारा ध्यान रखने को कहा था ।'' कोकाबुरा उड़ता हुआ अंदर आया और उसने सांप को अपनी चोंच में पकड़कर उठा लिया । फिर अपने पंजों में दबाकर मार डाला । तब तक मादा कंगारू भी लौट आई । डौट का शरीर अभी तक कांप रहा था । वह सोच रही थी—'अगर सांप मुझे काट लेता तो. . . '



इथेल पेड्ले— इंग्लैंड में जन्म लिया, पर उन्नीसवीं सदी के अंत में आस्ट्रेलिया जाकर बस गईं। वहीं उन्होंने बच्चों के लिए साहित्य लिखा। उनकी 'डौट एंड द कंगारू' पुस्तक केवल आस्ट्रेलिया में ही नहीं, पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हुई। यहां हम उसी की संक्षिप्त कथा प्रकाशित कर रहे हैं। —सं.

मादा कंगारू डौट को लिए हुए जंगल में घूम रही थी। वह हर पशु-पक्षी को डौट के बारे में बताती। कहती—''इस बच्ची की मदद करो। इसे इसके मां-बाप से मिलवा दो।''

एक रात डौट और मादा कंगारू जंगल में सो रहे थे, तभी एक चिड़िया ने खबर दी—''कंगारू सावधान, आदिवासी शिकारी आ रहे हैं। सावधान रहो!''

मादा कंगारू एकदम डरी। उसने डौट से कहा—''हमें तुरंत चल देना चाहिए। मैंने तुम्हें शिकारियों के बारे में बताया था न! अब वे आ गए हैं, तो जंगल में खूब तूफान मचेगा।''

''यह बहुत बुरी बात है।''—डौट ने कहा। मादा कंगारू ने जल्दी-जल्दी चलना शुरू कर दिया। डौट उसके पेट की थैली में आराम से बैठी थी।

जंगल में उन्होंने ढोल बजाने की आवाज सुनी। कंगारू ने झाड़ियों के पीछे से देखा, बहुत सारे आदिवासी आग के चारों ओर बैठे थे। वे ढोल बजा-बजाकर उछल-कूद कर रहे थे। उनके शिकारी कुत्ते भयानक आवाज में भौंक रहे थे।

एकाएक शिकारी कुत्तों ने कंगारू की गंध सूंघ ली। वे गुर्राते हुए दौड़े। कंगारू भागी। लेकिन डौट के बोझ के कारण उसकी चाल धीमी थी। वह हांफ रही थी। डौट को समझते देर न लगी। उसने कंगारू से कहा—''मुझे यहीं छोड़, अपनी जान बचाओ। नहीं तो शिकारी कुत्ते तुम्हें पकड़ लेंगे।''

''कभी नहीं। मैं तुम्हें अकेली नहीं छोड़ सकती। चाहे जो हो जाए।'' अपने प्रति कंगारू का ऐसा स्नेह देख, डौट बुदबुदा उठी—''कितने बुरे हैं ये शिकारी।''

कंगारू की गति धीमी थी। शिकारी और उनके कुत्ते तेजी से बढ़े आ रहे थे। उसे लग रहा था, अब कंगारू और वह बच नहीं सकेंगे।

शिकारियों से बचती हुई मादा कंगारू एक ऊंचे टीले पर जा पहुंची। दूसरी तरफ खाई थी। अब बचने का रास्ता नहीं था। तभी एक शिकारी कुत्ता तेजी से कंगारू की तरफ दौड़ा। कंगारू ने डौट को एक तरफ उतार दिया। वह एक चट्टान का सहारा लेकर खड़ी हो गई। कुत्ता उछला, पर कंगारू ने उसे अपने पंजों से घायल कर दिया। वह फिर से डौट को लेकर ढलान पर उतरने लगी। आगे एक चौड़ी खाई थी। कंगारू डौट को लिए-लिए हवा में उछली और खाई के दूसरी ओर कांटों और चट्टानों पर जा गिरी।

डौट को लगा, संकट टल गया है, पर कंगारू ने कहा—''शिकारी दूसरी तरफ से आ रहे हैं। अब तो तुम्हीं उन्हें भगा सकती हो।''

''वह कैसे?''—डौट ने अचरज से पूछा।

कंगारू ने कहा—''तुम जोर-जोर से चीखो, हाथ-पैर हिलाओ। फिर देखो, क्या होता है? आदिवासी भूत-प्रेत से बहुत डरते हैं। वे यहां किसी बच्चे के होने की कल्पना नहीं कर सकते। इसलिए तुम्हें भूत-प्रेत समझकर डर जाएंगे''

डौट ने ऐसा ही किया। वह जोर से चीखी। फिर खिलखिलाई और हवा में उछलने लगी। वह बिना रुके यह क्रिया दोहराती रही। दूसरी तरफ से आते आदिवासियों ने डौट की आवाज सुनी। उसे उछलते हुए देखा, तो एकदम डर गए। वे भूत-भूत चिल्लाते हुए भाग खड़े हुए।

जंगल में जल्दी-ज़ल्दी चलने और खाई पार करते हुए गिर जाने से मादा कंगारू बुरी तरह घायल हो गई थी। डौट को उसकी हालत देख, दुःख हो रहा था। वह समझ नहीं पा रही कि क्या किया जाए?

उसी समय दो पक्षी वहां आए। उन्होंने डौट से कहा—''जंगल में ऐसी जड़ी-बूटियां हैं, जिन्हें लगाने से आराम आ जाएगा। आओ, हमारे साथ। डौट ने परिंदों की बताई जगह पर लगी झाड़ी से पत्तियां लीं। उन्हें कंगारू के मुंह में डाल दिया। पत्तियों के प्रभाव

से कंगारू की हालत ठीक हो गई ।

अगले दिन डौट एक मैदान में सो रही थी । मादा कंगारू उसके लिए फल लेने गई हुई थी । तभी कुछ आवाजें सुन, डौट की नींद टूट गई । वह हड़बड़ाकर उठ बैठी । मैदान में हजारों पशु-पक्षी बैठे थे । वे जोर-जोर से बोल रहे थे । कह रहे थे—''आज हमें फैसला करना ही होगा । हम इसे सजा देंगे ।''

डौट को पशु-पक्षियों की सारी बात समझ में आ रही थी । वह सोचने लगी—'ऐसा विचित्र दृश्य तो कभी नहीं देखा । इतने सारे पक्षी भला किसे सजा देने के लिए इकट्ठे हुए हैं ?

तभी एक पेलिकन पक्षी डौट के पास आया । उसने कहा—''लड़की, हमें मनुष्यों ने बहुत सताया है । बिना बात हमारे बेगुनाह साथियों को मारा है । तुम मनुष्य जाति की हो और आज न जाने कैसे हमारे बीच आ पहुंची हो । मनुष्य के अपराधों की सजा हम तुम्हें देंगे ।''

डौट को पेलिकन की बात से कुछ डर लगा, क्योंकि मादा कंगारू वहां नहीं थी । पक्षियों ने आपस में बात करके मुर्गे को जज बनाया । अदालत की कार्रवाई शुरू हुई । एक-एक पशु-पक्षी आता और मनुष्य के अत्याचारों की कहानी सुनाता । सब कहते—''इस लड़की को कड़ी सजा देनी चाहिए ।''

तभी कोकाबुरा पक्षी ने कहा—''शायद आपको पता नहीं, मादा कंगारू इस लड़की की दोस्त है । वह इसके खिलाफ कभी गवाही नहीं देगी ।'' उसी समय मादा कंगारू वहां आ गई । उसने डौट को अपने पेट के थैले में बैठाया और तेजी से चल दी । अदालत लगाए बैठे पशु-पक्षी शोर मचाते रह गए । रास्ते में कंगारू ने कहा—''डौट, कितनी गलत बात है । जिसने शिकार किया है, उसे सजा मिलनी चाहिए । पर तुम्हारा क्या दोष था, जो अदालत जोड़कर बैठ गए । अगर मैं न पहुंचती, तो वे तुम्हें बहुत परेशान करते ।'' फिर उसने डौट को खुशखबरी सुनाई—''मेरे दोस्तों ने तुम्हारे घर का पता लगा लिया है । हम तुम्हारे घर चल रहे हैं ।''

''क्या सच ?''—डौट तो मारे खुशी के रो ही पड़ी ।

''हां, एकदम सच !''—कंगारू ने कहा ।

एक शाम कंगारू डौट को लेकर उसके घर के पास जा पहुंची । और एक झाड़ी में छिप गई । झाड़ी में कंगारू को देखकर डौट के पिता ने उस पर गोली चलानी चाही, पर मादा कंगारू उछलकर परे चली गई । तभी डौट के पिता ने अपनी बेटी को देखा, तो दौड़कर उसे गले से लगा लिया । डौट की मां तो बेटी को गले से लगाकर बहुत रोई ।

डौट ने बताया कि किस तरह कंगारू ने उसे खतरों से बचा, यहां तक पहुंचाया । डौट के पिता कंगारू से बहुत-कुछ पूछना चाहते थे, पर वे कंगारू से कैसे बात करते, क्योंकि उन्होंने तो डौट की तरह विचित्र बेर खाए नहीं थे ।

बाद में डौट के कहने पर उसके पिता ने अपने घर के पास एक झील बनवा दी । वहां यह लिखकर लगा दिया—'यहां किसी पशु-पक्षी का शिकार नहीं किया जाएगा ।' डौट के सब मित्र पशु-पक्षी उससे मिलने आते । झील का पानी पीते और निर्भय होकर घूमते । ●





कैसे-कैसे बीज

— कर्मसिंह पठानिया

सोनपुर का राज्य सचमुच ही सोना उगलता था। बड़ा समृद्ध और खुशहाल इलाका था। वहां का राजा पद्मदेव अब बूढ़ा हो चुका था। उसके दो बेटे थे— बड़का राजकुमार और छुटका राजकुमार। राज्य का सारा कार्यभार उन दोनों के ही कंधों पर था। बड़का बड़ा निकम्मा तथा आलसी था। वह काम को बिल्कुल हाथ नहीं लगाता था। अपना सारा काम नौकर-चाकरों से करवाता था।

उधर छुटका उसके बिल्कुल विपरीत था। वह अपना सारा काम अपने हाथों से करता था। नौकरों की वह रत्ती भर भी सहायता नहीं लेता था। इसी कारण बड़का उसे अकसर चिढ़ाता— "तुम तो व्यर्थ ही राज घराने में जन्मे। तुम्हें तो किसी मजदूर के घर पैदा होना चाहिए था। राज घराने के होकर भी हाथ से काम करते हो।"

"अपने हाथ से काम करना बुरा नहीं होता भैया! भगवान ने हमें दो हाथ इसीलिए दिए हैं।"— छुटका कहता।

"देख, हमारे पास कितनी धन-दौलत है। नौकर-चकार हैं। भला, अपने हाथों से काम करने की हमें क्या आवश्यकता है!"— बड़का उसे समझाता।

"ठीक है, आज हमारे पास राज्य है। यदि कल हमारे पास न हो तो?"— छुटके ने उदाहरण दिया।

"ऐसी बुरी बात क्यों सोचते हो?"— बड़का बोला। मगर छुटका अपनी बात पर अड़ा रहा।

उन्हीं दिनों राज्य में षड्यंत्र हुआ। सेनापति ने सारा राज्य हथिया लिया। राज्य परिवार को राज्य से बाहर धकेल दिया। फिर क्या था। बेचारे बड़का और छुटका अपने बूढ़े मां-बाप के साथ दर-दर भटकने लगे। जो लोग उनके आगे सिर झुकाकर चलते थे, वे ही अब उन्हें देखकर मुंह फेर लेते थे।

दर-दर भटकता हुआ राजपरिवार सोन नदी के पार पहुंच गया। वहां बहुत-सी भूमि पड़ी थी। भूमि पर किसी का अधिकार नहीं था। छुटके ने सोचा— 'क्यों न हम इस भूमि को खेती योग्य बना लें?' परंतु जब उसने अपने मन की बात बड़के से कही, तो वह बोला— "अपना राज्य खोकर क्या हम अपने हाथों से हल चलाएंगे? यह तो मुझसे न होगा।"

"ऐसा मत सोचो।"— छुटका बोला— "अब हमें अपने हाथों से काम करना ही होगा। अब हमारे हाथ ही हमारी सम्पत्ति है। नहीं तो हम भूखे मर जाएंगे। दुर्दिन काटने का अब यही एक उपाय है।"

अब बड़का क्या बहाना बनाता। उसे छुटके की बात माननी ही पड़ी। दोनों भाई उस भूमि को सुधारने में जुट गए। उन्होंने सारा जंगल काट दिया। फिर उस भूमि के छोटे-छोटे खेत बना डाले।

अब समस्या थी कि खेत में क्या बोएं? न तो उनके पास कोई बीज था और न ही उन्हें पता था कि किस मौसम में कौन-सा बीज बोया जाता है। तभी किसी ने उन्हें बताया कि यहां से दस मील दूर नीलमपुर गांव है। वहां एक बहुत ही वृद्ध बाबा रहते हैं। उनके पास कई प्रकार के बीज हैं। वह यह भी बता सकते हैं कि इस भूमि में कौन-सा बीज बोना चाहिए? बाबा हैं बड़े गुस्से वाले। वह किसी की बात सुनते नहीं हैं। यदि तुम बाबा को प्रसन्न कर लो, तो तुम्हारी समस्या हल हो सकती है।

फिर क्या था! दोनों भाई भागे-भागे बाबा के पास गए। उन्होंने अपनी समस्या बाबा को बताई, तो बाबा

बोले— "मेरे पास हर प्रकार के बीज हैं।"

"कौन-कौन-से बाबा ?"–बड़के ने पूछा।

"राज्यों के बीज, रियासतों के बीज, जागीरों के बीज, महलों के बीज, सोने के बीज, चांदी के बीज और अनाज के बीज। बोलो, तुम्हें कौन से चाहिए ?"— बाबा ने पूछा।

दोनों भाई आपस में विचार करने लगे— 'अनाज के बीज उगाकर हम क्या करेंगे ? अनाज तो हर कोई उगा लेता है। हम राजकुमार हैं। क्यों न हम बाबा से रियासत के बीज मांगे।' बड़का बोला— "बाबा, हमारे खेतों में रियासत के बीज उगा दो, तो अच्छा। क्या बीज उग जाएंगे ?"

"क्यों नहीं ?-बाबा बोले— "परंतु ये बीज मैं तुम्हें दूंगा नहीं।"

"क्यों बाबा ?"— बड़के ने पूछा।

"यदि रियासत उग आई, तो तुम उसे संभाल नहीं पाओगे। पहले भी तुम एक रियासत खो चुके हो। क्या यह सच नहीं है ?"— बाबा ने कड़कती आवाज में पूछा।

"सच है बाबा !"— दोनों भाई बोल उठे— "यह आपको कैसे पता ?"

"मेरा नाम सर्वज्ञाता है। इसीलिए मुझे सब ज्ञात है।"— बाबा ने कहा।

"हम आपको बहुत मानते हैं बाबा ! आप हमें ये बीज दे दें। यदि हमारे खेतों में रियासत उग आई, तो हम उसे कभी नहीं खोएंगे। हम वचन देते हैं।"— बड़के ने कहा।

"ठीक है।' पहले हम तुम्हारे खेत देखेंगे। उसके पश्चात ही बताएंगे कि तुम्हें बीज देने चाहिए या नहीं ?"— बाबा ने कहा।

सबसे पहले बाबा ने एक-एक करके उनके खेत देखे। खेतों में खूब अच्छी तरह हल चलाया गया था। बाबा बोले— "हां, यहां रियासत के बीज उग सकते हैं। हम तुम्हें बीज अवश्य देंगे। पर एक शर्त पर।"

"कौन-सी शर्त ?"— दोनों भाई भौंचक्के हो उठे।

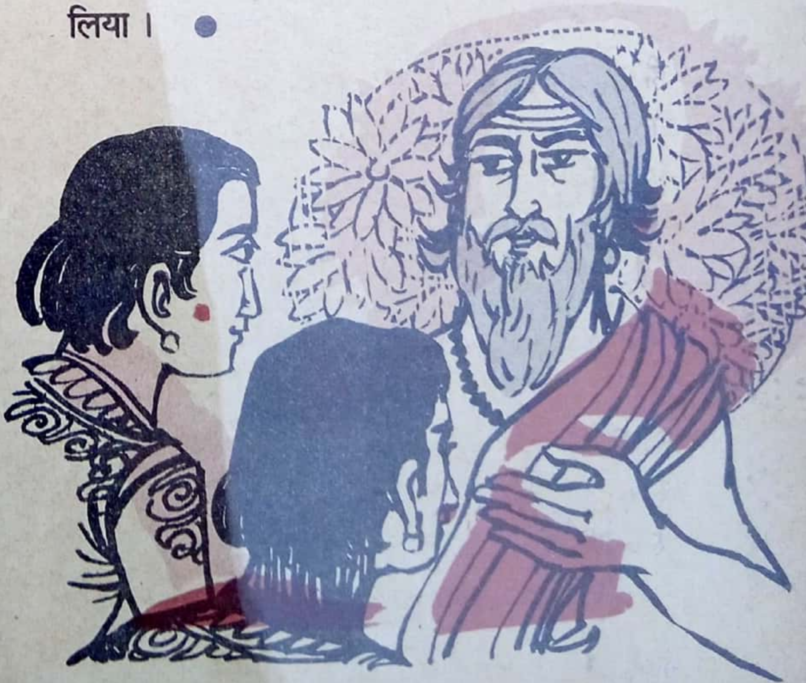
बाबा गम्भीर मुद्रा में बोले— "तुम दोनों भाइयों को रात-दिन खेतों में ही रहना पड़ेगा। नहीं तो कोई बीज चुराकर ले जाएगा।"

"ठीक है। हम रह लेंगे।"— दोनों ने वायदा किया।

जो बीज बाबा ने दिए, वे खूब उगे और कुछ ही दिनों में सारे खेत लहलहा उठे। परंतु जब फसल पकी, तो दोनों भाई निराश हो उठे। वे तो साधारण अन्न के ही बीज थे। दोनों सोचने लगे— 'बाबा ने धोखा दिया।' वे दौड़े-दौड़े बाबा के पास गए। बाबा क्रोधित होकर बोले— "धोखा करने को हम ही रह गए थे। भला, अन्न का हम क्या करेंगे ? हमें तो रियासत चाहिए।"

बाबा हंसकर बोले— "तुम्हारे साथ कोई धोखा नहीं हुआ है। यही अन्न रियासत के बीज हैं। पहले फसल को काटो। फिर उसे इकट्ठा करो। कुछ अन्न अपने गुजारे के लिए रख लो। शेष को बोरियों में भर कर मंडी में बेच आओ। जो धन प्राप्त हो, उससे सेना इकट्ठी कर, अपने खोए हुए राज्य पर हमला कर दो। तुम्हें, तुम्हारा खोया हुआ राज्य अवश्य मिल जाएगा। परिश्रमी लोगों के हाथ ही रियासत होती है बेटे !"

उन दोनों भाइयों ने ऐसा ही किया। सचमुच ही एक दिन, अपना खोया राज्य पुनः प्राप्त कर लिया। ●



नीम का पेड़

है खड़ा सबको सुहाता
नीम का यह पेड़ !

सुबह आती, शाम ढलती,
झाड़ियों के पार,
डालियों से, टहनियों से
फूटता है प्यार।

सुखद सपने है सजाता
नीम का यह पेड़ !

पहाड़ी के ढलानों पर
किरण लिखती गान,
तालियां पत्ते बजाकर
बांटते हैं प्राण।

है निकट सबको बुलाता
नीम का यह पेड़ !

दुपहरी की धूप में
है भली लगती छांव,
बैठकर विश्राम करता
यहां सारा गांव।

थकावट सबकी मिटाता
नीम का यह पेड़ !

—राजनारायण चौधरी



सौ डंडे



अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो,
चोर आए इक गांव में दो।

साधु का था वेश बनाया
भिक्षा का था पात्र उठाया,
बोले—'बम-बम भोले हो'
अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो।

सिर पर लम्बी जटा सजाई
नकली दाढ़ी-मूंछ लगाई,
पहना चोगा झल्लम-झो
अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो।

दिन में घर-घर जाते थे
भेद वो लेकर आते थे,
सेंध लगाते रात में वो
अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो।

एक रात आफत की आई
मुन्नी देख उन्हें चिल्लाई,
मचा शोर हो-हल्ला-हो
अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो।

पकड़ा-धकड़ी, मुक्का, लात
जटा-जूट थी आई हाथ,
भेद छोड़कर भागे वो
अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो।

चोरों का मिल गया सुराग
भड़क उठी थी सोई आग,
पड़ गए उन पर डंडे सौ
अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो।

—नवीन जैन

मछली को जुकाम

एक रोज मछली रानी को
भारी हुआ जुकाम,
बार-बार वह लगी चीखने—
'मरी, हाय रे राम !'

बगुला डाक्टर बाबू को तब
घर पर तुरत बुलाया,
चेकअप कर उसने मछली को
एक उपाय बताया।

लेकर मेरी दवा, चार दिन
पानी में मत जाओ,
कड़ी धूप, सूरज की गरमी
से न तनिक घबराओ

होश उड़ गए बेचारी के
इस नुस्खे के मारे,
दिन में ही आ गए नजर
उसको आकाश में तारे।

— डा. भैरूंलाल गर्ग



चल मेरी साइकिल

चल मेरी साइकिल
चल री चल,
जब जी चाहे
घूम-टहल।

मस्ती में तू बढ़ती जा
बीच सड़क से बचती जा,
फर्राटे भरती है गाड़ी
आंखें बंद किए मत जा।
दौड़ किनारे संभल-संभल,
चल मेरी साइकिल
चल री चल।

—रमेश आजाद

चतुर चरवाहा

—उषा महाजन

हंगरी का राजा मतित्थयस था। उनके पास बहुत-सी गाएं और भेड़-बकरियां थीं। वह उनकी देख-रेख में रुचि लेता था। जानवरों को जो चरवाहा जंगल में चराकर लाता था, राजा उसे बहुत मानते थे। कारण था, वह कभी झूठ नहीं बोलता था।

एक दिन प्रशिया का राजा और उसकी बेटी हंगरी के राजमहल में आए हुए थे। वे दोनों मतित्थयस के साथ भोजन कर रहे थे। बातों-बातों में मतित्थयस ने अपने चरवाहे के सत्य बोलने की बहुत प्रशंसा की। प्रशिया के राजा को यह बात ठीक नहीं लगी। वह बोला—"यह कैसे सम्भव है कि कोई किसी भी कीमत पर झूठ न बोले। आप देखिए, मैं उसे झूठ बोलने के लिए विवश कर दूंगा।"

मतित्थयस ने पूछा—"और यदि वह ऐसा न करे, तो ?"

प्रशिया के राजा ने उत्तर दिया—"तब मैं अपना आधा राज्य हार जाऊंगा। यदि वह झूठ बोल दे, तो आप अपना आधा राज्य मुझे देना।"

प्रशिया के राजा ने कह तो दिया, पर मन ही मन वह चिंतित-सा हो गया। रात भर उसे नींद नहीं आई। वह चरवाहे से झूठ बुलवाने के उपाय के बारे में सोचने लगा। बहुत तरकीबें सोचीं, पर उनमें से कोई तरकीब उसे जंच नहीं रही थी।

अचानक उसे विचार आया—'मतित्थयस के पास एक सुनहले रंग का मेमना है। मैं चरवाहे को बड़ी से बड़ी घूस देकर मेमना उससे मांग लूंगा। मेमने के गायब हो जाने पर, वह राजा के सामने कोई झूठ बोलकर अपने प्राण जरूर बचाएगा। इस प्रकार वह झूठ बोलने के लिए मजबूर हो जाएगा।' अब वह निश्चिंत होकर सो गया।

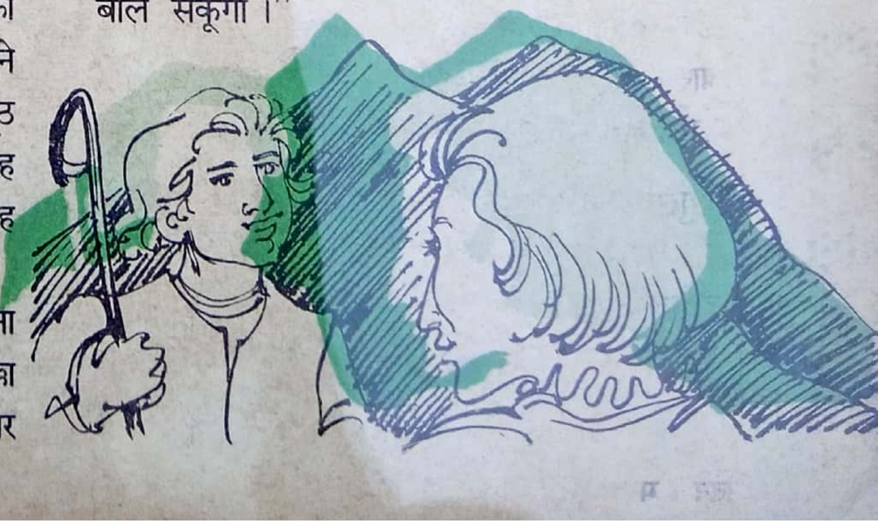
सुबह होते ही प्रशिया के राजा ने वैसा ही करना चाहा, लेकिन चरवाहा भी अपनी बात का पक्का निकला। उसने कहा—"मैं किसी भी कीमत पर सुनहला मेमना आपको नहीं दे सकता। मैंने अपने राजा का नमक खाया है। मेमना आपको देकर मैं राजा के सामने झूठ नहीं बोल सकता।"

चरवाहे के इस उत्तर से प्रशिया के राजा की आशाओं पर पानी फिर गया। दूसरे दिन सबेरे-सबेरे वह फिर चरवाहे से मिलने चरागाह पर गया। उसे फुसलाते हुए बोला—"मैं तुम्हें इतना धन दूंगा कि उससे तुम आजीवन सुख से रह सकोगे। मेमना मुझे दे दो। अपने मालिक से झूठ बोल देना, उसे भेड़िया उठा ले गया।"

चरवाहे ने पुनः उसका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। तब राजा ने अपनी आखिरी चाल चली। उसने अपनी रूपमती राजकुमारी को चरवाहे के पास भेजा। उसे विश्वास था, चरवाहा राजकुमारी के सौंदर्य पर मुग्ध हो जाएगा। फिर उससे सुनहला मेमना लेना आसान होगा।

राजकुमारी चरवाहे के पास पहुंची। उसने उसे मोहरों से भरी थैली दिखाई और कहा—"मैं तुम्हें धन-सम्पत्ति से पूरी तरह संतुष्ट कर दूंगी। तुम्हें किसी बात की कोई चिंता न रहेगी। बस, यह मेमना मुझे दे दो। मेरे पिता को इसकी बहुत आवश्यकता है।" इसके साथ ही राजकुमारी ने उसे पीने के लिए शर्बत का एक गिलास भी दिया।

चरवाहा फिर भी टस से मस न हुआ। कहने लगा—"मैं अपने सत्य बोलने से तनिक भी पीछे नहीं हटूंगा, चाहे मुझे संसार का सारा खजाना ही क्यों न मिल जाए। क्षमा कीजिए, मैं अपने स्वामी से झूठ नहीं बोल सकूंगा।"





राजकुमारी ने उसे शर्बत पीने की याद दिलाई। उसे पीते ही चरवाहे की चेतना जाती रही। उसने बेहोशी की हालत में सुनहला मेमना राजकुमारी को सौंप दिया।

राजकुमारी उस मेमने को लेकर अपने पिता के पास पहुंची। सुनहले बालों वाले मेमने को देख, प्रशिया के राजा की प्रसन्नता की सीमा न रही। वह सोचने लगा, कब सवेरा हो और कब वह मतित्थयस के राजमहल में जा पहुंचे।

चरवाहे को होश आया, तो उसे अपनी करनी पर बेहद पश्चात्ताप हुआ। वह चिंता में पड़ गया—'अब राजा को किस प्रकार इसकी सूचना दूं?'

मन में आया कि राजा को कह दे, उनका सुनहला मेमना कहीं भाग गया। फिर उसने सोचा—'यह असम्भव है। ऐसा कभी नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में तो उस मेमने के साथ पूरे के पूरे झुंड को भाग जाना चाहिए था।' यह सोचते ही उसने मन ही मन स्वयं को धिक्कारा-'यह झूठ है। ऐसा कभी नहीं कहना चाहिए।'

वह राजमहल की ओर जा रहा था, तभी उसके मन में एक और बात आई। क्यों न वह राजा से कह दे, मेमना कुएं में गिर पड़ा और डूबकर मर गया।

लेकिन फिर उसके मन ने उसे फटकारा—'यह ठीक नहीं है। ऐसा होता तो दूसरे मेमने भी कुएं में गिर पड़े होते।' वह सोचने लगा, कुछ भी हो, झूठ नहीं बोलना चाहिए।

राजमहल में प्रवेश करते ही चरवाहा हंस पड़ा। उसने राजा मतित्थयस तथा उनके अतिथि प्रशिया के राजा व उसकी बेटी का अभिवादन किया। वह मतित्थयस की ओर उन्मुख होकर कहने लगा—"महाराज, मैं आपको एक शुभ समाचार सुनाना चाहता हूं।"

प्रशिया का राजा तो समझ रहा था, चरवाहा मतित्थयस के सामने झूठ बोलने को तैयार होकर आया होगा। वह घबराया हुआ होगा। लेकिन चरवाहे को प्रसन्न देख, प्रशिया के राजा के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।

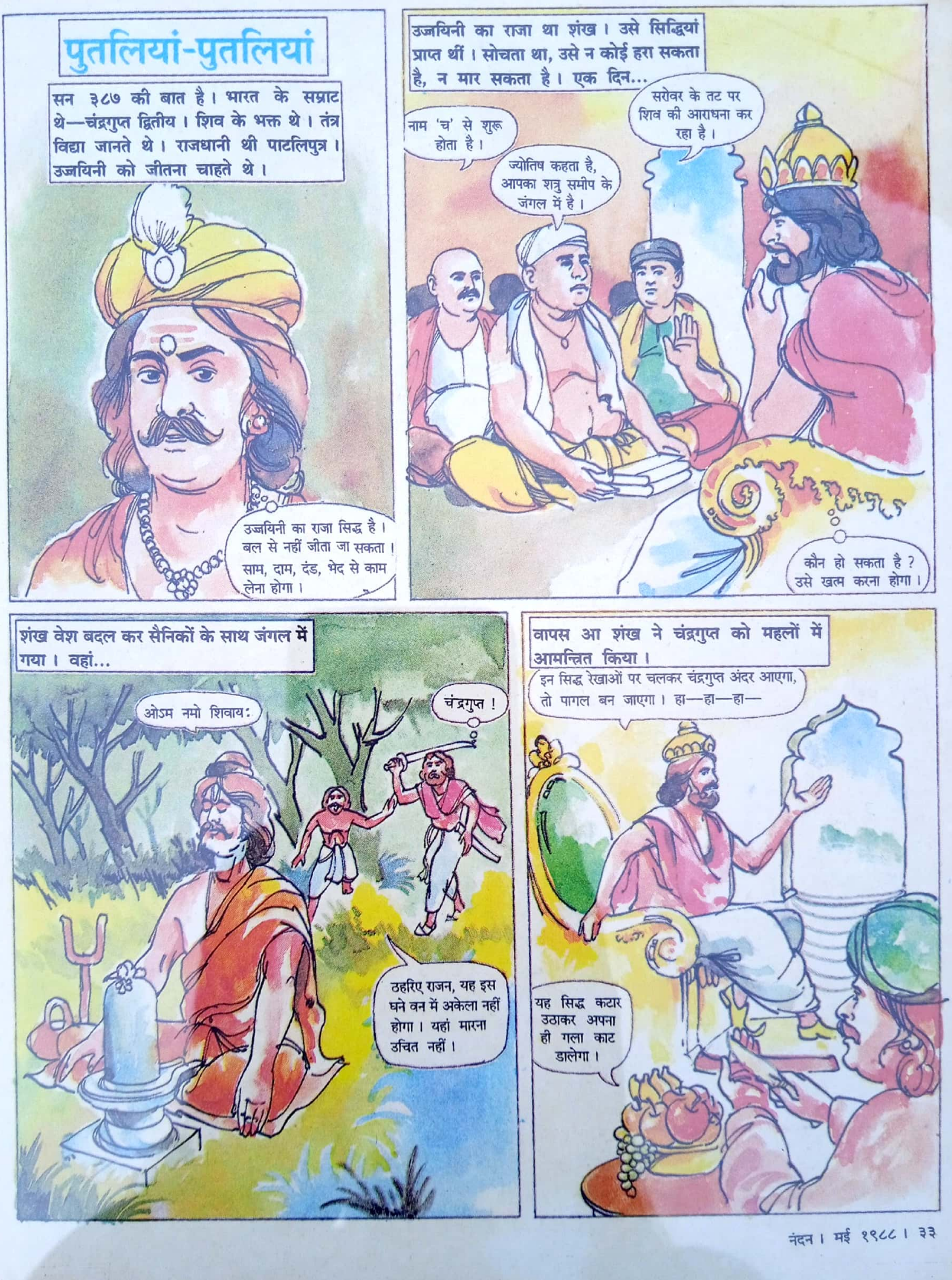
चरवाहा आगे बोला—"स्वामी, मैंने आपके सुनहले मेमने को बदलकर काले रंग का मेमना ले लिया है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह सौदा सुनहले मेमने से कहीं अधिक लाभकारी और सुंदर है।"

उसकी बात सुनकर प्रशिया के राजा का चेहरा उतर गया। मतित्थयस ने प्रसन्न होकर कहा—"मैं तुमसे बहुत खुश हूं। तुमने धन और सौंदर्य देखकर और यहां तक कि धोखे से बेहोश किए जाने पर भी झूठ नहीं बोला। इन तीनों से अंधा होकर तो मनुष्य बड़े से बड़ा पाप भी कर सकता है। तुम्हारे सत्य बोलने के कारण, मैं प्रशिया नरेश के आधे राज्य का भी अधिकारी बन गया हूं। यह आधा राज्य मैं तुम्हें सौंपता हूं। यह तुम्हारे सत्य बोलने का पुरस्कार है।"

चरवाहे ने नतमस्तक होकर मतित्थयस को धन्यवाद दिया। फिर राजकुमारी की ओर इशारा करके बोला—"और महाराज, यह है वह काले रंग का मेमना, जिससे मैंने आपके सुनहले मेमने को बदला था।"

सुनकर मतित्थयस हंस पड़ा। प्रशिया के राजा ने भी उदारता पूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन किया। वह बोला—"तुम्हारे सत्य बोलने के पुरस्कार में यह राजकन्या मैं तुम्हें अपनी ओर से सौंपता हूं।"

फिर क्या था। चरवाहे का राजकुमारी से विवाह हो गया। आधा राज्य मिल जाने पर अब वह चरवाहा नहीं, राजा था। राजकुमारी भी प्रसन्न थी कि उसे उत्तम चरित्र वाला पति मिला। **(हंगेरियन कथा)**


पुतलियां-पुतलियां
सन ३८७ की बात है। भारत के सम्राट थे—चंद्रगुप्त द्वितीय। शिव के भक्त थे। तंत्र विद्या जानते थे। राजधानी थी पाटलिपुत्र। उज्जयिनी को जीतना चाहते थे।
उज्जयिनी का राजा सिद्ध है। बल से नहीं जीता जा सकता। साम, दाम, दंड, भेद से काम लेना होगा।
उज्जयिनी का राजा था शंख। उसे सिद्धियां प्राप्त थीं। सोचता था, उसे न कोई हरा सकता है, न मार सकता है। एक दिन...
ज्योतिष कहता है, आपका शत्रु समीप के जंगल में है।
सरोवर के तट पर शिव की आराधना कर रहा है।
नाम 'च' से शुरू होता है।
कौन हो सकता है? उसे खत्म करना होगा।
शंख वेश बदल कर सैनिकों के साथ जंगल में गया। वहां...
ओऽम नमो शिवाय:
चंद्रगुप्त !
ठहरिए राजन, यह इस घने वन में अकेला नहीं होगा। यहां मारना उचित नहीं।
वापस आ शंख ने चंद्रगुप्त को महलों में आमन्त्रित किया।
इन सिद्ध रेखाओं पर चलकर चंद्रगुप्त अंदर आएगा, तो पागल बन जाएगा। हा—हा—हा—
यह सिद्ध कटार उठाकर अपना ही गला काट डालेगा।


सम्राट की जय हो । हमारे महाराज शंख का आतिथ्य स्वीकार कर महलों में पधारें ।...
जो चाहता था, वही हुआ । अवसर पा शंख को वहीं समाप्त कर दूंगा । आसपास छिपी सेना को इसे बजा कर सावधान कर दूं ।
जंगल में चंद्रगुप्त को शंख का निमन्त्रण मिला...
इस प्रकार सेना को आदेश दे, चंद्रगुप्त राजा शंख के महलों में पहुंचे । और...
सिद्ध रेखाएं ! पागलपन का अभिनय करूं । फिर अवसर पाकर...
इतनी जल्दी सफलता मिल गई ।
हो गया पागल । कटार सामने कर दूं ।
चंद्रगुप्त को पागल जान शंख असावधान था । मौका पा चंद्रगुप्त ने खंजर से उस पर वार कर दिया । अगले ही क्षण...
भागो ! जान बचाओ !
सिद्धियां भलाई के लिए होती हैं शंख । पाप कभी नहीं फलता । मेरी सेना ने उज्जयिनी छीन ली है । सुनो विजय की ध्वनि...
शंख को मार चंद्रगुप्त ने उज्जयिनी को राजधानी बनाया ।


एक दिन वह शिकार खेलने गए । शिकार का पीछा करते भटक गए
इस वृक्ष पर ! विषधर नागों से भरे !
इस वृक्ष पर चढ़कर देखता हूं, शिकार किधर गया !
वाह, कितनी सुंदर नगरी है । इसे भी जीत कर अपने साम्राज्य में मिलाऊंगा ।
चंद्रगुप्त भगवान शिव का नाम ले उस वृक्ष की चोटी पर जा पहुंचे । इधर उधर देखा तो .
और उनके ऐसा सोचते ही...
अरे !
!!?
क्रोध में भर चंद्रगुप्त ने आदेश दिया...
राजमुकुट की खोज की जाए । राज्य भर के कौए पकड़ लिए जाएं । उनके घोंसले नष्ट कर दिए जाएं ।
ऐसा बलशाली कौआ !
मेरा मन कहता है, कौए के वेश में यह कोई और है ।
वृक्ष से देखे विचित्र नगर की बात सोचते सोचते राजधानी पहुंचे । अगले दिन चमत्कार हुआ...
रहस्य ! !
महाराज, जंगल से हमने यह अद्भुत कौआ पकड़ा है । यह कोई रहस्य आपको बताना चाहता है ।



पशु-पक्षियों की बोली समझने वाले एक दरबारी ने बताया...
यह कहता है, सारे कौए निरपराध हैं। जो कौआ आपका मुकुट ले गया, वह उस नगर का मंत्री है जिसे आप जीतना चाहते हैं।
सच !—तो उसे किसी तरह मेरे पास लाओ। तभी कौए मेरे राज्य में रह सकते हैं।
चंद्रगुप्त ने उस कौए को छोड़ने का आदेश दिया...
कई दिन बाद...
किसी नगर का मंत्री कौआ भी हो सकता है, हमने कभी नहीं सुना !
महाराज, वह नगर योगी राजा बाहुबल का है। उसे जीत पाना असम्भव है। वहां जो न हो जाए, थोड़ा है...
मंत्री चला गया, तो चंद्रगुप्त सोच में डूब गए।
अचानक...
महाराज की जय हो। कौआ मंत्री लूतवरण उपस्थित है।
जब आप वृक्ष पर चढ़े मेरे नगर का अहित सोच रहे थे, मुझे क्रोध आ गया था। इसीलिए...
लूतवरण, उज्जयिनी के राज मुकुट का चोर ! कौए से पुरुष बन गया ! कमाल है . . .
बस, बस, चुप रहो। तुमने महाप्रतापी चंद्रगुप्त का अपमान किया है। बोलो, तुम्हें क्या दंड दिया जाए ?

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ३० रुपए
दो वर्ष : ६० रुपए

वर्ष २४, अंक ७, नई दिल्ली; मई '८८, ज्येष्ठ, शक सं. १९१०

बिछुड़े बच्चे कहां जाएं

नई दिल्ली। इन दिनों अक्सर बच्चे घर से भाग जाते हैं— कारण होता है परीक्षा में फेल होने का डर। ये बच्चे डर के कारण घर से निकल तो पड़ते हैं, लेकिन बहुत बार घर से निकलने के बाद, कोई भी रास्ता इन्हें घर वापस नहीं लाता। ये गलत हाथों में पड़ जाते हैं। बहुत से गिरोह इनका मनमाना फायदा उठाते हैं।

दिल्ली में बहुत बार ऐसा होता है कि अपने माता-पिता के साथ बच्चे दिल्ली देखने आते हैं। इस मायानगरी में वे हमेशा के लिए अपने माता-पिता से बिछुड़ जाते हैं। ऐसे बच्चे अक्सर रेलवे स्टेशन या बस अड्डों के पास मिलते हैं। समाज कल्याण विभाग द्वारा चलाए जा रहे गृहों में बिछुड़े बच्चों की संख्या दो हजार के आसपास है। अक्सर बच्चों को अपने घर का पता मालूम नहीं होता। जिन्हें पता मालूम होता है, उन्हें उनके घर वापस भेज दिया जाता है। फिर भी पचास प्रतिशत बच्चे इन्हीं गृहों में रह जाते हैं। कम से कम दिल्ली में जो बच्चे पहली बार आते हैं, माता-पिता को उनकी जेब में नाम और पता लिखकर रख देना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों का खास ध्यान रखना चाहिए, जिससे ये मासूम उनके प्यार से वंचित होने से बच जाएं।

सबसे छोटी गीता

राजकोट। दुनिया की सबसे छोटी गीता मोहनलाल खीमजी सोनी के पास है। इसका आकार एक इंच से भी कम है। सोनी को यह अद्‌भुत गीता अपने दादा जी से प्राप्त हुई थी।



फिक्की के महिला संगठन का वार्षिक समारोह। उद्‌घाटन किया केंद्रीय ऊर्जा मंत्री श्री बसंत साठे ने। सन् १९८७ का पुरस्कार बच्चों तथा महिलाओं की उत्कृष्ट सेविका श्रीमती ए. सी. कृष्णा राव को दिया गया। श्रीमती राव के लिए पुरस्कार ग्रहण किया स्त्री सेवा मंदिर, मद्रास की विमला भूषण ने। चित्र में बाईं ओर हैं संगठन की अध्यक्षा श्रीमती शोभना भरतिया।

शाकाहारी बनें

नई दिल्ली। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि हृदय रोग से बचना है, तो खाने में मौसमी सब्जियां और फल शामिल कीजिए। मांसाहार छोड़ देने से बहुत-सी बीमारियां दूर हो सकती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऐसी १६० बीमारियों की सूची जारी की है, जो मांसाहार के कारण होती हैं।

सत्रह वर्ष की डाक्टर

वाशिंगटन। क्रिस्टेन बनर्जी की उम्र है सिर्फ ग्यारह वर्ष। क्रिस्टेन और उसकी मां, दोनों ही डाक्टरी पढ़ रही हैं। क्रिस्टेन ने 'विशेष प्रतिभाशाली' बच्चों की श्रेणी में परीक्षाएं पास कीं। उम्र कम होते हुए भी उसकी योग्यता को देखते हुए उसे डाक्टरी में प्रवेश दे दिया गया। सिर्फ सत्रह वर्ष की उम्र में वह डाक्टर बन जाएगी। लेकिन लोगों का इलाज करने के लिए उसे चार वर्ष तक इंतजार करना पड़ेगा। अमरीकी कानून में इक्कीस वर्ष की उम्र से ही कोई डाक्टर प्रेक्टिस कर सकता है।

पुराना कुआं

काहिरा। मिस्र में अमरीकी और पोलैंड के भूगर्भवेत्ताओं ने एक लाख बीस हजार वर्ष पुराना कुआं खोजा है। यह कुआं रेगिस्तानी इलाके में है। वैज्ञानिकों का विचार है कि पहले यह इलाका हरा-भरा रहा होगा।

झुर्रियां दूर करो

न्यूयार्क। अमरीका में नई क्रीम बनाई गई है। इसका नाम है— रेटिन-ए। इसके प्रयोग से त्वचा की झुर्रियां मिट जाती हैं। इस क्रीम का प्रयोग, अमरीका में हो रहा है।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार-
नंदन बाल समाचार

धर्म का अर्थ कर्तव्य पालन है, पाखंड नहीं। — महर्षि अरविंद

सावधान !

कलकत्ता के तीन बच्चे— सुरजीत, जयदीप और देवराज। भोले-भाले बच्चों की उम्र दस-ग्यारह साल। टी. वी. देखने का शौक। टी. वी. पर 'ही मैन' और 'स्पाइडरमैन' के अजब-अनोखे कारनामे देखते। ये कार्टून नायक बच्चों के "हीरो" बन गए। वे समझे कि सचमुच के पात्र हैं। बस, तीनों बालक उनसे मिलने घर से निकल पड़े।

ये बालक न जाने कहां-कहां भटकते ! पर पुलिस ने इन्हें घर वापस पहुंचा दिया। टी. वी. हर विदेशी चीज थोप रहा है। उसके कर्ता-धर्ता देश के भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। इस हालत में माता-पिता और बच्चों को खुद सावधान रहना चाहिए।

बच्चों की मृत्यु दर

नई दिल्ली। दुनिया में हर सप्ताह करीब ढाई लाख बच्चे कुपोषण तथा छूत की बीमारियों के कारण मर जाते हैं। युनिसेफ के अध्ययन के अनुसार १९५० के दशक में दुनिया में पांच साल से कम उम्र में मरने वाले बच्चों की संख्या ढाई करोड़ थी। १९८० के दशक में जन्म दर बढ़ने के बावजूद यह संख्या घटकर १.६ करोड़ प्रतिवर्ष है। अब टीकों तथा दवाइयों की सहायता से प्रति वर्ष २० लाख बच्चों की जान बचाई जाती है।

चोर दांत भूल गया

फोर्ट लाडेरडेल (फ्लोरिडा)। एक चोर चोरी करने के बाद मेज पर अपने नकली दांत भूल गया। पुलिस ने कुछ ही घंटों में चोर को पकड़ लिया। चोर होटल की मेज पर सिर रखे सो रहा था। पुलिस वालों ने उसका मुंह खोला, तो सारे दांत गायब थे। एक सिपाही ने दांतों का सेट चोर के जबड़े में लगाकर देखा। वह बिलकुल ठीक लगा। बस, चोर पकड़ा गया। बासठ वर्ष के इस बूढ़े चोर को यह भी याद नहीं था कि वह कहीं चोरी करने गया था। जेल में इस चोर को दांत भी नहीं दिए गए, क्योंकि पुलिस ने दांतों को सबूत के तौर पर अपने पास रखा है।

मां का नाम

नई दिल्ली। दिल्ली प्रशासन ने अपने विद्यालयों के प्रवेश पत्रों में परिवर्तन किया है। अब इन प्रवेश पत्रों में मां या पिता, दोनों में से किसी एक का नाम भरा जा सकेगा। अब तक इन पत्रों में सिर्फ पिता का नाम ही भरा जा सकता था।

मंदिर ही मंदिर

अम्बिकापुर। यहां के डीपाडीह गांव के पास खुदाई के दौरान ऐसा शहर मिला है, जहां मंदिर ही मंदिर हैं। यहां शिव की विभिन्न मुद्राओं की मूर्तियां मिली हैं। एक शिलालेख भी मिला है। इस शिलालेख को छठी या नवीं शताब्दी का माना जा रहा है।

नागर जी को पुरस्कार

लखनऊ। जाने-माने साहित्यकार अमृतलाल नागर को भारत-भारती पुरस्कार दिया गया है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के इस पुरस्कार में एक लाख रुपए की राशि प्रदान की जाती है।

सांप को काटा

दुर्गापुर। यहां पर एक व्यक्ति को सांप ने काट लिया। इस व्यक्ति ने सांप को पकड़ लिया। फिर क्रोध में आ, उस व्यक्ति ने सांप को जगह-जगह काटा। सांप तुरंत मर गया और यह व्यक्ति घर चला गया।

आलू तलने का रिकार्ड

ब्रूगे (बेलजियम)। क्रिस वेनडोवर्डे ने आलू तलने का नया रिकार्ड कायम किया। वह लगातार अठहत्तर घंटे तलती रही। क्रिस ने तलना तभी बंद किया, जब उसके डाक्टर ने आकर उसे रोका।

मलेरिया भगाओ

मद्रास। भारत में जड़ी-बूटियों से मलेरिया की दवा बनाई गई है। इसका नाम है—आयुष-६४। इस दवा को आयुर्वेदिक पद्धति से तैयार किया गया है। जिन जड़ी-बूटियों से यह दवा बनाई गई है, वे भारत में खूब पाई जाती हैं।

येति की खोज

लंदन। जाने-माने पर्वतारोही क्रिस बोनिंगटन हिमालय की यात्रा पर निकले हैं। इस यात्रा में वह हिम मानव 'येति' की खोज करेंगे। बोनिंगंटन का कहना है कि अपनी पिछली हिमालय यात्रा के दौरान उन्होंने 'येति' के पंजों के निशान देखे थे। बेनिंगंटन को 'येति' के होने का विश्वास है। उनका मानना है कि हिमालय में ऐसी कंदराएं हैं, जहां लाखों वर्षों तक यह मानव अपने को सुरक्षित रख सका है।

छूने से पेड़ कांपता था

श्रीनगर। अठारहवीं सदी में यहां के हालथाल गांव में एक विचित्र पेड़ था। इस पेड़ की एक भी शाखा को छुआ जाता, तो पूरा पेड़ कांपने लगता था। यह पेड़ बहुत ऊंचा था। पेड़ किसी भूकम्प के कारण नष्ट हो गया। इस पेड़ का उल्लेख 'आईने अकबरी' और 'अकबरनामा' में मिलता है।

बीमारियों की सूचना

मास्को। सोवियत वैज्ञानिकों ने ऐसा यंत्र बनाया है, जो भविष्य में होने वाली बीमारियों का पता कर सकता है। उनके चित्र उतार सकता है।

आंखों के इलाज के लिए नया उपकरण

नई दिल्ली, उप राज्यपाल श्री हरिकिशनलाल कपूर ने श्रौफ धर्मार्थ नेत्र अस्पताल में बने नए कमरों तथा एक नए उपकरण का उद्घाटन किया । अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डा. एन. एल. वैश्य ने कहा कि यहां चिकित्सा के नए तरीके काम में लाए जा रहे हैं । उन्होंने बच्चों के नेत्र रोगों की रोकथाम पर ज्यादा ध्यान देने की बात भी कही ।

गणित-विज्ञान पढ़ाएं

नई दिल्ली । केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड ने अध्यापकों को सलाह दी है कि वे विज्ञान और गणित की पढ़ाई में सुधार करें । बोर्ड ने गणित के अध्यापक कम होने पर भी चिंता व्यक्त की है । इन विषयों को पढ़ाने के लिए महिला अध्यापकों की बेहद कमी है । इसका कारण लड़कियों का इन विषयों को कम पढ़ना है । बोर्ड का मानना है कि विज्ञान और गणित चुनने के लिए लड़कियों को अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए ।

पांच सौ वर्ष का बरगद

अनंतपुर । यहां के जंगल में पांच सौ वर्ष पुराना बरगद का पेड़ पाया गया है । इसकी शाखाएं दूर-दूर तक फैली हुई हैं । जंगल के बीच में यह एक हरे पहाड़-सा दिखाई देता है । गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में भी इस पेड़ को स्थान दिया जाएगा । यह वृक्ष कलकत्ता के बरगद से भी पुराना है ।

स्कूल के नए भवन

लखनऊ । अगले पांच वर्ष में उत्तर प्रदेश के सभी प्राथमिक स्कूलों का अपना भवन होगा । प्रदेश में इस समय बीस हजार स्कूल ऐसे हैं, जिनका अपना कोई भवन नहीं है ।



बधाई

पूना, अरविंद गुप्ता को बच्चों के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है । पुरस्कार ५०,००० रुपए का है । बरेली में जन्मे अरविंद अच्छे विज्ञान लेखक हैं । उनकी पुस्तक 'खेल-खेल में' के पृष्ठों में विज्ञान के कुछ सरल और रोचक प्रयोग दिए गए हैं । हिंदी के साथ-साथ यह पुस्तक मलयालम, कन्नड़, तमिल, मराठी आदि भाषाओं में छप चुकी है । अंग्रेजी और गुजराती में भी प्रकाशित हो रही है ।

अमूल्य हीरा

जोहांसबर्ग । दक्षिण अफ्रीका में हीरे की खान से ५९९ कैरेट का हीरा प्राप्त हुआ है । इस बिना तराशे हुए हीरे की कीमत तीन करोड़ डालर है ।

दुर्लभ मूर्ति

पणजी । कुर्दी गांव के निकट हजारों साल पुरानी दुर्लभ मूर्ति मिली है । इसे ईसा से नौ सौ वर्ष पूर्व का माना जा रहा है । यह पृथ्वी या शक्ति की मूर्ति है । इसकी गोद में नवजात शिशु भी है । मूर्ति की ऊंचाई सवा दो मीटर है ।

छात्रवृत्ति

नई दिल्ली । मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय ने पांच सौ बच्चों को छात्रवृत्ति देने की घोषणा की है । जिन बच्चों के माता-पिता की वार्षिक आय पच्चीस हजार रुपए से कम है, वे छात्रवृत्ति के लिए होने वाली परीक्षा में बैठ सकेंगे ।

नन्हे समाचार

- हंगरी के ग्योर नगर में पिछले दिनों एक ऐसा लैटर बाक्स खोला गया, जो सन् १९७८ से बंद पड़ा था ।
- लक्षद्वीप में हवाई अड्डे का निर्माण किया गया है ।
- फ्रांस की राजधानी पेरिस में सड़कों पर लगे पेड़ों की सूची कंप्यूटर से तैयार की जा रही है । इससे पता चल जाएगा कि कौन-सा पेड़ किस हालत में है ।
- बंगलौर में कृत्रिम घास वाला तीसरा हाकी मैदान तैयार हो गया है । पहले दो दिल्ली और लखनऊ में हैं ।
- केरल तथा शिवालिक पहाड़ियों में सोने के भंडारों का पता चला है ।
- कपूरथला के रेल सवारी डिब्बा कारखाने में उत्पादन शुरू हो गया है । यहां हर वर्ष एक हजार सवारी डिब्बे बनाए जाएंगे ।
- एक वैज्ञानिक ने कहा है, अगर हाथी दांत के लालच में अफ्रीकी हाथियों का शिकार बंद न किया गया, तो चार साल में वे समाप्त हो जाएंगे ।
- पुर्तगाली और मलयालम भाषाओं का शब्दकोश तैयार किया गया है ।
- भारत में प्रति वर्ष छह-सात लाख लोग तम्बाकू के प्रयोग से होने वाली बीमारियों के कारण मर जाते हैं ।
- दक्षिणी ध्रुव पर दूसरे भारतीय अनुसंधान केंद्र का निर्माण शुरू हो गया है । पहला है दक्षिण गंगोत्री ।
- दिल्ली के चिड़िया घर में दक्षिण अमरीका से दुर्लभ तोतों के दो जोड़े लाए गए हैं ।
- यूगोस्लाविया के एक शहर में मिलिसाव सोजोविक नामक व्यक्ति को एक विचित्र रोग है— उसे पानी से एलर्जी है । वह पानी नहीं पी सकता । उसका कहना है,"मैं तो बस सपने में ही पानी पीता हूं ।"

सचित्र समाचार



समाज सेवी बाबा आमटे को उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने घनश्यामदास बिरला पुरस्कार से सम्मानित किया। पुरस्कार में दो लाख रुपए नकद और मान पत्र दिया गया। दाईं ओर खड़ी हैं श्रीमती सरला बिरला।

जापान में रेल तथा मोटर वाहन यातायात के लिए बनाया गया सैंतीस कि. मी. लम्बा पुल। समुद्र पर बनाया गया यह पुल इंजीनियरी का एक चमत्कार है।





यह हैं पुलिस के जासूस महोदय, जो एक छलांग में ही बड़ी-बड़ी बाधाएं पार कर लेते हैं।



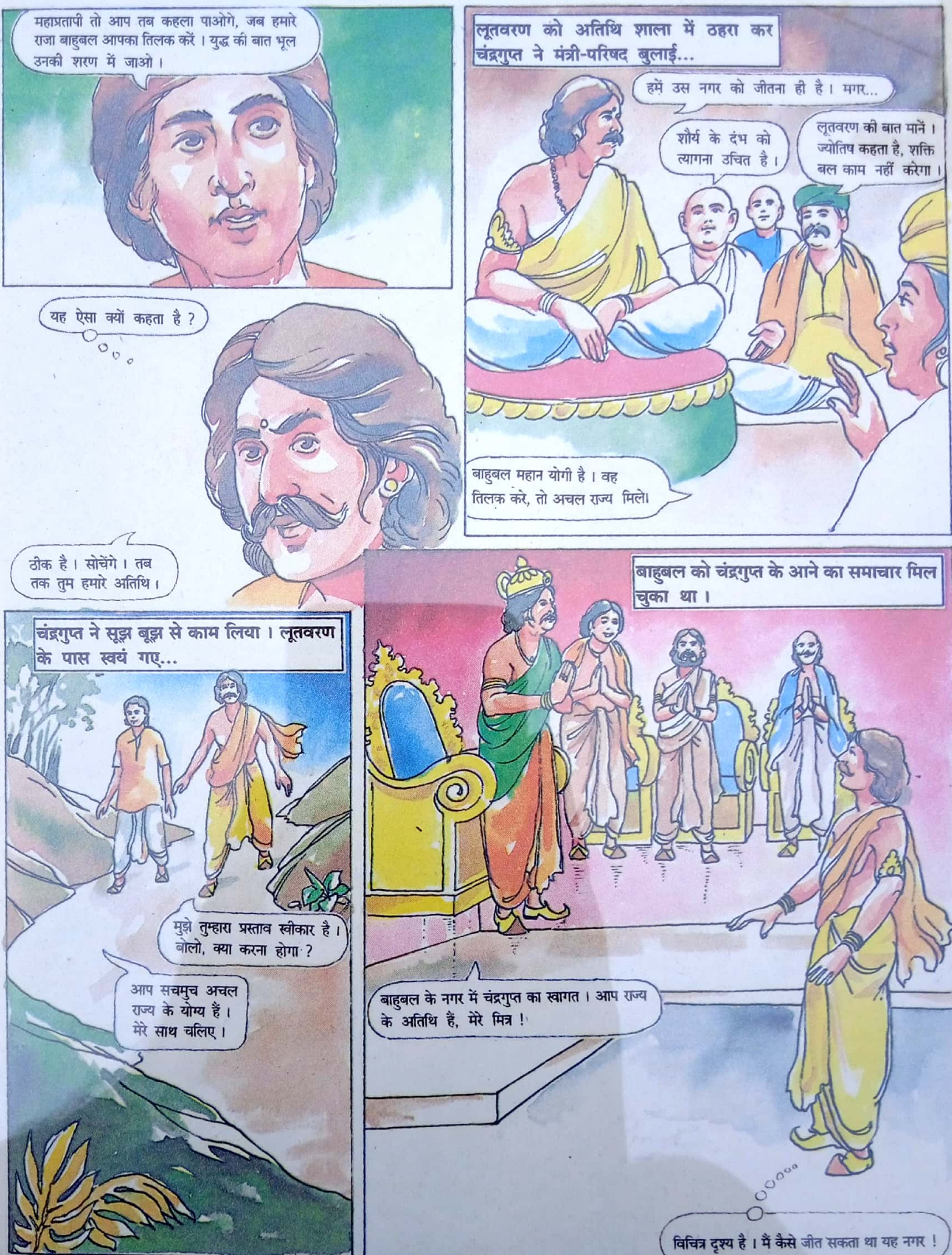
स्क्वाड्रन लीडर ए. वी. दवैय्या : १९६५ के भारत-पाक युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। सरकार उन्हें लापता समझ रही थी। अब तेईस वर्ष बाद मृत्युपरांत उन्हें महावीर चक्र प्रदान किया गया।

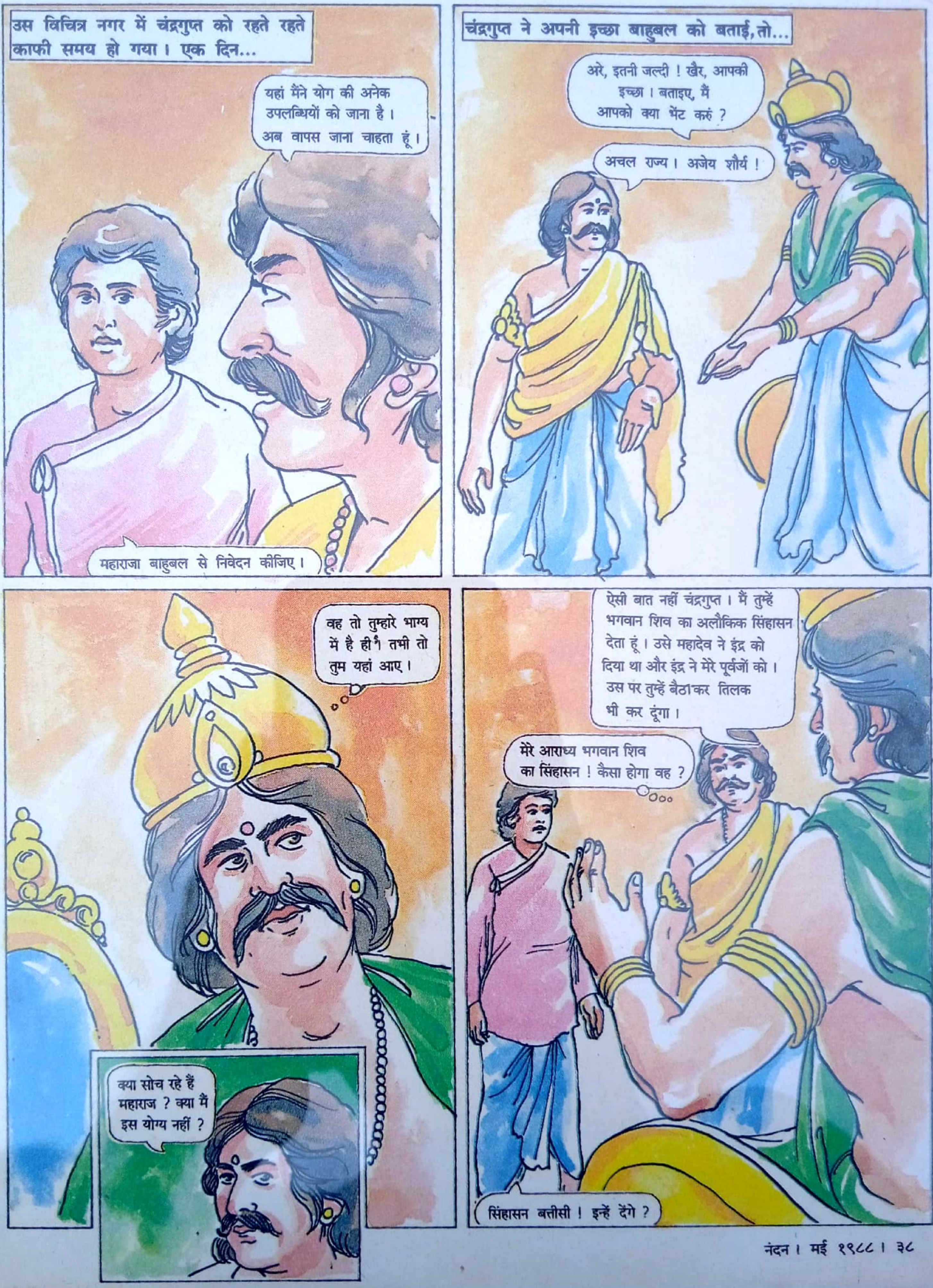
गाजियाबाद जिले के सरस्वती शिशु मंदिरों की क्षेत्रीय प्रतियोगिताएं लालबहादुर शास्त्री शिशु मंदिर, मुरादनगर में सम्पन्न हुईं।

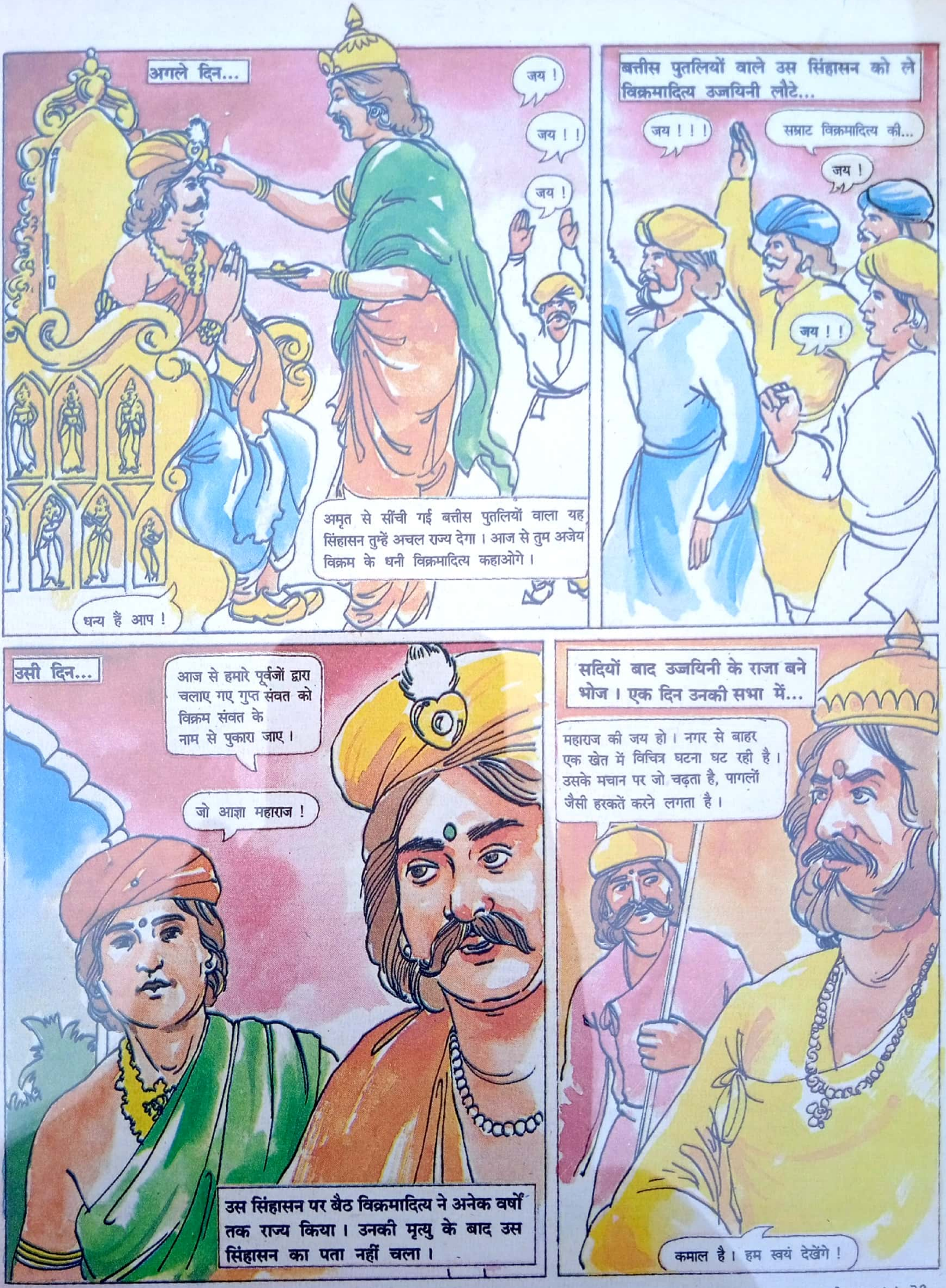


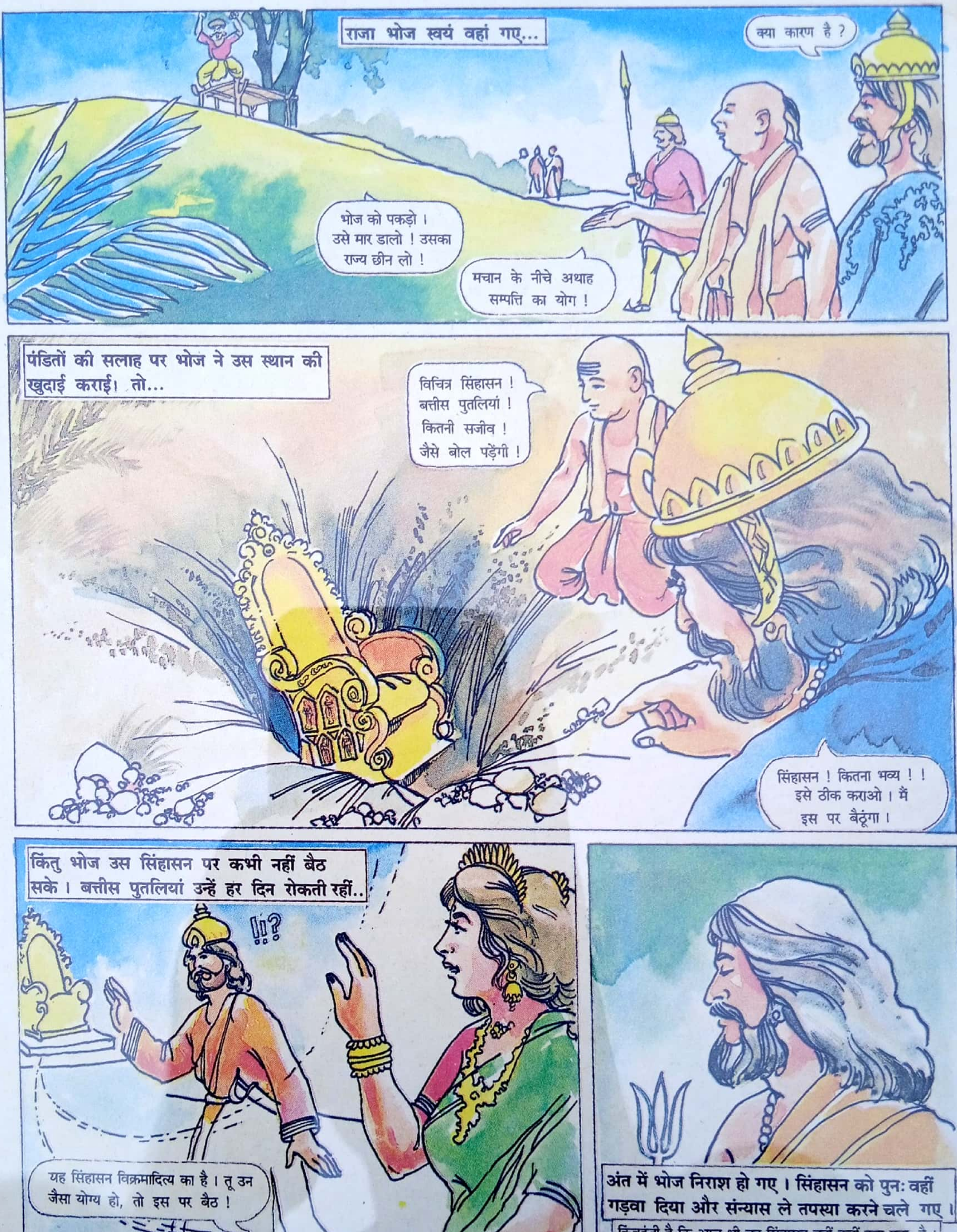


बालकन जी बारी के संस्थापक दादा सेवक भोजराज नहीं रहे। बच्चों के कल्याण से जुड़े दादा को गत नवम्बर में भारतीय बाल शिक्षा परिषद ने पच्चीस हजार रुपए का पुरस्कार दिया था।


महाप्रतापी तो आप तब कहला पाओगे, जब हमारे राजा बाहुबल आपका तिलक करें । युद्ध की बात भूल उनकी शरण में जाओ ।
यह ऐसा क्यों कहता है ?
ठीक है । सोचेंगे । तब तक तुम हमारे अतिथि ।
लूतवरण को अतिथि शाला में ठहरा कर चंद्रगुप्त ने मंत्री-परिषद बुलाई...
हमें उस नगर को जीतना ही है । मगर...
शौर्य के दंभ को त्यागना उचित है ।
लूतवरण की बात मानें । ज्योतिष कहता है, शक्ति बल काम नहीं करेगा ।
बाहुबल महान योगी है । वह तिलक करे, तो अचल राज्य मिले।
चंद्रगुप्त ने सूझ बूझ से काम लिया । लूतवरण के पास स्वयं गए...
मुझे तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार है । बोलो, क्या करना होगा ?
आप सचमुच अचल राज्य के योग्य हैं । मेरे साथ चलिए ।
बाहुबल को चंद्रगुप्त के आने का समाचार मिल चुका था ।
बाहुबल के नगर में चंद्रगुप्त का स्वागत । आप राज्य के अतिथि हैं, मेरे मित्र !
विचित्र दृश्य है । मैं कैसे जीत सकता था यह नगर !


उस विचित्र नगर में चंद्रगुप्त को रहते रहते काफी समय हो गया। एक दिन...
यहां मैंने योग की अनेक उपलब्धियों को जाना है। अब वापस जाना चाहता हूं।
महाराजा बाहुबल से निवेदन कीजिए।
चंद्रगुप्त ने अपनी इच्छा बाहुबल को बताई, तो...
अरे, इतनी जल्दी ! खैर, आपकी इच्छा। बताइए, मैं आपको क्या भेंट करूं ?
अचल राज्य। अजेय शौर्य !
वह तो तुम्हारे भाग्य में है ही। तभी तो तुम यहां आए।
क्या सोच रहे हैं महाराज ? क्या मैं इस योग्य नहीं ?
ऐसी बात नहीं चंद्रगुप्त। मैं तुम्हें भगवान शिव का अलौकिक सिंहासन देता हूं। उसे महादेव ने इंद्र को दिया था और इंद्र ने मेरे पूर्वजों को। उस पर तुम्हें बैठाकर तिलक भी कर दूंगा।
मेरे आराध्य भगवान शिव का सिंहासन ! कैसा होगा वह ?
सिंहासन बत्तीसी ! इन्हें देंगे ?


अगले दिन...
जय !
जय ! !
जय !
अमृत से सींची गई बत्तीस पुतलियों वाला यह सिंहासन तुम्हें अचल राज्य देगा । आज से तुम अजेय विक्रम के धनी विक्रमादित्य कहाओगे ।
धन्य हैं आप !
बत्तीस पुतलियों वाले उस सिंहासन को ले विक्रमादित्य उज्जयिनी लौटे...
जय ! ! !
सम्राट विक्रमादित्य की...
जय !
जय ! !
उसी दिन...
आज से हमारे पूर्वजों द्वारा चलाए गए गुप्त संवत को विक्रम संवत के नाम से पुकारा जाए ।
जो आज्ञा महाराज !
उस सिंहासन पर बैठ विक्रमादित्य ने अनेक वर्षों तक राज्य किया । उनकी मृत्यु के बाद उस सिंहासन का पता नहीं चला ।
सदियों बाद उज्जयिनी के राजा बने भोज । एक दिन उनकी सभा में...
महाराज की जय हो । नगर से बाहर एक खेत में विचित्र घटना घट रही है । उसके मचान पर जो चढ़ता है, पागलों जैसी हरकतें करने लगता है ।
कमाल है । हम स्वयं देखेंगे !


राजा भोज स्वयं वहां गए...
क्या कारण है ?
भोज को पकड़ो ! उसे मार डालो ! उसका राज्य छीन लो !
मचान के नीचे अथाह सम्पत्ति का योग !
पंडितों की सलाह पर भोज ने उस स्थान की खुदाई कराई। तो...
विचित्र सिंहासन ! बत्तीस पुतलियां ! कितनी सजीव ! जैसे बोल पड़ेंगी !
सिंहासन ! कितना भव्य ! ! इसे ठीक कराओ ! मैं इस पर बैठूंगा।
किंतु भोज उस सिंहासन पर कभी नहीं बैठ सके। बत्तीस पुतलियां उन्हें हर दिन रोकती रहीं..
!?
यह सिंहासन विक्रमादित्य का है। तू उन जैसा योग्य हो, तो इस पर बैठ !
अंत में भोज निराश हो गए। सिंहासन को पुनः वहीं गड़वा दिया और संन्यास ले तपस्या करने चले गए।
किंवदंती है कि आज भी वह सिंहासन वहीं कहीं दबा पड़ा है।



मटकी में चावल

—गणेशराम दुबे

किसी गांव में एक युवती रहती थी। नाम था रूपानी। वह अकेली थी। न उसके मां-बाप थे और न भाई-बहन। उसके पास कुछ खेती-बाड़ी थी, जिससे उसकी गुजर-बसर आराम से हो जाती थी।

रूपानी बहुत चतुर और बुद्धिमान थी। उसका विवाह नहीं हुआ था। विवाह के लिए रूपानी की शर्त थी, जो भी व्यक्ति उसे हरा देगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी। विवाह के लिए जो भी आए, उन्हें हारकर वापस जाना पड़ा। कोई रूपानी को हरा नहीं सका।

एक दिन की बात है। दूर के किसी गांव से एक युवक आया—भीमल। वह बहुत बुद्धिमान था। उसने कसम खाई थी, वह रूपानी को हराकर उससे अवश्य विवाह करेगा।

रूपानी समझ गई, भीमल किसलिए आया है। वह बोली—''तुम मेरे मेहमान हो, बैठो। घर में कुछ है नहीं। मैं पड़ोसियों से चावल-दाल मांगकर लाती हूं ताकि तुम्हें भोजन करा सकूं।''—यह कहकर रूपानी घर से चली गई।

सुबह से निकली रूपानी शाम को घर लौटी, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मेहमान अभी तक घर में बैठा हुआ था। रूपानी को ऐसी उम्मीद नहीं थी, क्योंकि आज तक जितने भी मेहमान आए, सबकी उसने यही परीक्षा ली थी। कोई भी मेहमान उसके लौटने तक घर में नहीं रुका था।

लेकिन भीमल तो कसम खाकर ही आया था कि वह रूपानी को हराएगा। रूपानी भी कम चतुर नहीं थी। बोली—''गांव में किसी के घर से चावल-दाल नहीं मिले। अब मैं तुमको क्या खिलाऊं-पिलाऊं?''

इतना सुनना था कि भीमल डर के मारे थर-थर कांपने लगा। यह देख, रूपानी ने पूछा—''क्या बात है? कांप क्यों रहे हो? क्या तुम्हें बुखार आ गया?''

भीमल बोला—''नहीं-नहीं, मुझे बुखार नहीं आया है। असल बात यह है कि इस घर में दो बड़े-बड़े सांप हैं, जिनकी लम्बाई गन्ने के बराबर है। उन सांपों के दांत इतने ही सफेद हैं, जितने तुम्हारे घर में काली मटकी में रखे हुए चावल। उनकी आंखें ऐसी चमक रही हैं, जैसे तुम्हारे घर की मटकी में रखी मसूर की दाल।''—इतना कहकर भीमल मुसकरा दिया।

रूपानी खीज उठी। उसकी पोल खुल गई थी। फिर भी वह हंसते हुए बोली—''तुम तो बहुत होशियार निकले। मेरे पीछे सारा घर देख लिया।'' उसने भीमल को गन्ना चूसने के लिए दिया। फिर वह भोजन तैयार करने लगी।

जब भोजन पक गया, रूपानी तालाब से पीने के लिए पानी लेने गई। इस बीच भीमल ने घर के अंदर घी का पता लगा लिया। उसने घी की मटकी उठाई। जमे हुए घी को पिघलाकर उसी जगह रख दिया।

रूपानी जब पानी लेकर आई, उसने भीमल को बुलाकर भोजन परोसा। भीमल ने देखा, दाल में घी नहीं है। उसने घी मांगा। रूपानी बोली—''मैं गरीब हूं। मेरे पास घी कहां!''

भीमल बोला—''ऐसा है, मैं अपनी आंखें बंदकर लेता हूं। तुम घी की मटकी जो भीतर टंगी हुई है, लाकर मेरी थाली में उलट दो। इसी से मेरे मन को संतोष हो जाएगा कि दाल में घी पड़ा हुआ है।''

रूपानी ने सोचा—'घी तो जमा हुआ है। उलटने से क्या फर्क पड़ेगा।' उसने वैसा ही किया। पर उसे क्या पता था कि भीमल उससे भी ज्यादा चतुर

है। उसने देखा, मटकी के उलटते ही घी एकदम थाली में गिरा। रूपानी और भी खीज गई। लेकिन भीमल मन ही मन हंस रहा था।

भीमल ने दाल-चावल मिलाए। खाना शुरू करने ही वाला था कि रूपानी बोली—"अरे, रुको तो!"

"क्यों, अब क्या समस्या आ गई?"—भीमल ने हंसते हुए पूछा।

—"ऐसे ही खाओगे क्या? हमारे यहां तो रिवाज है कि जब खाने बैठो, तो थाली को टेढ़ा कर दो। जितना घी बहकर नीचे चला जाए, उसे बचा रहने दो।"

"ठीक है, तो पहले क्यों नहीं बताया था?"—कहकर भीमल ने चावल-दाल के बीच एक गड्ढा बना दिया। सारा घी उसमें इकट्ठा हो गया। जब थाली को टेढ़ा किया, तो भी घी बहकर नीचे नहीं गया।

भीमल की चतुराई देख, रूपानी की हंसी छूट गई। भीमल भी मुसकराने लगा। रूपानी खुशी-खुशी विवाह के लिए राजी हो गई। अगले ही दिन दोनों का विवाह हो गया। ●

(छत्तीसगढ़-लोक कथा)

रेत में पारस

बंगाल के वर्धमान जिले के किसी गांव में एक ब्राह्मण रहा करते थे। उनके पास जमीन-जायदाद थी नहीं। यजमानी से जो कुछ मिल जाता था, उसी से कष्ट भरे दिन वह गुजारते थे। धीरे-धीरे उनकी हालत बहुत खराब होती जा रही थी।

एक दिन उन्होंने निश्चय किया कि अपने इष्टदेव शिवजी से सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना करेंगे। बस, वह भजन-पूजा आदि से शिवजी की उपासना में लग गए। आखिर एक रात को शिवजी ने उन्हें स्वप्न में दर्शन दिए। वह बोले— "यमुना नदी के किनारे सनातन गोस्वामी के पास जाओ। वही तुम्हें धन मिलने की राह बताएंगे।"

सनातन गोस्वामी एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त थे। वह अपना परिवार और सारा धन छोड़कर संन्यासी हो गए थे। अब यमुना के तट के पास कृष्ण की उपासना करते थे। वह ब्राह्मण गोस्वामी जी के पास पहुंचे। उन्होंने स्वप्न के बारे सब कुछ बता दिया।

सनातन गोस्वामी ने कहा— "तुम जानते हो, मैं सब कुछ त्यागकर यहां आया हूं। भिक्षा से जो कुछ मिलता है, उससे ही दिन गुजारता हूं। तुम्हें देने को मेरे पास कुछ नहीं है।"

ब्राह्मण ने कहा— "शिवजी की आज्ञा से आपके यहां आया हूं। आप ऐसा कुछ बता दीजिए, जिससे मेरी आर्थिक हालत बदल जाए। आपके पास यदि कुछ नहीं है, तो महादेवजी ने मुझे यहां आने के लिए क्यों कहा?"

गोस्वामी जी हैरान होकर घंटों तक सोचते रहे। अचानक बोले— "हां-हां! अब मुझे याद आया। कुछ दिन पहले इसी नदी के किनारे मुझे एक पारस पत्थर मिला था। मुझे उसकी जरूरत नहीं थी। शायद यह किसी के उपयोग में आ जाए, यह सोचकर मैंने उसे रेत में गाड़ दिया था। तुम उसे ले जाओ।"

ब्राह्मण ने रेत खोदकर पारस पत्थर बाहर निकाल लिया। पास पड़े लोहे के टुकड़े से पत्थर छुआते ही लोहा, सोना बन गया।

ब्राह्मण को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्हें लगा कि गोस्वामी जी ने कैसे ऐसा अमूल्य पत्थर मुझे दे दिया? वह देर तक सोच-विचार में डूबे रहे। आखिर गोस्वामी जी के पास लौटे। हाथ जोड़कर बोले— "आपने तो यह अमूल्य पत्थर मुझे दे दिया। इससे मेरी गरीबी दूर हो जाएगी, पर अब मैं यह लेना नहीं चाहता। आप मुझे यह पारस नहीं, उस धन का कुछ अंश दीजिए, जिसे पाकर आप पारस जैसे अमूल्य पत्थर को तुच्छ समझने लगे।" इसके बाद ब्राह्मण ने उस पत्थर को नदी में फेंक दिया। ●

—अरुणकुमार हालदार

शेर की चोरी

एक था खरगोश । जंगल के सभी जानवर उसकी चालाकी का लोहा मानते थे । उस जंगल का राजा शेर थोड़ा शरीफ था । शिकार भी चोरी-छिपे ही करता था, ताकि जानवर उससे डरें नहीं । एक बार शेर ने हिरनी के बच्चे को चुरा लिया । मां हिरनी रोती-रोती जानवरों के पास गई । सब मिलकर खरगोश के पास पहुंचे । खरगोश सोच में डूब गया । फिर बोला—"ऐसा करो, सभा बुलाओ । उसमें शेर को भी निमंत्रित करो । लेकिन याद रहे, यह सभा मेरे घर के पास बुलाई जानी चाहिए ।"

सभा का दिन निश्चित हुआ । खरगोश के बिल के पास जंगल के जानवर इकट्ठे हुए । खरगोश एक ऐसे बड़े बिल में रहता था, जिसमें आने-जाने के दो रास्ते थे । शेर सबसे बाद में दहाड़ता हुआ आया । बोला—"मुझे सब पता है, आज मुझे यहां क्यों बुलाया गया है ! मैंने किसी का बच्चा नहीं चुराया ।"

तभी खरगोश ने अपने बिल से थोड़ा मुंह बाहर निकाला । बोला— "मुझे पता है, तुमने ही हिरनी का बच्चा चुराया है । तुम चोर हो ।"

खरगोश की बात सुन, शेर सकते में आ गया । वह दहाड़कर खरगोश की तरफ बढ़ा । तभी खरगोश अपने बिल में घुस गया । थोड़ी देर बाद खरगोश ने दोबारा शेर से ऐसा ही कह दिया । तीसरी बार शेर को चोर कहने के लिए जैसे ही खरगोश ने मुंह बाहर निकाला, शेर ने अपना मजबूत पंजा बिल के बाहर रख दिया । कहा— " जब तक तू बाहर नहीं आएगा, मैं यहां से हिलूंगा नहीं । तुझसे बदला लेकर ही रहूंगा ।"

खरगोश तो यही चाहता था । उसके बिल का दूसरा रास्ता शेर की गुफा के पास खुलता था । खरगोश शेर की गुफा में पहुंचा । वहां से हिरनी के बच्चे के साथ वह गायब हो गया । शेर पता नहीं कब तक वहां बैठा, उसका इंतजार करता रहा ।

—ज्योति किरण

लालच कुएं में

किसी जंगल में एक बिल्ली रहती थी । बहुत देर से उसे कोई शिकार नहीं मिलता था । तभी उसे एक चूहा दिखाई दिया । चूहे के पास पहुंचकर बिल्ली बोली— "चलो, अच्छा हुआ, तुम मिल गए । आज सुबह से कुछ खाने को नहीं मिला था । हालांकि तुम्हें खाकर मेरी भूख नहीं मिटेगी, मगर कुछ न मिलने से इतना ठीक है ।"

यह सुनना था कि चूहा घबरा गया । अपनी घबराहट छिपाता हुआ बोला— "मौसी, बेशक तुम मुझे खा लो । मगर मैं जिस घर में रहता हूं, उसके मालिक ने तुम्हारे डर से बहुत सारी मलाई और मक्खन छिपा रखा है । कहो तो तुम्हें वहां ले चलूं ।"

मलाई और मक्खन की बात सुन, बिल्ली के मुंह में पानी आ गया । बोली— "तू अगर जल्दी से मुझे वहां ले चले, तो मैं तुझे नहीं खाऊंगी ।"

चूहा बिल्ली को एक कुएं की जगत पर ले गया । कुएं की चरखी पर एक बाल्टी लटकी थी । दूसरी कुएं के अंदर थी । चंद्रमा की छाया कुएं के पानी में पड़ रही थी । चूहा बिल्ली को दिखाते हुए बोला— "देखो, वह रही मलाई सफेद-सफेद ।"

"मगर वहां तक पहुंचा कैसे जाए ?"—बिल्ली ने चूहे से कहा ।

"यह तो बड़ा आसान है । कहता हुआ चूहा घिर्री पर लटकी ऊपर वाली बाल्टी में बैठ गया । थोड़ी उछल-कूद की, तो घिर्री चल पड़ी । नीचे वाली बाल्टी में पानी नहीं भरा था, इसीलिए वह ऊपर आ गई ।

"बिल्ली मौसी, अब तुम भी मेरी तरह अंदर आ जाओ ।"—चूहा कुएं के अंदर से चिल्लाया । बिल्ली ने आव देखा न ताव, तुरंत दूसरी बाल्टी में बैठ गई । बस, देखते-देखते चूहे की बाल्टी ऊपर आ गई ।

"अच्छा बिल्ली मौसी, तुम आराम से बैठकर मक्खन खाओ । मैं चला ।" —कहता हुआ चूहा वहां से रफू चक्कर हो गया ।

—दीनबंधु

सही सबक

—महिमा सिंह

किसी नगर में गबडू नाम का एक मोची रहता था। वह बहुत अच्छे जूते बनाता था। जूतों के अच्छे दाम मिलते थे। उसके जूतों की बड़ी मांग रहती थी, किंतु वह समय से किसी के जूते बनाकर नहीं दे पाता था। वह आलसी था और अक्सर ग्राहक के पास देर से जूते पहुंचाया करता था।

एक दिन नगर के पादरी ने उसे अपने पैरों की नाप के जूते बनाने को कहा। वह गिरजाघर के बड़े पादरी थे। उनका बहुत सम्मान था। पादरी की आज्ञा पाकर गबडू बहुत खुश हुआ।

पादरी महोदय ने उससे पूछा— "यह जूतों का जोड़ा मुझे कब मिलेगा ?"

मोची ने उत्तर दिया— "श्रीमान जी, जोड़ा अगले शनिवार को आपके पास पहुंच जाएगा।"

पादरी ने कहा— "देखो, गबडू ! आज सोमवार है। तुम खुद ही ठीक समय निश्चित कर दो। उसी दिन जोड़ा पहुंचा देना, देर मत करना।"

गबडू ने पादरी से विनम्रता पूर्वक कहा— "श्रीमान जी, आपको जूतों का जोड़ा शनिवार की रात को अवश्य मिल जाएगा। इसमें देर नहीं होगी।"

"धन्यवाद गबडू !"—कहते हुए पादरी ने विदा ली।

गबडू ने मन लगाकर बढ़िया जूतों का जोड़ा पादरी के लिए ठीक समय पर तैयार कर लिया। फिर भी आदत के मुताबिक शनिवार को पहुंचाने के बजाए, अगले सोमवार को पहुंचाने गया। पादरी ने जूते पहने। वे एकदम उनके मन पसंद थे। बहुत ही बढ़िया थे। मोची की कारीगरी से पादरी मन ही मन बहुत खुश थे, किंतु उसकी आदत के लिए सबक सिखाना चाहते थे। पादरी ने कहा—"गबडू, तुम्हारे काम के बारे में लोग जो प्रशंसा करते हैं, तुमने अच्छे जूते बनाकर उसे सही साबित कर दिया है। किंतु तुमने मुझे एक बात से हताश किया है।"

गबडू ने क्षमा मांगते हुए विनीत मुद्रा में कहा— "साहब, जूते तो मैंने नियत समय में ही बना लिए थे, परंतु पहुंचना भूल गया था। मुझे क्षमा कर दें।"

पादरी कुछ देर सोचकर बोले— "गबडू, तुम जूता बनाने की तरह क्या बागवानी भी जानते हो ?"

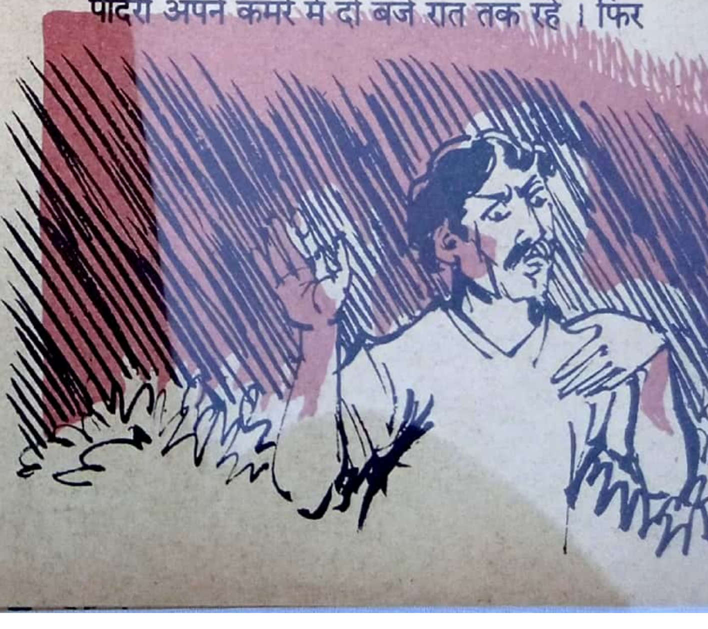
"नहीं, महोदय ! मैं बागवानी का काम नहीं जानता। परंतु मैंने कई सुंदर बगीचे देखे हैं।" —गबडू ने कहा।

पादरी बोले— "अच्छा, मेरे साथ चलो। मेरा बाग देखो। फिर बताओ, वह कैसा है ?"

वे दोनों बाग में पहुंचे। घूमते-घूमते एक छोर से दूसरे छोर तक गए। दूसरे छोर पर पहुंचते ही पादरी बोले— "मुझे एक जरूरी चीज की याद आ गई है। उस चीज को लेकर मैं अभी आता हूं। जब तक मैं न लौटूं, तुम मेरा यहीं इंतजार करना।" यह कहकर पादरी दौड़कर बाग के बाहर आए। बाग का फाटक बंद कर, बाहर से ताला लगा दिया और कुंजी जेब में डालकर घर चले आए।

गबडू वहां खड़ा बहुत देर तक पादरी का इंतजार करता रहा। धीरे-धीरे शाम ढल गई। अंधेरा बढ़ने लगा। तब गबडू फाटक के पास आया। फाटक बाहर से बंद था। उसने कई बार फाटक को खटखटाया और जोर से शोर कर पुकार भी लगाई, लेकिन कोई सुनने वाला वहां न था। बाग चारों ओर से ऊंची-ऊंची दीवारों से घिरा था। वह दीवार फांदकर भी बाहर नहीं जा सकता था।

पादरी अपने कमरे में दो बजे रात तक रहे। फिर



वह उठकर कमरे से बाहर आए। अपने नौकरों को पुकारा। मालिक की पुकार पर नौकर उपस्थित हुए। पादरी ने नौकरों से कहा—"मुझे शंका है कि बाग में कोई चोर घुसा है। लालटेन जलाकर लाओ। चलकर देखें।"

नौकर तुरंत लालटेन जलाकर ले आए। डंडे और बंदूक लेकर अपने मालिक पादरी के साथ बाग में गए। फाटक खोलकर जैसे ही वे बाग के अंदर पहुंचे, वैसे ही उजाला देखकर गबडू उनकी ओर दौड़ा। उसे आते देख, पादरी ने चिल्लाकर कहा—"यही है चोर। इसे गोली मार दो।"

डर के मारे गबडू भी जोर से चिल्लाया—"मालिक, मैं गबडू हूं। मुझे मत मारिए।"

पादरी ने लालटेन उठाकर उसके चेहरे की ओर ले जाकर बड़ी ही गंभीरता से कहा— "अरे, गबडू! तुम यहां कैसे आ गए?"

"आप कैसे भूल गए, महोदय! आपको याद नहीं कि शाम को आप ही अपने साथ मुझे यहां लाए थे और इंतजार करने को कह गए थे।" —गबडू ने कहा।

जोर से ठहाका लगाते हुए पादरी बोले—"ओह, गबडू मैं भी वैसे ही भूल गया, जैसे तुम भूल जाते हो।" फिर अपने नौकरों की ओर मुड़कर कहा— "इसे पहले भोजन कराओ। फिर इसके घर पहुंचा दो।"

उस दिन से गबडू हमेशा समय का ध्यान रखने लगा। ●



दो सौ साल

—वेदप्रकाश अरोड़ा

अनूपनगर के पास घना जंगल है। वहीं एक झील है। झील के किनारे है एक विचित्र चट्टान। काले रंग की तिकोनी चट्टान पर जगह-जगह छेद बने हुए हैं। हाथ से थपथपाने पर चट्टान से थप-धम की आवाज आती है, जैसे वह अंदर से पोली हो।

लोगों का कहना है, वह चट्टान अपने अंदर एक कहानी छिपाए है। क्या है वह कहानी— कहते हैं कभी, एक गड़रिया तिकोनी काली चट्टान के पास अपनी भेड़ें चरा रहा था। एकाएक उसे लगा, जैसे काली चट्टान में से कुछ आवाज आई हो।

पहले तो इसे मन का भ्रम समझकर वह अपने काम में लग गया। पर थोड़ी देर बाद आवाज फिर आई। गड़रिया चट्टान के पास जा खड़ा हुआ। उसने सुना—"मैं राजा वीरन्द्र प्रताप का बेटा विशाल हूं। क्या तुम्हें मेरी आवाज सुनाई देती है?"

इसके बाद गड़रिया वहां एक पल भी नहीं रुका। उसने भेड़ें इकट्ठी कीं और तेज कदमों से चल दिया। वह जल्दी-जल्दी वहां से दूर चला जाना चाहता था। गड़रिए ने यह विचित्र बात गांव के मुखिया बूढ़े समरू को बताई।

सुनकर समरू के चेहरे पर परेशानी का भाव दिखाई देने लगा। उसने कहा— "क्या तू मुझे उस जगह ले जा सकता है?"

—"बाबा, तुम खुद चले जाओ न! मुझे जाने क्यों कुछ डर लग रहा है।"

"अरे, डरता क्यों है। मैं जो साथ रहूंगा। चल तो सही। हमें पता लगाना चाहिए कि चट्टान में से आवाज क्यों आ रही है?"

कुछ देर बाद बूढ़ा समरू, गड़रिया और दो गांव वाले मिलकर काली चट्टान के पास जा पहुंचे। उस समय वहां सन्नाटा था। बस, चट्टान के सूराखों में हवा का शोर गूंज रहा था।

समरू ने बढ़कर चट्टान की सतह पर बने सूराख से



कान सटा दिया । थोड़ी देर बाद ही उसने सुना— "मैं राजा वीरेंद्र प्रताप का बेटा हूं । क्या तुम्हें मेरी आवाज सुनाई देती है ?"

अब तो समरू भी घबराकर परे हट गया । और डरी-डरी आंखों से चट्टान की ओर देखने लगा । फिर उसने कहा—"कौन वीरेंद्र प्रताप ?"

—"अरे, वाह ! तुम मेरे पिता को नहीं जानते । वह अनूप नगर के राजा हैं । मैं हूं युवराज विशाल ।"

"लेकिन . .. लेकिन. . . . राजा वीरेंद्र प्रताप तो यहां दो सौ वर्ष पहले राज करते थे । उनके बाद तो चार राजा और हो गए हैं । आजकल महाराज भद्रसेन यहां के राजा हैं ।"— समरू ने कहा ।

"क्या कहा ? दो सौ वर्ष हो गए ! तो क्या . . . तो क्या . . ." और रोने की आवाजें आने लगीं । फिर सन्नाटा छा गया ।

"आप इस चट्टान में कैसे पहुंचे ? बाहर आकर बात कीजिए ।"— समरू ने कहा ।

"मैं इस चट्टान से बाहर नहीं आ सकता ! हां, अपनी कहानी जरूर सुना सकता हूं। क्या तुम महाराजा को यहां बुला सकते हो ?"

समरू और बाकी गांव वाले वहां से चले आए । उस रात पूरे गांव में भूत-प्रेतों की चर्चा होती रही । उसके बाद कुछ और लोगों ने भी काली चट्टान से निकलने वाली विचित्र आवाज सुनने की बात कही । फिर यह कैसे होता कि बात राजा के कानों तक न पहुंचती ।

यह विचित्र घटना सुनकर राजा भद्रसेन भी चकित रह गए । तरह-तरह की बातें सोचने लगे । पूछने पर उनके बूढ़े मंत्री ने बताया— "महाराज, यह तो आप भी जानते हैं कि दो सौ वर्ष पहले यहां आपके पुरखे महाराज वीरेंद्र प्रताप राज करते थे । उन्हीं का बेटा था राजकुमार विशाल । कहते हैं कि राजकुमार विशाल एक दिन अचानक गायब हो गया था । बहुत ढूंढ़ने पर भी उसका कुछ पता नहीं चला था । हमें चलकर देखना चाहिए कि काली चट्टान से आवाज क्यों आती है ? कहीं कोई चोर-ठग तो नहीं, जो किसी सुरंग के रास्ते उस चट्टान में पहुंच गया हो । और अब इस तरह आपको धोखा देना चाहता हो ।"

राजा को भी बूढ़े मंत्री की बात ठीक लगी । अगले दिन राजा भद्रसेन सैनिकों की टुकड़ी के साथ काली चट्टान के पास जा पहुंचे । उन्होंने चट्टान के पास जाकर कहा— "मैं राजा भद्रसेन आ गया हूं । तुम भूत-प्रेत या ठग जो भी हो, मुझसे बात करो ।"

कुछ देर सन्नाटा छाया रहा । फिर रोने की आवाज सुनाई देने लगी— "मैं राजा वीरेंद्र प्रताप का बेटा विशाल हूं । क्या सच कहते हो, मेरे पिता अब इस धरती पर नहीं हैं । वह दो सौ वर्ष पहले राज्य करते थे यहां ।"

"हां, राजा वीरेंद्र प्रताप मेरे पुरखे थे । आपका नाम भी मैंने सुना है । कहते हैं आप अचानक अदृश्य हो गए थे । फिर कभी नहीं लौटे ! यह क्या रहस्य था ?"— राजा भद्रसेन ने पूछा ।

"एक भयानक भूल का दंड मिल रहा है मुझे । लो सुनो मेरी कहानी ! मैं भूत-प्रेत नहीं, राजकुमार विशाल ही हूं ।"

फिर काली चट्टान में बंद राजकुमार विशाल अपनी कहानी सुनाने लगा ।

"मुझे शिकार का बेहद शौक था । हर दिन जंगल में शिकार को निकल जाता । शिकार से मुझे आनंद मिलता था । एक दिन मैं वन में झील के किनारे बैठा

था । तभी मुझे लगा, जैसे आकाश में कोई बड़ा परिंदा उड़ रहा हो । मुझे चमकीले पंख दिखाई दिए ।

उसी समय मैंने तीर चला दिया । तीर आकाश में गया, तो जोर की आवाज हुई । अंधेरा छा गया । आकाश से सुनहरे पंख गिरने लगे । धरती पर गिरते ही पंखों में आग लग जाती । मैं घबराकर राजधानी लौट आया । मेरी समझ में न आया कि वह परिंदा कौन-सा था, जो मेरे तीर से घायल हो गया था ?''

''फिर क्या हुआ ?''—राजा भद्रसेन ने पूछा ।

चट्टान से आवाज आई— ''उसके बाद एक रोज मैं वन में घूम रहा था । साथी इधर-उधर थे, तभी मैंने घोड़े की टापों की आवाज सुनी । एक घोड़ा दौड़ता हुआ आया और मेरे पास रुक गया । घोड़े ने मनुष्य के स्वर में कहा— ''राजकुमार, तुम तो बहुत अच्छे शिकारी हो । आओ, तुम्हें घायल देश ले चलूं ।'' मैं कुछ कहता, इससे पहले ही मैंने अपने को घोड़े की पीठ पर बैठा पाया । घोड़ा तेजी से दौड़ने लगा । मैंने उसे रोकना चाहा, तो भी वह नहीं रुका । घना वन पार करता हुआ एक गुफा में चला गया और वहां से एक विचित्र वन में जा निकला ।''

सैनिक और राजा ध्यान से वह विचित्र कहानी सुन रहे थे ।

चट्टान से फिर आवाज आई— ''वहां परिंदों का शोर गूंज रहा था । वे पंख फड़फड़ा रहे थे । मैंने देखा, सब परिंदों के पंख टूटे हुए थे । तभी किसी ने कहा— 'राजकुमार विशाल, ये सब वे परिंदे हैं, जो तुम्हारे हाथों घायल हुए हैं । तुम इस समय परी लोक में हो । तुमने शिकार के लोभ में आकाश में उड़ती हमारी रानी को भी अपने तीर से घायल कर दिया । यह अच्छी बात नहीं ।''

मैंने कहा— ''शिकार मेरा शौक है । राजा तो शिकार खेलते ही हैं । मैं इसे कोई गलत काम नहीं समझता ।'' मेरे इतना कहते ही सब परिंदे पंख फड़फड़ाने लगे । उन्होंने मुझे घेर लिया । मैं घबराकर भाग खड़ा हुआ । भागता रहा, भागता रहा, फिर मुझे होश आया, तो मैंने अपने को इस चट्टान में कैद पाया ! अब मैं सुन रहा हूं कि मेरे पिता को मरे दो सौ वर्ष हो गए । परी के शाप से ही मैं इतने लम्बे समय तक बेहोश रहा ! यही मेरी कहानी है ।''— फिर चट्टान से आवाज आनी बंद हो गई ।

राजा भद्रसेन ने कहा— ''आप भी मेरे पुरखे हैं । मैं आपको इस चट्टान की कैद से मुक्त कराऊंगा ।'' और उन्होंने सैनिकों को वह चट्टान तोड़ने का आदेश दिया । पर सैनिक लाख कोशिश करके भी चट्टान को नहीं तोड़ पाए ।

कुछ देर बाद चट्टान के अंदर से राजकुमार विशाल की आवाज आई— ''भद्रसेन, परियां नहीं चाहतीं कि मैं कैद से बाहर आऊं । मुझे इसी तरह रहने दो । वैसे भी दो सौ वर्ष पुराने आदमी का नई दुनिया में आना ठीक नहीं रहेगा । बस, मुझे यही संतोष है कि मैंने अपनी बात कह दी । अगर कर सको, तो अपने राज्य में शिकार पर पाबंदी लगा दो । शायद इससे मेरा अपराध कुछ कम हो जाए ।''

चट्टान से आवाज आनी बंद हो गई । राजा भद्रसेन ने बहुत पुकारा, पर कोई उत्तर न मिला ।

राजा भद्रसेन भारी मन से राजधानी लौट आए । अगले ही दिन उन्होंने अपने राज्य में शिकार खेलने पर प्रतिबंध लगा दिया । उसके बाद वह अनेक बार उस काली चट्टान तक गए । विशाल का नाम लेकर आवाजें भी दीं, पर उत्तर नहीं मिला ।



चटपट

● मरीज— डाक्टर साहब, आपने परसों का समय दिया है। अगर कल तक मैं मर गई ?

डाक्टर— तो परसों मत आइएगा।

● रीता— क्या मैं बहुत सुंदर दिखती हूं ?

गीता— तुम्हारी नजर कमजोर हो गई है। चश्मा ले लो।

● बेटा— मां, एक टिकट पचहत्तर रुपए का आएगा।

बुढ़िया— अरे, दो-चार खिड़कियों पर पूछ। शायद कुछ कम हो जाए।

● जज— तुम अदालत के बाहर भी तो फैसला कर सकते थे।

अपराधी— कोशिश तो यही कर रहा था, मगर पुलिस आ गई।

● मुन्नू— बाहर बारिश हो रही है। पूरी सड़क पर पानी भरा है।

चुन्नू— अच्छा हुआ, हमारा घर सड़क के ऊपर नहीं है।

● मां (परीक्षा परिणाम देखकर)— कक्षा में सबसे पीछे हो, इसकी मुझे बड़ी चिंता है।

बेटा— नहीं, मां। सबसे आगे की सीट पर बैठता हूं।

● अभिनेता— मेरा अभिनय इतना अच्छा था कि हर आदमी रो पड़ा।

मित्र— सचमुच, हर एक का सिर दर्द से फटा जा रहा था।

● ट्रेफिक पुलिस वाला— तुम्हें पता है, लापरवाही से गाड़ी चलाने के कारण मैंने तुम्हें कितनी बार पकड़ा है ?

कार वाला— मुझसे क्यों पूछते हो ? अपना रिकार्ड देखो।

● अफसर— हमें आपके बेटे को गलत बातों के बारे में बताना होगा।

पिता— नहीं-नहीं, आप उसे सिर्फ सही बातें बताएं। गलत तो वह खुद सीख लेगा।

● वीनू— तुम्हारे पिता को नाश्ते में क्या पसंद है ?

नीनू— अखबार।

● रमेश— तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

सुरेश— शुक्र है। तुम पहले व्यक्ति हो, जिससे मैं उधार मांगने आया हूं और उसे प्रसन्नता हुई है।

● रिंकी— जब तुम्हें गुस्सा आता है, उसे दूर करने का क्या उपाय करती हो ?

पिंकी— मैं नहीं। उपाय तो वह करता है, जिस पर मुझे गुस्सा आता है।

● पादरी— रात में भगवान को याद करते हो, दिन में नहीं। ऐसा क्यों ?

बच्चा— क्योंकि दिन में डर नहीं लगता।

● उच्च अधिकारी— आप बिलकुल मूर्ख हैं।

दूसरा अधिकारी (मुसकराकर)— बिलकुल तो नहीं, उसके करीब जरूर हूं।

● पिता—बरामदे में रखी कुर्सी किसने तोड़ दी ?

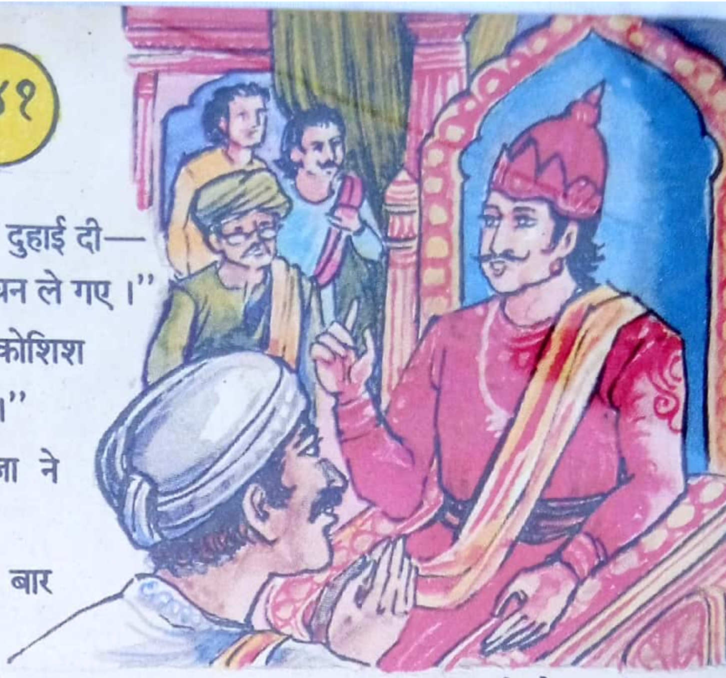
बेटा—पिताजी, जिसको चोट लगी हो उससे पूछिए।



तेनालीराम

२४१

रंगे चोर



राजा कृष्णदेव राय के दरबार में विजयनगर के सेठ काशीराम ने दुहाई दी—"महाराज, मैं लुट गया। रात को चोर तिजोरी का ताला तोड़कर सारा धन ले गए।"

राजा कृष्णदेव राय ने पूछताछ की। कोतवाल ने बताया—"हम कोशिश कर रहे हैं, लेकिन अभी तक चोरों का कुछ पता नहीं लगा सके।"

"जैसे भी हो, चोर जल्दी पकड़े जाने चाहिएं।"—राजा ने आदेश दिया।

उसी रात चोरों ने एक और धनी व्यक्ति के यहां चोरी की। इस बार भी चोर नहीं पकड़े गए।

अब तो आए दिन कोई न कोई चोरी होती। चोरों का दुस्साहस बढ़ता जा रहा था। एक बार किसी दरबारी के यहां भी चोरी हुई।

राजा कृष्णदेव राय ने दरबारियों को लताड़ा। कहा—"क्या आप में से कोई चोरों को पकड़वाने का जिम्मा नहीं ले सकता?"

तभी तेनालीराम उठ खड़ा हुआ। बोला—"महाराज, आप निश्चिंत रहिए। आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।"



उसी दिन तेनालीराम शहर के एक प्रमुख जौहरी के यहां गया। उससे कुछ बात की। फिर घर आ गया।

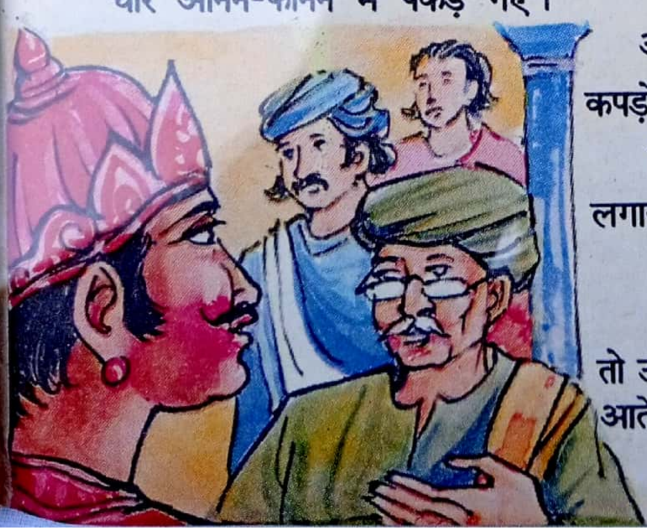
अगले दिन जौहरी ने बहुमूल्य रत्नों की प्रदर्शनी लगाई। इतने सुंदर और बेशकीमती थे वे रत्न कि सारा शहर देखने आया। रात में जौहरी ने सारे रत्न एक तिजोरी में बंद करके ताला लगा दिया।

आधी रात को चोर आ धमके। ताला तोड़कर उन्होंने सारे रत्न थैली में भर लिए। फिर बाहर निकल आए।



जैसे ही चोर बाहर आए, जौहरी को चोरी का पता चल गया। उसने शोर मचा दिया। गली-मुहल्ले के लोग भी जाग गए। तेनालीराम भी सिपाहियों के साथ वहां आया। बोला—"जिनके हाथ और कपड़े रंगे हुए हैं, वे ही चोर हैं। पकड़ लो। भागने न पाएं।"

चोर आनन-फानन में पकड़े गए।



अगले दिन चोरों को दरबार में पेश किया गया। राजा कृष्णदेव राय ने चोरों के कपड़ों पर रंग लगा देखा, तो पूछा—"यह क्या तेनालीराम?"

तेनालीराम बोला—"महाराज, चोरों को पकड़ने के लिए तिजोरी पर ताजा रंग लगाया गया था। तभी ये पकड़े गए।"

—"लेकिन तुम सिपाहियों को भी तो वहां तैनात कर सकते थे?"

"महाराज, हो सकता था, चोर अधिकारियों से मिले होते। यदि ऐसा होता, तो उन्हें पहले ही भनक लग जाती। फिर वे रंगे हाथ कैसे पकड़ में आते?"—तेनालीराम मुसकराया।

राजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम की भूरि-भूरि की प्रशंसा की।



तलवार का वार

—सोमाहुति

राम दुर्ग के राजा मनेंद्र बड़े धर्मात्मा थे। भगवान के भक्त इतने कि बिना पूजा किए, अन्न-जल ग्रहण नहीं करते थे।

एक बार उन्हें किसी युद्ध पर जाना पड़ा। भगवान की पूजा में विघ्न न पड़े, यह सोचकर उन्होंने अपने आराध्य की एक स्वर्ण प्रतिमा बनवाई। उसे युद्ध के मैदान में साथ ले गए।

आक्रमणकारी राजा छल-बल में कुशल था। एक दिन उसके गुप्तचरों ने उसे सूचना दी— मनेंद्र रोज सूर्योदय से पूर्व एक विशाल तम्बू में अकेला ही पूजा करता है। उस समय उसकी रक्षा पर तैनात सैनिक तम्बू से बाहर चले जाते हैं। यदि किसी तरह उन सैनिकों को वहां से दूर हटा दिया जाए, तो राजा को सरलता से मारा जा सकता है।

आक्रमणकारी राजा के गुप्तचर वहां मौजूद थे। विचार-विमर्श कर, उसने गुप्तचरी के बड़े अधिकारी को आदेश दिया—''कल अमावस है। अपने सारे गुप्तचरों को मनेंद्र के तम्बू के आसपास लगा दो। वह बचने न पाए।''

अमावस की रात आई। पौ फटने तक आक्रमणकारी राजा के चुने हुए गुप्तचर मनेंद्र के तम्बू के आसपास छिप गए। पूजा करने का समय हुआ।अवसर पा, आक्रमणकारी राजा का प्रधान गुप्तचर तलवार लेकर मनेंद्र के तम्बू की ओर लपका। तम्बू के दरवाजे पर पहुंच, वह ठिठक गया। दरवाजे पर एक किशोर चोबदार खड़ा था।उसने तलवार उठाई और चोबदार पर वार कर दिया।

चोबदार का सिर धड़ से अलग हो गया। इसके बाद गुप्तचर ने दरवाजा पार किया। मगर वह अचानक ठिठक गया। उसके सामने वही चोबदार फिर खड़ा था। फिर उसने दोबारा तलवार का भरपूर वार किया। किंतु उसे लगा, जैसे उसकी तलवार चोबदार के शरीर के आर-पार जाती हुई भी उसे काट नहीं पा रही है।

वह वहां से भागने ही वाला था, तभी राजा मनेंद्र बाहर आए। उनके हाथ में प्रसाद का थाल था। उनके बाहर आते ही चोबदार गायब हो गया।

''कौन हैं आप ?''—राजा मनेंद्र ने गुप्तचर से पूछा। फिर स्वयं ही बोले—''आप कोई भी हों, लीजिए प्रसाद पाइए।''

राजा मनेंद्र ने गुप्तचर की हथेली पर प्रसाद रखा, तो गुप्तचर राजा के चरणों पर गिर पड़ा। प्राणों की भीख मांगते हुए उसने सारी घटना सुना दी।

राजा चुपचाप सुनते रहे। उनकी आंखें बार-बार डबडबा जाती थीं। गुप्तचर ने अपनी बात समाप्त की, तो राजा ने उसे उठाया। बोले—''तुम्हारा कोई अपराध नहीं। तुम तो राजा के सेवक हो, मगर आज यह सिद्ध हो गया कि जहां धर्म होता है, विजय वहीं होती है। इसीलिए स्वयं प्रभु को मेरी रक्षा के लिए आना पड़ा।'' राजा मनेंद्र वह युद्ध जीत गए। ●

सनकी मुखिया

—सुशीलकुमार वर्मा

प्रशांत महासागर में एक द्वीप था। उसी द्वीप पर रहता था होरी कबीला। कबीले की सत्तर बस्तियों पर मुखिया हुमेल शासन करता था। बड़ा निरंकुश और सनकी था मुखिया। सभी उसकी आदतों से तंग थे। द्वीप की सारी हीरा-खदानें उसने हथिया रखी थी। एक रात उसने सोते-सोते एक विचित्र आवाज सुनी— 'हुमेल, तू जागता है या सोता है? मैं देवताओं की ओर से तुम्हें चेतावनी दे रहा हूं। तूने यदि एक सप्ताह के अंदर अपनी सम्पत्ति कबीले में नहीं बांटी, तो तू मर जाएगा।'

सवेरे हुमेल उठा, तो बेहद परेशान। उसने सत्तर बस्तियों के सत्तर पंचों को बुलाया। कहा—"सारे गांवों में मुनादी करा दो। कल से मैं अपनी सारी सम्पत्ति बांटना शुरू कर दूंगा।"

अगले दिन मुखिया काफी सम्पत्ति लेकर गांव से बाहर आया। वहां सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा थी। मचान पर बैठ, उसने सचमुच अपनी सम्पत्ति लुटानी शुरू कर दी। इस लूट के लिए दिनोंदिन भीड़ बढ़ती गई। यहां तक कि छठे दिन हुमेल की सेना के सारे सिपाही भी तीर-कमान घरों पर छोड़, मैदान में आ डटे। अचानक गांव की ओर से एक बवंडर-सा उठा। अस्त्र-शस्त्रों से लैस किसी अनजान कबीले ने मैदान में जमा भीड़ को चारों ओर से घेर लिया।

सम्पत्ति लेने वाले सभी लोग निहत्थे थे। जान बचाने की चिंता में उन्होंने लूटी हुई सम्पत्ति भी फेंक दी। जब तक मुखिया को होश आया, वह सशस्त्र सैनिकों से घिर चुका था। अपरिचित आदिवासी सैनिकों ने उसे रस्सियों से बांध दिया। फिर उसे गांव में अपने सरदार के सामने ले गए।

हुमेल के अचरज का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि वह सरदार और कोई नहीं, उसी के कबीले के एक पंच का लड़का है।

"तुम!"—हुमेल क्रोध से चिल्लाया।

"चुप रहो।"— सरदार बना लड़का बोला—"याद रखो। इस समय तुम हमारी गिरफ्त में हो। तुम्हारे सारे हथियारों के साथ-साथ तुम्हारे गांव और महल पर हमारा कब्जा है।"

हुमेल मन मसोसकर रह गया।

तभी सरदार बोला—"हुमेल, तुम अभी भी कबीले के मुखिया बने रह सकते हो। मगर उसके लिए तुम्हें अपनी सनक और निर्दयता छोड़नी होगी।"

हुमेल को सचमुच आज अपने इन दोनों अवगुणों पर दुःख हो रहा था। उसने तुरंत यह बात मान ली। सरदार ने उसे स्वतंत्र कर, फिर से गद्दी पर बैठा दिया। बोला—"हमें तुमसे नहीं, तुम्हारे अवगुणों से बदला लेना था। जो कुछ हमने किया, तुम्हारी भलाई के लिए किया।" ●





थैली भरा धन

— अशोक कुमार बेनीवाल

पुरानी बात है। किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था। वह बड़ा ही संतोषी था। उसकी पत्नी सीधी-सादी थी। वे दोनों ही भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। काफी समय तक उनके कोई बच्चा नहीं हुआ। लेकिन कुछ दिन बाद उनके घर एक फूल-सी बच्ची का जन्म हुआ।

ब्राह्मण सुबह जल्दी उठता। स्नान आदि से निवृत्त होकर भगवान कृष्ण के मंदिर में चला जाता। वहां दोपहर तक भजन-कीर्तन चलता। बीच में थोड़े समय के लिए घर आ जाता। भोजन करने के बाद देर रात तक मंदिर में ही रहता। भगवान की पूजा से ब्राह्मण को अपूर्व संतोष मिलता था। ईश्वर की कृपा से जो मिल जाता, उसी से ब्राह्मण परिवार संतुष्ट रहता था। इस प्रकार उनका जीवन सुखपूर्वक कट रहा था।

ब्राह्मण की बेटी युवा हो चली थी। ब्राह्मणी को उसकी शादी की चिंता सताने लगी। चिंता इसलिए थी कि उनके पास शादी के लिए धन नहीं था। वह इसी चिंता में घुल-घुलकर दुबली होती गई। जब कभी ब्राह्मण से इस बारे में बात करती, वह निश्चिंत हो उत्तर देता—"भगवान सब अच्छा करेंगे। उन पर भरोसा रखो।"

पति के उत्तर को सुन-सुन ब्राह्मणी ऊब चुकी थी। उसके बहुत कहने पर ब्राह्मण ने एक योग्य वर

खोजकर सगाई कर दी। विवाह की तिथि भी निश्चित हो गई। अब तो ब्राह्मणी की चिंता और भी बढ़ गई। "शादी कैसे करेंगे ?"—ब्राह्मणी ने पति से पूछा। उसने कहा— "ठाकुर जी से निवेदन कर दूंगा।"

दूसरे दिन ब्राह्मण ने भगवान कृष्ण की प्रतिमा के आगे सिर झुकाकर कहा— "प्रभो, आप तो सर्वज्ञानी हैं। आपसे कुछ भी छिपा नहीं है। मुझे पुत्री के विवाह के लिए धन की आवश्यकता होगी। आपको ही कुछ प्रबंध करना होगा।" फिर उसने हिसाब लगाया कि कुल कितना खर्च बैठेगा। तीन हजार पांच सौ रुपयों के खर्च का अनुमान था। उसने एक प्रार्थना पत्र लिखकर भगवान से यह धन मांगा। वह पत्र श्रीकृष्ण के चरणों में रख दिया।

उसके बाद रोजाना की तरह भगवान की पूजा-अर्चना में तल्लीन हो गया। शाम को जब घर पहुंचा, तो पत्नी बहुत प्रसन्न थी। उसने पत्नी से उसकी खुशी का कारण पूछा। पत्नी ने कहा— "आज अपनी बेटी के विवाह के लिए धन का प्रबंध हो गया। आपके पीछे एक आदमी चार हजार रुपयों की थैली मुझे यह कहकर दे गया कि मंदिर के मालिक ने यह पैसा आपकी बेटी की शादी के लिए भिजवाया है।" ब्राह्मण समझ गया कि यह सब भगवान की कृपा का ही फल है।

ब्राह्मण ने अपनी बेटी का विवाह उतने ही रुपयों में कर दिया, जितने उसने प्रार्थना पत्र में लिखे थे। शेष रुपए उसी थैली में रख, शादी के बाद इस प्रार्थना पत्र के साथ भगवान जी के मंदिर में रख दिए— 'प्रभु, आपकी कृपा से बेटी का विवाह हो गया है। शेष राशि आपकी सेवा में वापस रख रहा हूं।'

ब्राह्मण की दिनचर्या पहले की तरह चलती रही। पड़ोसियों को इस बात से ईर्ष्या हुई। वे सोचते थे, इस गरीब ब्राह्मण ने बिना धन कमाए, अपनी बेटी की शादी इतनी धूमधाम से कैसे कर दी? उन्हें शंका हुई, कहीं इसने चोरी तो नहीं की? पड़ोसियों ने इस बात की शिकायत राजा से की। उन दिनों राजा के पास चोरी की कोई शिकायत नहीं आई थी। पड़ोसियों ने कहा— "महाराज, आप अपना खजाना देख लें। वहां तो कोई गड़बड़ी नहीं हुई ?"

राजा ने जांच करवाई। खजाने की एक तिजोरी में ब्राह्मण के लिखे हुए दोनों पत्र मिले। साथ ही तीन हजार, पांच सौ रुपए भी कम मिले। राजा को बहुत क्रोध आया। उसने ब्राह्मण को पकड़ लाने के लिए कुछ सैनिक भेजे।

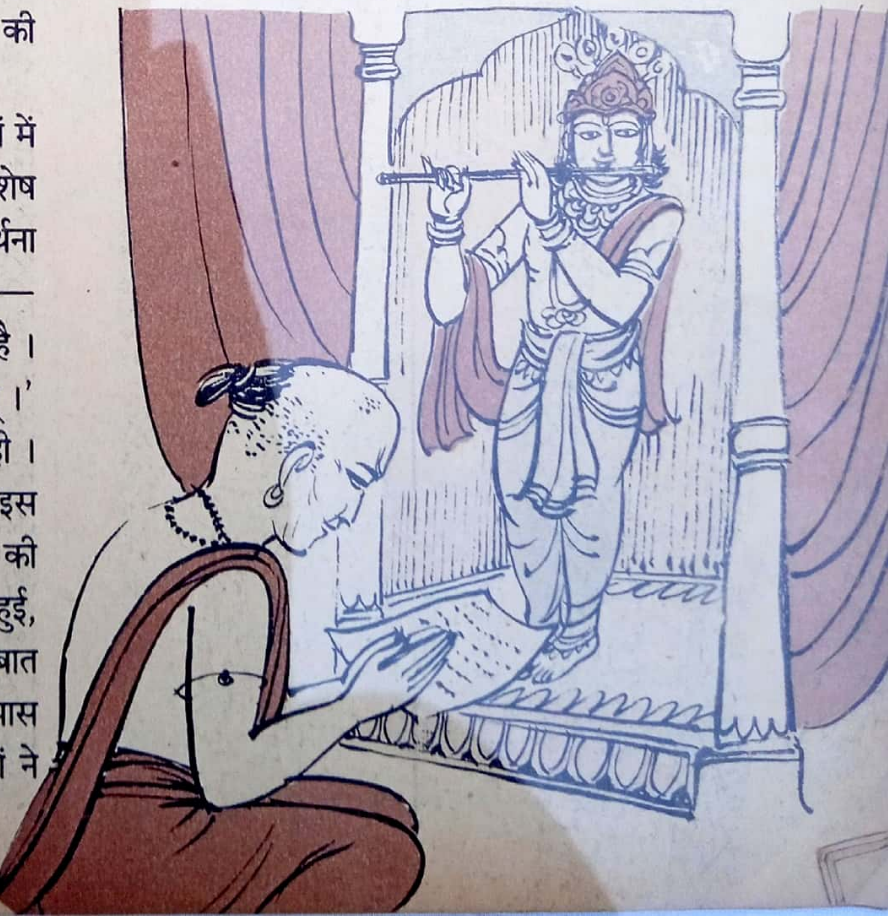
अब पड़ोसी बहुत प्रसन्न हुए। राजा के सैनिक ब्राह्मण को पकड़ ले गए। मौहल्ले में तरह-तरह की चर्चाएं होने लगीं। ब्राह्मणी बहुत दुखी हुई। वह मन ही मन स्वयं को कोसने लगीं— 'मैंने ही पति से पैसों के लिए कहा था।'

उधर ब्राह्मण राजा के पास पहुंचा। राजा ने कठोर स्वर में पूछा— "क्या तुम्हीं ने ये दोनों प्रार्थना पत्र लिखे हैं ?"

ब्राह्मण ने निर्भीकता से कहा—"हां, महाराज।" साथ ही उसे आश्चर्य भी हुआ, ये पत्र राजा के हाथ कैसे लग गए?

राजा ने फिर पूछा— "क्या रुपए भी तुम्हें ही मिले ?"

ब्राह्मण से बिना हिचक स्वीकार कर लिया। अब



तो राजा आपे से बाहर हो गया। उसने बिना कुछ और पूछे, ब्राह्मण को जेल में भेज देने का आदेश दे दिया। स्वयं उठाकर विश्राम के लिए महल में चला गया। कोतवाल जैसे ही ब्राह्मण को जेल की ओर ले जाने लगा, उसी समय एक तेजस्वी पुरुष ने कठोर स्वर में उसे रोका। कहा— "इस ब्राह्मण को जेल मत भेजो। मैं राजा से मिलकर आता हूं।"

उस पुरुष की वाणी को सुन, कोतवाल के हाथ अपने आप रुक गए। उसने उस पुरुष को महल के अंदर जाने से भी नहीं रोका। ब्राह्मण ठाकुर जी का ध्यान कर, वहीं बैठ गया।

वह तेजस्वी पुरुष महल में गया। तब तक राजा शयन कक्ष में पहुंच चुका था। वह लेटने ही वाला था, तभी उसे तेजस्वी पुरुष की कड़कती आवाज सुनाई दी— "अरे, मूर्ख राजा ! तुम क्या कर रहे हो ?"

राजा ने चारों ओर देखा, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। उसने पुनः वही बात सुनी। राजा भयभीत हो गया। डरे हुए स्वर में पूछा— "आप कौन हैं ? मुझे दिखाई क्यों नहीं दे रहे ?"

—"तुम नहीं जानते ? मैं तुम्हारा इष्टदेव हूं।"

अब राजा डर गया। भयभीत स्वर में बोला— "क्या आज्ञा है भगवन ! मुझसे ऐसी क्या गलती हो गई ?"

—"तुमने मेरे भक्त को कष्ट दिया है। तुम्हें ज्ञात नहीं, उस ब्राह्मण ने प्रार्थना पत्र मुझे लिखा था। मैंने उसे चार हजार रुपए दिए। उसने बची हुई रकम लौटा भी दी। फिर भी तुमने उसे दंड दिया !"

राजा ने क्षमा मांगी।

फिर आवाज आई— "अच्छा, आज से ब्राह्मण की आजीविका का प्रबंध करो। उसे तुरंत सम्मान पूर्वक घर पहुंचा दो।"

राजा ने ब्राह्मण से आकर क्षमा मांगी। फिर उसे पालकी में बैठाकर घर भेज दिया। सदा के लिए उसकी आजीविका का प्रबंध भी हो गया। ब्राह्मणी ने मंदिर में आकर भगवान से कहा— "प्रभु, आपने मेरी लाज रख ली। आप सचमुच दीनों के नाथ हैं।" ●

श्यामा रूठ गई

— डा. ज्ञानेश्वरी वाजपेयी

एक गांव में मनकी चाची नाम की एक महिला रहती थीं। बड़ी दयालु और अच्छे स्वभाव की थीं। उनका एक बेटा था। वह शहर में नौकरी करता था। पुत्रवधू मनकी चाची के पास ही अपने तीन बच्चों के साथ रहती थी।

मनकी चाची को जानवरों से बहुत प्रेम था। उन्होंने अपने घर एक दुधारू गाय पाल रखी थी। वह गाय के खाने-पीने का बहुत ध्यान रखती थीं। गाय को चाची अपने परिवार का ही अंग समझती थीं।

वह गाय बांधने के स्थान को खूब साफ-सुथरा और सूखा रखतीं। गोबर तुरंत हटा देती थीं। अपने हाथों ही सानी-पानी भी करती थीं।

चाची ने इन कामों के लिए अलग से कोई नौकर नहीं रखा हुआ था। उनका कहना था— "नौकर तो पैसे का सेवक होता है।" गाय का नाम मनकी चाची ने श्यामा रखा था। श्यामा बस बोल नहीं सकती थी। पर वह इतनी समझदार थी कि उसे पशु कहते नहीं बनता था। श्यामा भी चाची को बहुत प्यार करती थी।

एक बार चाची को आवश्यक काम से दो दिन के लिए कहीं जाना था। उन्होंने श्यामा की सेवा का काम बहू को सौंप दिया। फिर कहा— "बहू, श्यामा का ठीक से ख्याल रखना।"

बहू ने श्यामा को भूसा-चोकर-पानी दे दिया। जब वह थान की सफाई करने पहुंची, तो उसे गोबर उठाना अच्छा नहीं लगा। चाची ने बहू से पहले कभी यह काम कराया भी नहीं था। पर इस समय तो करना ही था। किसी प्रकार बहू सफाई करने लगी। इसी बीच श्यामा ने मक्खियां भगाने के लिए अपनी पूंछ फटकारी, तो बहू की साड़ी पर गोबर के कुछ छींटे पड़ गए। बहू को बहुत बुरा लगा। उसने दो-चार झाड़ू श्यामा को दे मारीं।

मनकी चाची ने तो कभी गाय को दूब की छड़ी

से भी नहीं छुआ था । इसलिए श्यामा को बहू का व्यवहार खराब लगा।वह सोचने लगी—'बहू को मेरी सेवा बुरी लगती है, इसलिए यहां नहीं रहूंगी।' और रस्सी तुड़ाकर बाहर निकल गई । श्यामा घर से निकली, तो उसका छोटा बछड़ा भी पीछे-पीछे चल दिया । श्यामा और बछड़ा घने वन में जा पहुंचे । दो दिन तक वे दोनों जंगल में घास-पात खाकर भूख मिटाते रहे ।

इधर बहू बहुत प्रसन्न थी— 'चलो, गंदा काम करने से फुरसत मिली । सास जी आएंगी, तो कह दूंगी कि श्यामा अपने आप रस्सा तुड़ाकर भाग गई ।'

दो दिन बाद मनकी चाची लौटीं, तो उनको गाय का थान सूना दिखा । बहू ने कहा— "मां जी, मैंने आपकी तरह श्यामा की बड़ी सेवा की । श्यामा ने मुझे अपनी पूंछ और सींगों से खूब डराया, फिर रस्सा तुड़ाकर जाने कहां चली गई ?"

मनकी चाची की समझ में बहू की बात नही आई । श्यामा इतनी सीधी, भली गाय थी कि बच्चे हर समय उसके पास खेलते रहते थे । वह समझ गई कि जरूर बहू से ही कोई गड़बड़ हुई है । ऐसा सोचकर वह गाय को ढूंढ़ने निकल पड़ीं । थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह 'श्यामा, श्यामा' की आवाज भी लगाती जातीं । श्यामा ने चाची की आवाज सुन ली थी, पर वह जंगल में मौन खड़ी रही ।

मनकी चाची को श्यामा गाय दिखाई दे गई । श्यामा को देखकर उनके जी में जी आया । वह श्यामा की पीठ पर हाथ फेरने लगीं । फिर उससे घर चलने को कहा । श्यामा ने घर लौटने की बात पर गरदन हिला दी । चाची उससे निरंतर घर चलने को कहती रहीं, पर वह इंकार की मुद्रा में सिर हिलाती रही । चाची समझ गई कि बहू ने श्यामा को जरूर सताया होगा ।

"श्यामा, तेरे बिना मैं भी घर नहीं जाऊंगी । यहीं तेरे साथ जंगल में पड़ी रहूंगी । तेरा सूना ठिया मुझे अच्छा नहीं लगता । तू मेरी सहेली है । घर चल । आगे से मैं तुझे बहू के भरोसे नही छोड़ूंगी । बहू तुझसे अपनी भूल की क्षमा मांगेगी ।"— चाची ने श्यामा से कहा ।

बहुत मनाने पर श्यामा चाची के साथ लौट आई । घर पहुंचकर श्यामा को चाची ने उसके खूंटे से बांधा । चाची ने कहा— "बहू, गाय हमारी माता है । यह हमें दूध देती है । इसके बछड़े के हिस्से का दूध पीकर तुम्हारे बच्चे पलते हैं । बछड़े बड़े होकर खेती में तुम्हारी सहायता करते हैं । गोबर के कंडों पर खाना पकता है । गोबर की खाद खेतों में पड़ती है । जमीन उपजाऊ होती है । दूध-दही-मिठाई सब दूध से ही तो बनते हैं । तुम्हें श्यामा के साथ ऐसा खराब व्यवहार



नहीं करना चाहिए था । चलकर उससे क्षमा मांगो ।"

बहू को अब सचमुच अपनी भूल मालूम हुई । वह श्यामा के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गई । बोली— "मां, मुझसे भूल हो गई । मैंने तुम्हारा अपमान किया है । मुझे क्षमा कर दो । अब ऐसी गलती कभी नहीं होगी ।"

श्यामा ने यों सिर हिलाया, मानो बहू को क्षमा कर दिया हो । उसके बाद से बहू ने फिर कभी पशुओं के साथ बुरा व्यवहार नहीं किया । श्यामा की तो वह बहुत ही सेवा करने लगी थी । ●

पुरस्कृत कथाएं :

बदल गया बबलू

बबलू एक शैतान लड़का था। इस कारण सब उससे परेशान रहते थे। दूसरों को तंग करने में उसे आनंद आता था। बबलू के माता-पिता का देहांत हो जाने के बाद, दादी ने उसे पाला-पोसा था। दादी बहुत नेक थी। वह हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहती थी।

बबलू नहीं चाहता था कि दादी किसी की सहायता करे। वह सोचता—'कितना आनंद आए, यदि बिना काम किए रहने को महल, खाना अच्छा और अच्छे वस्त्र मिल जाएं!'

एक दिन बबलू घूमते-घूमते एक जंगल में पहुंचा। तेज धूप थी, इसलिए वह एक पेड़ की छाया में बैठ गया। बैठे-बैठे उसे झपकी आ गई। उसने सपने में देखा, वह ऐसे लोगों के बीच में है, जिनका कद बहुत ही छोटा है। वहां के ये नन्हे-नन्हे लोग नाच-गा रहे थे। एक ओर राजमहल था। उसके चारों ओर सैनिक थे। उन सैनिकों के हाथों में बंदूकें थीं।

बबलू ने देखा, थोड़ी देर में राजमहल से राजा रथ में बैठकर निकला। राजा छोटा-सा था और उसका रथ भी। राजा को बाहर आया देख, नन्हे-नन्हे सैनिक उसे बंदूकों की सलामी देने लगे। जो लोग नाच-गा रहे थे, वे राजा का जय-जयकार करने लगे। तभी सामने से एक छोटी-सी बुढ़िया रोती-पीटती आई। उसे रोते देख, राजा रथ से उतर पड़ा। बोला—"मां, तुम मुझे अपनी तकलीफ बताओ।" बुढ़िया बोली—"महाराज, मैं बूढ़ी हो चुकी हूं। सिवाय एक पोते के, दुनिया में मेरा कोई नहीं है। लेकिन मेरा पोता बड़ा आलसी है। वह मेरी जरा भी मदद नहीं करता। किसी से अच्छा व्यवहार नहीं करता।" राजा कुछ कहता, उससे पहले ही बबलू की आंख खुल गई। उसके मुंह से निकला—"दादी!" वह दौड़ता हुआ घर पहुंचा। दादी काम में लगी थी। बबलू बोला—"दादी, आज से तुम्हारा सारा काम मैं करूंगा।" बबलू इतना कैसे बदल गया, दादी को आश्चर्य हुआ।

— शर्मिष्ठा शर्मा, कलकत्ता

नन्हे दोस्त

रामू को कहानियां पढ़ने का बहुत शौक था। वह अक्सर कहानियों के पात्र—जैसे बौनों, परियों, राजाओं आदि के बारे में सोचा करता था। रामू के पिता समुद्री जहाज के कप्तान थे। अक्सर वह दूर देशों की सैर को जाया करते थे। लौटकर रामू को तरह-तरह की कहानियां सुनाते थे। इस बार रामू की छुट्टियां हुईं, तो पिता ने कहा—"रामू, चलो इस बार मैं तुम्हें भी अपने साथ ले चलता हूं।" अगले दिन मां और पिता के साथ रामू जहाज पर सवार हो गया। दूर-दूर तक समुद्र फैला था। एक दिन समुद्र में बहुत तूफान आया। तभी एक जोर का झटका लगा और रामू गिर पड़ा।

फिर जब उसकी आंखें खुलीं, तो उसने अपने आपको एक टापू में पाया। वहां के निवासियों का कद बहुत ही छोटा था। उनके हाथ में हथियार थे। वे सब रामू को अपना शत्रु समझ रहे थे। तभी रामू तरह-तरह के करतब दिखाने लगा। कभी वह गाना गाता, कभी उछलता-कूदता। रामू के करतब देख, छोटे-छोटे लोग बड़े खुश हुए। उन्होंने रामू को अपना मित्र मान लिया। इन लोगों के बीच रामू अपना मन बहलाने का प्रयास करता, मगर उसे बार-बार अपने माता-पिता और घर की याद आती।

एक दिन रामू समुद्र के किनारे बैठा, विचारों में खोया था। तभी उसे दूर से एक जहाज आता दिखाई दिया। इससे पहले इतने दिनों में रामू ने इस टापू की तरफ कोई जहाज आते नहीं देखा था। वह दौड़कर किनारे पर पहुंचा। रूमाल हिलाने लगा। जहाज किनारे पर आकर रुका। रामू की खुशी का ठिकाना न रहा, जब उसने अपने माता-पिता को जहाज में से उतरते देखा। माता-पिता भी बेटे को सकुशल देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने रामू को बताया कि जहाज डूबा नहीं, किसी तरह सकुशल किनारे तक पहुंच गया। तब से लेकर आज तक वे उसे ढूंढ़ रहे हैं।

— विनीतपाल सिंह, बाड़ेछीना (अल्मोड़ा)

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं— प्रतिभा विग, देहरादून; रोहित शर्मा, दिल्ली।

'नंदन' ज्ञान-पहेली

५०० रु॰ पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, उस पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
'नंदन' ज्ञान-पहेली; हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

ऊपर से नीचे

१. वह काफी देर तक — में बैठा रहा। (गाड़ी/झाड़ी)

७. दक्षिण भारत की एक पहाड़ी जाति।

बाएं से दाएं

२. मां की आवाज सुनते ही वह — उठा। (बोल/खिल)

३. ऐसा करो, — लेकर ऊपर चढ़ जाओ। (डोर/डोल)

४. श्याम पूछने लगा — "बताओ तो, कौन-सा — है?" (घर/वर)

५. "वह — देखते हो?" — उसने कहा। (नाग/नाला)

६. इसके बाद — नगर छोड़कर भागने लगे। (लोग/ठग)

८. तुम परीक्षा में — उतरे हो। (पूरे/खरे)

९. उसे कोई नहीं — सकता। (रख/देख)

१०. जरा — कर तो देख। (छू/ले)

११. जंजीर — कर फिर गिर पड़ी। (छूट/टूट)

१२. एक फूल का नाम।

काटिए

नंदन ज्ञान-पहेली: २३३

नाम ————————

आयु ———— पता ————

————————————



नं॰ ज्ञा॰ प॰ २३३

पते की बात

—शारदा

एक था मणिराम । सेठ गोविंद के पास मुनीम की नौकरी करता था । परिवार दूर एक गांव में रहता था । इसी तरह कई वर्ष बीत गए । एक दिन मणिराम ने सोचा— 'जितनी मेहनत करता हूं, उतना वेतन नहीं मिलता । कहीं और जाकर भाग्य आजमाना चाहिए ।' बस, उसने नौकरी छोड़ दी । अपने गांव की तरफ चल दिया ।

सफर लम्बा था । रास्ते में शाम हो गई । मणिराम पास के एक गांव में रुक गया । चौपाल पर कई लोग बैठे थे । गांव वालों ने मणिराम का स्वागत किया । बातचीत होने लगी । मणिराम ने अपने बारे में बताया कि वह नौकरी छोड़कर गांव वापस जा रहा है ।

मणिराम की बात सुनकर बूढ़े मुखिया ने कहा— "भैया, मैं उम्र में तुमसे काफी बड़ा हूं, इसलिए कुछ समझाना चाहता हूं । पर इस बात का डर है कि कहीं तुम बुरा न मान जाओ ।"

मणिराम तुरंत बोला— "आप मेरे पिता समान हैं । जरूर कोई अच्छी बात ही बताएंगे । कहिए ।"

बूढ़े मुखिया ने कहा— "मैं तुम्हें काम की बातें बताता हूं । पहली है, कभी चलती नौकरी पर लात मत मारो । दूसरी— हमेशा न्याय का साथ दो । तीसरी— यात्रा करते समय मित्र का घर रास्ते में पड़े, तो उससे मिलकर ही आगे जाओ । चौथी और अंतिम बात— पूरी जांच-पड़ताल किए बिना किसी से झगड़ा न करो । और जहां तक हो, बिगड़ी बात बनाने का प्रयास करो ।"

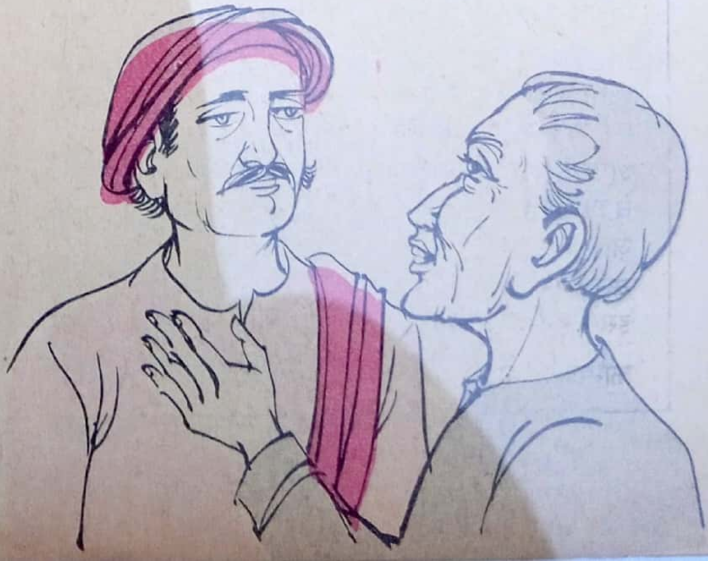
बूढ़े मुखिया की बातें सुनकर मणिराम सोच में डूब गया । उसके मन में आया— 'तो क्या मुझे इस तरह नौकरी नहीं छोड़नी चाहिए थी !' सोच-विचार करने के बाद उसने महसूस किया कि बूढ़े मुखिया की बातों में बहुत सार है । कभी आगे चलकर बहुत काम आएंगी । सुबह गांव से चलते समय उसने बूढ़े मुखिया को बहुत धन्यवाद दिया ।

मणिराम घर जा पहुंचा । सब उसे देखकर प्रसन्न हुए, पर उसके मन में चैन न था । वह दूसरी नौकरी पाने के लिए भाग-दौड़ करता रहा । लेकिन कहीं काम नं मिला । अब मणिराम को बूढ़े की पहली बात का मर्म समझ में आया ।

काफी परेशानी उठाने के बाद उसे जैसे-तैसे राजा अश्ववर्धन की घुड़साल में छोटा-मोटा काम मिला । वेतन बहुत कम था, फिर भी मणिराम मेहनत से काम करने लगा । उसने जल्दी ही समझ लिया कि कौन क्या काम करता था । उसने देखा कि घुड़साल में काम करने वाले लोग बेईमान और आलसी थे । वे घोड़ों को सड़ा-गला और आधा भोजन देते । सारे पैसे खुद हड़प जाते । इस भ्रष्टाचार में घुड़साल के अनेक कर्मचारी शामिल थे । राजा के घोड़े धीरे-धीरे कमजोर होते जा रहे थे । मणिराम समझ गया कि इसमें कितना खतरा है ।

एक दिन वह राजा से मिला और उन्हें पूरी बात बता दी । राजा अश्ववर्धन ने चुपचाप स्वयं जाकर देखा, तो जान गए कि मणिराम की बात एकदम ठीक थी । उन्होंने घुड़साल के भ्रष्ट कर्मचारियों को कारागार में डाल दिया । फिर वहां की देखरेख का काम मणिराम को सौंप दिया । मणिराम का वेतन और अधिकार दोनों बढ़ गए । वह पूरी ईमानदारी और लगन से काम करने लगा । उसने मुखिया की दूसरी सीख पर अमल किया। अच्छा परिणाम निकला ।

कुछ समय बाद मणिराम राजा का बहुत विश्वासपात्र बन गया । यह देखकर राज्य के दूसरे अधिकारी उससे ईर्ष्या करने लगे । वे राजा से मणिराम



की झूठी शिकायतें करते । राजा जांच करवाते, तो पता चलता कि मणिराम निर्दोष है । इस तरह मणिराम के विरुद्ध दुश्मनों का हर षड्यंत्र बेकार होता जा रहा था । मणिराम तरक्की करता हुआ राज्य का सेनापति बन गया ।

अब तो मणिराम के दुश्मनों का क्रोध और भी भड़क उठा । वे पड़ोसी शत्रु राजा से जा मिले और राजा अश्ववर्धन पर आक्रमण की योजना बनाने लगे । एक दिन मणिराम के विरोधी मंत्रियों ने राजा से कहा— "महाराज, पड़ोसी राजा ने सीमा पर बहुत बड़ी फौज जमा कर ली है । हमारे नए सेनापति को वहां जाकर अपनी सेना की तैयारी की जांच करनी चाहिए ।"

राजा अश्ववर्धन को इसमें कोई बुराई नजर न आई । उन्होंने मणिराम को सीमा पर जाने का आदेश दे दिया । मणिराम एक सैनिक टुकड़ी के साथ चल दिया । राह में उसका मित्र शंकर मोहन रहता था । मणिराम को बूढ़े मुखिया की कही बात याद थी । उसने शंकर मोहन से मिलकर ही आगे जाना ठीक समझा ।

शंकर मोहन ने मित्र का स्वागत किया । वह मणिराम के विरोधियों को जानता था । उसे मणिराम के विरुद्ध होने वाले षड्यंत्र की भी खबर थी । शंकर मोहन मणिराम को एकांत में ले गया । उससे बोला— "मित्र, तुम्हारे दुश्मनों ने जानबूझकर तुम्हें सीमा पर भेजा है । उनकी योजना तुम्हें धोखा देकर मारने की है । मैंने सब पता लगा लिया है । सब तरफ तुम्हारे शत्रुओं के जासूस फैले हुए हैं ।" इसके बाद उसने बताया कि शत्रुओं की चाल कैसे विफल की जा सकती है ।

शंकर मोहन ने एक सैनिक को मणिराम का रूप बनाकर सीमा पर भेजा । पीछे-पीछे शंकर मोहन और मणिराम अपने कुछ विश्वासी आदमियों के साथ गए । शंकर मोहन ने जैसा सोचा था, वैसा ही हुआ । एक जगह मणिराम के विरोधी घात लगाए बैठे थे । उन्होंने मणिराम का रूप बनाए सैनिक को मणिराम समझकर हमला कर दिया ।

मणिराम व शंकर मोहन तो पहले ही होशियार थे । हमला करने वालों को पकड़ लिया गया । अपने प्राण संकट में देख, हमलावरों ने सारा भेद उगल दिया ।

अश्ववर्धन को पूरी बात पता चल गई । अब षड्यंत्रकारियों का भांडा फूट गया था । सब गिरफ़ार कर लिए गए । बूढ़े मुखिया की तीसरी बात भी सच सिद्ध हुई थी । अगर वह शंकर मोहन से मिलने न जाता, तो अवश्य मारा जाता । इसके बाद से राजा पर मणिराम का प्रभाव और भी बढ़ गया ।

राजा अश्ववर्धन के कोई संतान नहीं थी । उनका भतीजा कुणाल समझता था कि वही राजा बनेगा । उसने गुप्त रूप से सेना बना ली और विद्रोह करके राज्य पर अधिकार करने की योजना बनाने लगा ।

मणिराम ने अपने जासूस कुणाल के पीछे लगा रखे थे । उन्हें कुणाल की सारी गतिविधियों की खबर थी । फिर भी मणिराम ने राजा से उसकी शिकायत कभी नहीं की । वह समझता था, इससे राजा का मन दुखी होगा । एक बार उसे सूचना मिली कि कुणाल राजधानी पर हमला करने की तैयारी कर रहा है ।

बस, मणिराम ने एक सेना उसे रोकने के लिए भेज दी । राजा की सेना ने विद्रोही सैनिकों को परास्त कर दिया । पर मणिराम ने कुणाल को बंदी नहीं बनाया । राजा को कुणाल के बारे में अब भी कुछ पता नहीं चला । इस बात के लिए कुणाल मणिराम का कृतज्ञ था । उसने विद्रोह का इरादा छोड़ दिया । कुछ समय बाद राजा अश्ववर्धन ने अपने आप कुणाल को राजपद देने की घोषणा कर दी ।

समय आने पर कुणाल राजा बना, तो उसने मणिराम को ही अपना प्रधान मंत्री नियुक्त किया । एक दिन उसने कहा— "मणिराम, अगर आप मेरा रहस्य न छिपाते, तो इस समय मैं राजगद्दी पर नहीं, कारागार में होता ।"

मणिराम प्रसन्न था । बूढ़े मुखिया की चौथी बात भी सही निकली थी । •

चीटू नीटू


चीटू-नीटू के स्कूल से शिमला के लिए ग्रुप जा रहा है। अगर इन्हें भेज दें तो घर का हो हल्ला बंद हो जाएगा
बच्चो, अपने टीचर के साथ रहना और उनकी आज्ञा का पालन करना
चीटू-नीटू ने नाक में दम कर रखा है। वह देखो, जाखू मंदिर के बंदरों से छेड़खानी कर रहे हैं
मुझे डर लग रहा है। हमें टीचर के साथ..
ऐसा क्या छेड़ दिया, जो हमारे पीछे ही पड़ गए!
अगर स्केटिंग नहीं आती तो जंगले के साथ-साथ...
सभी बच्चे कुफरी जा रहे हैं और हम यहां..
मैं भी जा रही हूं। मम्मी ने कहा था कि टीचर जी के साथ रहना

पुरस्कृत चित्र

निर्मलाकुमारी गोलानी, ८ वर्ष, आल इंडिया हैंडलूम सैंटर, शालगंज, बीदर-५८५४०१

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे —अनिलकुमार जैन, गौंडा (उ. प्र.); रवींद्र लांडे, भोपाल; निशा लच्छीरामका, देवघर (बिहार), राहुल ग्रोवर, रोहतक; पूनम वर्मा, शामली।





शीर्षक बताइए

चिंकी गुड़िया, हंसी की पुड़िया :

इस चित्र को ध्यान से देखिए। सोचिए ऐसा ही सुंदर शीर्षक। पोस्टकार्ड पर लिखकर १० मई तक शीर्षक बताइए, नंदन १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : जुलाई '८८

चित्र : राजेन्द्र वधवा



फिन्नी गुड्डी अंजली रणञ्जय

पत्र मिला

● मार्च अंक में 'वनदेवी', 'घर जमाई,, 'तीन कछुए', 'सवाई पर हवाई' कहानियां अच्छी लगीं । 'संत बसव' चित्र-कथा बहुत रोचक लगी । कभी-कभी खिलाड़ियों के क्लोअप भी छापा करें । **— राजन अग्रवाल, डिब्रूगढ़ (असम)**

● इस अंक की कविताएं दिलचस्प थीं । चीटू-नीटू के कारनामे भी खूब लुभाते हैं ।

— सुशीलकुमार मंडल, लुधियाना

● होली अंक होली जैसा ही रंग-बिरंगा था । 'नंदन बाल समाचार' पढ़ने से बहुत जानकारी मिलती है । 'खट खट खुल' तथा 'सतरंगे फूल' कहानियां विशेष पसंद आईं ।

— मनोजकुमार शर्मा, पाली (राज.)

● हमें 'नंदन' की हमेशा प्रतीक्षा रहती है । चीटू-नीटू हमारे दोस्त हैं, तो समाचार हमारे शिक्षक एवं कहानियां हम सबकी दादी-नानी हैं ।

— रमेश प्रसाद, नागाराकाटा (प. बंगाल)

● पुरस्कृत कथा 'सोनू की दादी' अच्छी लगी । 'नंदन' की सभी रचनाएं आकर्षित करती हैं । बच्चों द्वारा भेजे गए चुटकुले भी छापा करें ।

— ताराचंद जकोठिया, कलकत्ता

● रंगीन झांकी 'होली आई रे' का कहना ही क्या ? 'तपस्वी राजा', 'मुंगरी का वरदान', 'पेट पर लालटेन', 'एक पैसा' आदि कहानियां अनमोल थीं । चित्र-कथा में संत बसव के बारे में अच्छी जानकारी दी गई ।

— संदीप अग्रवाल, मुगलसराय

● 'तीन कछुए' क़हानी अपूर्व थी । कविताओं की जितनी तारीफ की जाए, कम है । ऐसी कहानियां और कविताएं बार-बार प्रकाशित करें ।

— विनोदकुमार पटेल, राउरकेला (उड़ीसा)

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : प्रियंका शर्मा, दिल्ली; प्रबोध चेतन, हरिद्वार; रवि सिंह कौंतेय, मारवाड़ मूंडवा (राज.) ।

आगामी अंक

जून की चिलचिलाती दुपहरिया में ठंडी छांह जैसी सरस कथाएं और कविताएं

● एलबम में पंढरपुर के विट्ठल मंदिर की रंगीन झांकी ।

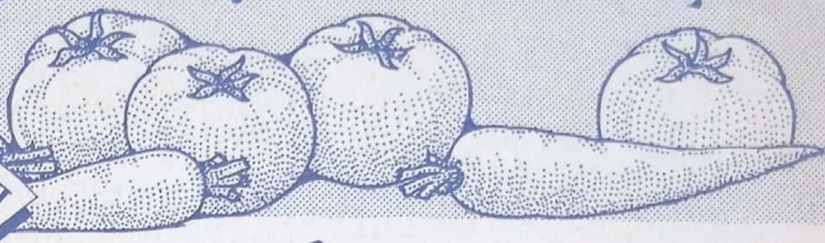
● बीच के पृष्ठों में—**'आओ चलें पहाड़ पर'**— आकाश छूते हरे-भरे पर्वत और हीरे-मोती बिखेरते झरने ।

● बूढ़े प्रोफेसर गुब्बारे से लटके झूले में बैठकर दुनिया की यात्रा पर निकल पड़े, फिर... विश्व की महान कृतियां में **'ट्वेंटी वन बैलून्स' की रोमांचक कथा का सार-संक्षेप।**

● **कृष्ण की भक्ति में डूबे 'चैतन्य महाप्रभु' की चित्र-कथा ।**

साथ में सभी स्तम्भ और पुरस्कार योजनाएं

अपने शिशु को सब्ज़ियों की पोषकता दीजिए



पहले से पका हुआ

फ़ैरेक्स®-वेज

छठे महीने से...



नएं फ़ैरेक्स-वेज में विटामिन से भरपूर सब्ज़ियों — गाजर, टमाटर, और मूँग की दाल के भी पोषक तत्त्व हैं. यह पहले से ही पका हुआ है इसलिए शिशु की कोमल पाचन शक्ति के अनुकूल है.

फ़ैरेक्स – स्वाद भी पाए, बढ़ता भी जाए... मुन्ना.



GX/41/203 HIN

सूखी धरती

—मनीष बुचके

पुरानी बात है। राजा विक्रमादित्य के राज्य में अचानक सूखा पड़ गया। राज्य के सभी तालाब और कुएं सूख गए। यहां तक कि बड़ी-बड़ी बावड़ियों में भी पानी नहीं रहा। पानी की तलाश में लोग इधर-उधर भटकने लगे।

राजा चिंता में डूबे, राजधानी के बाहर का हाल-चाल जानने गए। उन्हें रास्ते में एक बूढ़ा भिखारी दिखाई दिया। राजा ने अपने मन की बात बूढ़े से कही। बूढ़े बाबा ने बताया—"पूर्व दिशा में एक छोटी-सी बावड़ी है। आप सूर्योदय से पहले वहां जाओ। मन लगाकर गंगा मइया को याद करो।"

आखिर राजा की तपस्या से गंगा जी प्रसन्न हुईं। तपस्या में लीन राजा के सम्मुख प्रकट हुईं। बोलीं—"राजा, क्या चाहिए तुम्हें?"

राजा ने पूरी बात बताई। सुनकर गंगा मइया बोलीं—"लो, एक लोटे में पानी दे रही हूं। इसे ले जाकर एक बड़ी बावड़ी में डाल देना। वहां से यह पानी सभी कुओं में पहुंच जाएगा।"

राजा उस लोटे को लेकर पश्चिम की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्हें एक बीमार बुढ़िया लेटी दिखाई दी। वह बहुत प्यासी थी। पानी-पानी पुकार रही थी। राजा उस बुढ़िया के पास गए। बोले—"मां, लो।"

बुढ़िया बोली—"नहीं, राजा! तुम इससे अपनी प्यास बुझाओ।"

राजा ने कहा—"नहीं, मां! यह जल आपको पीना ही होगा। आपका कष्ट दूर करना मेरा धर्म है।"

यह सुनकर बुढ़िया बनी गंगा अपने असली रूप में आ गईं। बोलीं—"राजा, तुम महान हो। अब तुम्हारी प्रजा को कभी पानी के लिए हताश नही होना पड़ेगा। मैं क्षिप्रा नदी के रूप में इस नगर की प्यास बुझाऊंगी।"

उस दिन के बाद उज्जैन नगरी में कल-कल करती क्षिप्रा नदी बहने लगी। ●

नई पुस्तकें

हनुमानप्रसाद पोद्दार— लेखक : डा. ब्रजलाल वर्मा; प्रकाशक : प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, नई दिल्ली; मूल्य : ९ रुपए।

'कल्याण' और 'गीता प्रेस' ने पूरे देश में राम-नाम को घर-घर पहुंचाने में बहुत बड़ा काम किया। भाई हनुमानप्रसाद पोद्दार ने धर्म और सदाचार के प्रचार के लिए अपना जीवन लगा दिया। उन्हीं की प्रेरणा से धार्मिक पुस्तकें बड़ी संख्या में कम कीमत में छपती रहीं और धर्म का संदेश घर-घर पहुंचा। पोद्दार जी का जीवन सदाचार, अनुशासन तथा ईश्वर प्रेम का अनूठा उदाहरण था। पुस्तक में पोद्दार जी के जीवन की प्रेरक झांकी दी गई है। ऐसे महापुरुष के बारे में बच्चों को अवश्य पढ़ना चाहिए।

खेल-खेल में— लेखक : अरविंद गुप्ता; प्रकाशकः राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद, नई दिल्ली; पृष्ठ : ४८।

लेखक ने कुछ साधारण और सस्ती चीजों की मदद से विज्ञान के कई रोचक प्रयोग बच्चों के लिए करके दिखाए हैं। ये चीजें हैं रबड़, माचिस की डिब्बी, आलपिन, गत्ते के टुकड़े आदि। इन प्रयोगों से बच्चों के मन में 'खेल-खेल में' विज्ञान को जानने-समझने की ललक उभरती है।

भाषा सीधी और सहज है। हर प्रयोग को चित्रों में समझाया गया है। बच्चों को इसे पढ़ना और समझना चाहिए।

संसार के प्रसिद्ध आविष्कारक— लेखक : विश्वमित्र शर्मा; प्रकाशकः राजपाल एंड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली; पृष्ठ : ६४।

पुस्तक में अट्ठाइस प्रसिद्ध आविष्कारकों का जीवन परिचय है। छपाई, भाप इंजन, कंप्यूटर, विमान, बिजली, टेलीफोन, बिजली आदि के आविष्कार और विकास की कहानी बताई गई है। उन महान वैज्ञानिकों में भारत के डा. जगदीशचंद्र वसु तथा सर सी.वी. रमन जैसे महापुरुष भी हैं, किंतु ६४ पृष्ठों में इतने अधिक व्यक्तियों को समटने की कोशिश में पुस्तक अधूरी-सी लगती है।

नंदन-ज्ञान-पहेली : २३१
परिणाम



५०० रुपए की पुरस्कार राशि विजेताओं में इस प्रकार बांटी जा रही है :

सर्वशुद्ध : एक : एक सौ चालीस रुपए।

द्वारकाप्रसाद शर्मा, नीम का थाना, सीकर (राज.)।

एक गलती : छहःप्रत्येक को साठ रुपए।

१. विवेककुमार, जेवर, बुलंदशहर; २. हरिशंकर जोशी, चेचट, कोटा; ३. दीपिका, कर्नावट, उज्जैन; ४. कौशलकुमार, दिल्ली; ५. रमाकांत, सीकर; ६. पूरनसिंह रावत, लैंसडाउन (उ. प्र.)।



बातें रंग-बिरंगी

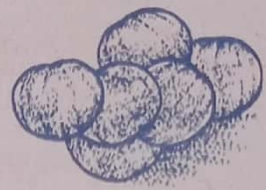
विचित्र घड़ी—अच्छी से अच्छी घड़ियों में भी कुछ ही महीनों में एक या दो सैकिंड का अंतर आ जाता है। वैज्ञानिकों ने अभी कुछ वर्ष पहले एक ऐसी घड़ी बनाई है जो १७ लाख वर्ष में केवल एक सैकिंड तेज या सुस्त होती है। इस घड़ी को परमाणु घड़ी कहते हैं। विश्व में इससे अधिक शुद्ध समय देने वाली कोई दूसरी घड़ी नहीं है। इस घड़ी का निर्माण सन १९६९ में अमेरिका की नेवल रिसर्च लेबोरेटरी, वाशिंगटन डी. सी. में किया गया था। यह एमोनिया मेसर से पैदा होने वाली आवृत्ति को मापती है। मेसर से पैदा होने वाली आवृत्ति इतनी सत्य और शुद्ध है, जिसमें लाखों बरस में एक सैकिंड का अंतर आता है।

परमाणु घड़ी का सिद्धांत अमेरिका के भौतिकशास्त्री डा. विलार्ड फ्रैंक लिब्बी ने दिया था। आरम्भ की परमाणु घड़ियां सीजियम धातु के परमाणुओं से पैदा होने वाले कम्पनों के आधार पर बनाई गईं थी। इनमें ३०० वर्ष की अवधि में एक सैकिंड की त्रुटि आती थी। शुरू में परमाणु घड़ियों का आकार बहुत बड़ा होता था। प्रयोगशाला के एक बहुत बड़े कमरे की आवश्यकता होती थी। इनका वजन भी कई सौ पौंड होता था। सन १९७८ तक इस घड़ी का आकार इतना छोटा कर दिया गया कि इसे १५ वर्ग इंच आधार और ८ इंच ऊंचे डिब्बे में फिट किया जाने लगा।



कुत्ता काट ले तो— छोटे-छोटे पिल्ले बच्चों को बहुत अच्छे लगते हैं। लेकिन पिल्ले या कुत्ते बच्चों को काट भी लेते हैं। स्वस्थ या पालतू कुत्ता किसी को काट ले, तो इतना खतरा नहीं होता, जितना कि आवारा कुत्तों के काटने से।

कुत्ता काटता है, तो उस पर पंद्रह दिन नजर रखी जाती है। यदि वह पागल हुआ, तो पंद्रह दिन में मर जाता है। ऐसे में रैबीज के टीके लगवाना आवश्यक हो जाता है। आजकल चौदह टीके भी लगाए जाते हैं और तीन भी। लेकिन ये तीन टीके महंगे हैं। कुत्ते के काटने पर घाव को तुरंत साबुन से धोना चाहिए। कुत्ता पालने वालों को जानवरों के डाक्टर से कुत्ते को जरूर टीके लगवाने चाहिए। पागल कुत्ते के काटने पर टीके न लगें, तो दस-बारह वर्ष बाद भी रैबीज हो सकता है। तब इसका इलाज होना असम्भव है।



आंवला—इसे अमृत फल कहा जाता है। नियमित सेवन से बहुत सारे रोग नहीं होते।

आंवला पूरे भारत में उगता है। इसके पेड़ बागों में भी लगाए जाते हैं, जंगलों में भी मिलते हैं। कहते हैं कि आंवले की उत्पत्ति लक्ष्मी और भगवती के खुशी के आंसुओं से हुई है। इसीलिए इसका स्वाद खारा-कसैला और बाद में मिठास लिए हुए होता है। पेड़ की पत्तियों का आकार पंख की तरह होता है। आंवले के सेवन से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। बाल काले और घने हो जाते हैं। पेट के रोग भी नहीं होते।

हरा आंवला जितना उपयोगी होता है, सूखा भी उससे कम नहीं। दुर्गम स्थानों पर सैनिकों को हरी सब्जियां नहीं मिलतीं। उनके लिए आंवले से विशेष प्रकार की गोलियां तैयार की जाती हैं। च्यवनप्राश गुणकारी माना जाता है, क्योंकि उसमें आंवला होता है। इस फल में अम्ल, लौह और क्षार तीनों तत्व खूब मिलते हैं, शायद इसीलिए आंवले को सम्पूर्ण भोजन कहते हैं। इसकी लकड़ी का उपयोग ईंधन के लिए होता है। मगर यह अच्छी इमारती लकड़ी नहीं मानी जाती। फलों और छाल से रंग भी प्राप्त होता है। इस रंग से चटाई आदि रंगी जाती हैं। जिन बच्चों के दांत कमजोर हों, उन्हें आंवला खाना चाहिए। आंवले से स्वादिष्ट अचार, मुरब्बे, चटनी आदि भी तैयार किए जाते हैं। ●

पत्र-मित्र

पुस्तकें पढ़ने व लेखन में रुचि :

१. रोहित अग्रवाल, १५ वर्ष, आनंद कपड़ा स्टोर, चेतगंज, चंदौसी, जि. मुरादाबाद; २. सुधाकर झा, १५, लालबहादुर शास्त्री नगर, पटना-२३; ३. विनोदकुमार झा, १४, सी/सी-२ पुराना कवि नगर, गाजियाबाद; ४. राजनारायण झा, १४, जी-६३ प्रेस कालोनी, नया फरीदाबाद (हरि.); ५. अनामिका जैन, १३, द्वारा अतुलकुमार जैन, नेहरू चक, गुलजार बाग, पटना; ६. योगेन्द्रकुमार, १४, आर-जैड ४७-एफ, धर्मपुरा कालोनी, नजफगढ़, नई दिल्ली; ७. ब्रजेश मिश्र, ९, पंजाबी कालोनी, कटरागंज, इटावा (उ. प्र.); ८. नागेशकुमार कविराज, १०, जनता फार्मेसी, पी. टी. रोड, पो. गोविन्दपुर, जि. धनबाद; ९. रेखाकुमारी, ९, ग्रा.-व-पो. कोकलपक चक, नाना नारायण, जि. नालंदा; १०. अरुणकुमार, १५, इटकी थाना, ग्रा.-व-पो. इटकी, जि. राँची (बि.)।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. देवकांत शुक्ल, १३ वर्ष, २९ केनी रोड, नया कटरा, बिजली घर के पास, इलाहाबाद; २. रविकांत सिंगला, १४, द्वारा माधोराम सिंगला, २४५/१ मचाडू रोड, अम्बाला शहर; ३. अनिल सोमानी, १४, द्वारा राधामल सूरजमल किशोर, कालापहाड़ (म. प्र.); ४. प्रकाशचंद्र चौरसिया, १६, राम चौक तालाब के पास, आमेर, उदयपुर; ५. जगमोहन सिंह परिहार, १५, ग्रा. इसौली, डाक. जलेसर रोड, तह. सादाबाद, जि. मथुरा; ६. राजेशकुमार वर्मा, १६, द्वारा सुरेशचंद्र वर्मा, मोहन गली, छंगामल, कासगंज (उ. प्र.); ७. विनयकुमार, १३, द्वारा प्रो. रामकृष्ण कुमार वर्मा, राजेंद्र भवन, मेन रोड, हिलसा, नालंदा (बि.); ८. दीपककुमार, १३, द्वारा कृष्णानंदन प्रसाद, बाजार टोला, डाक. साहिबगंज (बि.); ९. नीरजकुमार, १४, द्वारा बैजनाथ प्रसाद, सुल्तानपुर, दानापुर कैंट, पटना; १०. हितेशकुमार गुप्ता, १४, द्वारा मोतीलाल गुप्ता, सब्जी मंडी, लालगंज, रायबरेली; ११. आलोक देहाती, १४, बहादुरगंज खैर, अलीगढ़; १२. रंजीतकुमार, १६, ५२६ लालबहादुर शास्त्री नगर, पटना।

डाक टिकट संग्रह में रुचि

१. मीनू सावला, १४ वर्ष, २/२१५ सुभाष नगर, नई दिल्ली; २. आर. अरविंद, १०, बी-३/६४ आजाद अपार्टमेंट्स, श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली; ३. रजत चौहान, ११, ४३२ के. एल. कीडगंज, इलाहाबाद; ४. आनंद कनकनीया, १४, १४/७२१ खेर नगर, बांद्रा (पूर्व), बम्बई; ५. ललितकुमार, १३, म. नं. ५०९१, महावीरपुरा, गुड़गांव।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. स्टोव पर रखे कुकर से भाप निकल रही है।
२. ऊपर लगी दराज का एक हैंडिल गायब है।
३. लकड़ी का लट्ठा उठाए लड़की के रिबन का एक सिरा नहीं है।
४. आदमी के मुंह में लगा पाइप नीचे झुका है।
५. सीधी ओर रखे प्याले में भरी वस्तु काली है।
६. लड़के की तलवार छोटी हो गई है।
७. उसके सीधे पैर का मोजा ऊपर चढ़ा है।
८. सामने वाले कमरे में टंगी तसवीर के ऊपर पत्तियां लगी हैं।
९. स्टोव के पास खड़ी महिला का बायां हाथ स्टोव के पीछे है।
१०. उसके एप्रेन का गला अधिक खुला है।

शीर्षक बताइए : परिणाम

मार्च अंक में छपे रंगीन चित्र पर ढेर सारे शीर्षक आए— एक से एक बढ़िया और आकर्षक। इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

पेड़ बना है मेरा घोड़ा,
थककर बैठ गया है थोड़ा।

—ऋचा बंसल, द्वारा प्रो. जयनारायण बंसल, विवेक विहार, टंकी कालोनी के पीछे, डाक. शामली, जि. मुजफ़्फ़रनगर।

मैं रहता पेड़ों के अंदर
पक्षी यदि मैं होता सुंदर।

—नवीन अरोड़ा, कैलाशचंद्र जी सर्राफ का मकान, पाटनपोल, राधाविलास, राजस्थान बैंक के सामने वाली गली, कोटा (राज.)।

नीला आकाश,
लगे कितना पास।

—सतनाम सांगरा, गर्ल्स हाई स्कूल के सामने, संतोषगढ़, जि. ऊना (हि. प्र.)।

इनके शीर्षक भी प्रशंसनीय रहे— राहुल शर्मा, उज्जैन; सुनीलकुमार पांडे, मद्रास; राजेश साहिब, श्रीनगर; धीरज मित्तल, समालखा मंडी (हरि.); कृष्णकुमार सारस्वत, मथुरा; राजेश डंगोल, विराट नगर (नेपाल)।

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

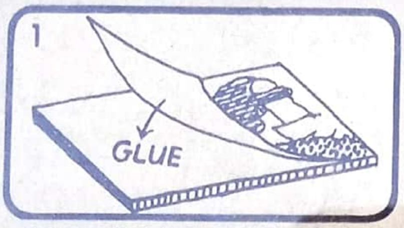
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

Parry's

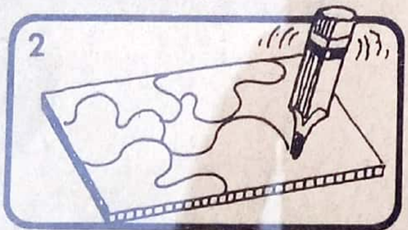
Funpage

टॉफियों का राजा लाया मज़े के खेल- खेलते-खेलते सीखो!

बच्चों, खुद बनाओ अपनी चित्रखण्ड पहेली. देखो, ये कितना आसान है.



1. किसी भी पत्रिका से एक अच्छी-सी रंगीन तस्वीर लो और पतले गत्ते के एक टुकड़े पर चिपका दो.



2. अपनी पैंसिल लो और गत्ते की पिछली तरफ की सारी सतह को छोटे-छोटे आकारों में बांट दो. (ऊपर का चित्र देखो.)
अब इन आकारों को किनारे-किनारे से काटकर कई टुकड़े बना लो.



3. इन सब टुकड़ों को इकट्ठा करो और सही-सही मिलाने की कोशिश करो ताकि पूरी तस्वीर बन जाए. अपने दोस्तों को भी यह खेल खेलना सिखाओ.

टॉफियों का राजा तुमसे दोस्ती करना चाहता है इसलिए अपना नाम, पता और जन्मदिन लिखकर इस पते पर डाक से भेज दो.

The King of Sweets,
P.O. Box No. 2040,
Madras 600 001.



THE KING OF SWEETS

HTA.7145

नंदन रजि. नं. डी.-(सी)-१६१ आर.एन.आई. नं. १०५२५

